शिक्षा का उत्थान - शिक्षक का सम्मान - मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

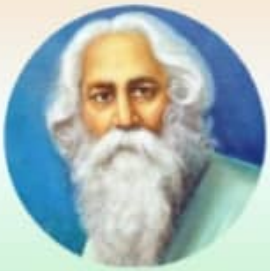

ऐसे महामानव वसुधा पर, अमिट पद चिन्ह बनाते हैं।
मानवता का दीप जलाकर, सदा अमर हो जाते हैं।।

आओ हाथ से हाथ मिलाएँ, बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ

9458278429

संकलन कर्ता - नरेन्द्र नाथ पटेल स.अ. कम्पोजिट विद्यालय सुरहन, भदोही, उत्तर प्रदेश

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती-
26 दिसम्बर,1899

बलिदान दिवस
31 जुलाई,1940

ऊधम सिंह

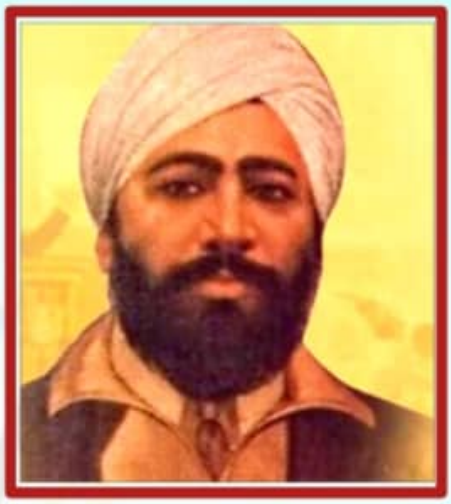

1*. पूरा नाम - ऊधम सिंह
2*. अन्य नाम - राम मोहम्मद आज़ाद सिंह
3*. जन्म - 26 दिसंबर, 1899
4*. जन्म भूमि - सुनाम गाँव, पंजाब
5*. मृत्यु - 31 जुलाई, 1940 (शहादत)
6*. मृत्यु स्थान - पेंटनविले जेल, ब्रिटेन
7*. मृत्यु कारण - फाँसी
8*. पिता - सरदार टहल सिंह
9*. माता - नारायणी कौर
10*. नागरिकता - भारतीय
11*. प्रसिद्धि - क्रान्तिकारी
12*. संगठन - ग़दर पार्टी,हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन,भारतीय मज़दूर संघ
13*. आंदोलन - भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन
14*. पुरस्कार-उपाधि - 'शहीद-ए-आज़म' सरदार ऊधम सिंह
15*. विशेष योगदान - उधमसिंह १३ अप्रैल १९१९ को घटित जालियाँवाला बाग नरसंहार के प्रत्यक्षदर्शी थे। राजनीतिक कारणों से जलियाँवाला बाग में मारे गए लोगों की सही संख्या कभी सामने नहीं आ पाई। इस घटना से वीर उधमसिंह तिलमिला गए और उन्होंने जलियाँवाला बाग की मिट्टी हाथ में लेकर माइकल ओ'डायर को सबक सिखाने की प्रतिज्ञा ले ली। अपने इस ध्येय को अंजाम देने के लिए उधम सिंह ने विभिन्न नामों से अफ्रीका, नैरोबी, ब्राजील और अमेरिका की यात्रा की। सन् 1934 में उधम सिंह लंदन पहुँचे और वहां 9, एल्डर स्ट्रीट कमर्शियल रोड पर रहने लगे। वहां उन्होंने यात्रा के उद्देश्य से एक कार खरीदी और साथ में अपना ध्येय को पूरा करने के लिए छह गोलियों वाली एक रिवाल्वर भी खरीद ली। भारत के यह वीर क्रांतिकारी, माइकल ओ'डायर को ठिकाने लगाने के लिए उचित वक्त का इंतजार करने लगे। उधम सिंह को अपने सैकड़ों भाई-बहनों की मौत का बदला लेने का मौका 1940 में मिला। जलियांवाला बाग हत्याकांड के 21 साल बाद 13 मार्च 1940 को रायल सेंट्रल एशियन सोसायटी की लंदन के काक्सटन हाल में बैठक थी जहां माइकल ओ'डायर भी वक्ताओं में से एक था। उधम सिंह उस दिन समय से ही बैठक स्थल पर पहुँच गए।अपनी रिवॉल्वर उन्होंने एक मोटी किताब में छिपा ली। इसके लिए उन्होंने किताब के पृष्ठों को रिवॉल्वर के आकार में उस तरह से काट लिया था, जिससे डायर की जान लेने वाला हथियार आसानी से छिपाया जा सके।बैठक के बाद दीवार के पीछे से मोर्चा संभालते हुए उधम सिंह ने माइकल ओ'डायर पर गोलियां दाग दीं। दो गोलियां माइकल ओ'डायर को लगीं जिससे उसकी तत्काल मौत हो गई।
16*. अन्य जानकारी - इतिहासकार डॉ. सर्वदानंदन के अनुसार ऊधम सिंह 'सर्व धर्म सम भाव' के प्रतीक थे और इसीलिए उन्होंने अपना नाम बदलकर राम मोहम्मद आज़ाद सिंह रख लिया था जो भारत के तीन प्रमुख धर्मो का प्रतीक है।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती-
01 अगस्त,1882

पुण्यतिथि
01 जुलाई,1962

पुरूषोत्तम दास टंडन

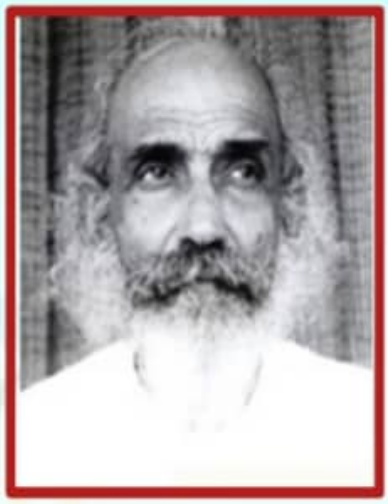

1*. पूरा नाम - पुरुषोत्तम दास टंडन
2*. जन्म - 01 अगस्त, 1882
3*. जन्म भूमि - इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
4*. मृत्यु - 01 जुलाई, 1962
5*. पिता - श्री सालिग राम टंडन
6*. नागरिकता - भारतीय
7*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता सेनानी और राजनेता
8*. आंदोलन - 'सविनय अवज्ञा 9*. आन्दोलन', 'बिहार किसान आन्दोलन'
10*. जेल यात्रा - वर्ष 1930 में महात्मा गाँधी द्वारा चलाये जा रहे 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' के सिलसिले में पुरुषोत्तम जी बस्ती में गिरफ्तार हुए और कारावास का दण्ड मिला।
11*. कार्य काल - विधानसभा प्रवक्ता उत्तर प्रदेश- 31 जुलाई, 1937 से 10 अगस्त, 1950 तक
12*. विद्यालय - सिटी एंग्लो वर्नाक्यूलर विद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
13*. शिक्षा - एल.एल.बी. और एम.ए.
14*. पुरस्कार-उपाधि - 'भारत रत्न' (23 अप्रैल, 1961)
15*. विशेष योगदान - पुरुषोत्तम जी हिन्दी के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने के लिए काफ़ी प्रयत्न किये थे।
16*. अन्य जानकारी - टंडन जी ने 10 अक्टूबर, 1910 को 'नागरी प्रचारिणी सभा', वाराणसी के प्रांगण में 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' की स्थापना की थी।पुरुषोत्तम दास टंडन को भारत के राजनीतिक और सामाजिक जीवन में नयी चेतना, नयी लहर, नयी क्रान्ति पैदा करने वाला कर्मयोगी कहा गया है।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 02 अगस्त,1876

पुण्यतिथि 04 जुलाई,1963

पिंगली वेंकैय्या

1*. पूरा नाम - पिंगलि वेंकैय्या
2*. अन्य नाम - डायमंड वेंकैय्या,पट्टी वेंकैय्या
3*. जन्म - 2 अगस्त 1876
4*. जन्म भूमि - गाँव - भटाला पेनमरू, कृष्णा ज़िला आन्ध्र प्रदेश
5*. मृत्यु - 4 जुलाई 1963
6*. अभिभावक - पिता - पिंगली हनमंत रायडू माता - वेंकटरत्न्म्मा
7*. जीवनसाथी - रुक्मिनम्मा
8*. कर्म-क्षेत्र - स्वतंत्रता सेनानी एवं कृषि वैज्ञानिक
9*. भाषा - संस्कृत, उर्दू एवं हिंदी
10*. उपाधि - सम्मान - भारत के राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे का डिज़ाइन बनाने वाले पिंगली वेंकैया के सम्मान में भारत सरकार ने उनके नाम पर डाक टिकट जारी किया। वेकैंया पिंगली के 132 वें जन्म दिवस के अवसर पर जारी इस डाक टिकट में उनके बनाए गए तिरंगे के साथ उनकी तस्वीर भी है। डाक टिकट का मूल्य पांच रूपए है। प्रथम दिवस आवरण और सूचना सामग्री की क़ीमत दो - दो रुपए है। देश के चार जगहों विशाखापत्तनम, हैदराबाद, कुरनूल, विजयवाड़ा के जनरल पोस्ट ऑफिस (जीपीओ) पर यह उपलब्ध है।
11*. विशेष योगदान - भारत के राष्ट्रीय ध्वज 'तिरंगा' के अभिकल्पक हैं।
12*. नागरिकता - भारतीय
13*. अन्य जानकारी - वेंकैया एक कृषक होने के साथ-साथ एक शिक्षाविद् भी थे, जिन्होंने मछलीपट्टनम में एक शैक्षणिक संस्थान की स्थापना की थी । ऑल इंडिया रेडियो के विजयवाड़ा स्टेशन का नाम 2014 में उनके नाम पर रखा गया था। 1963 में सापेक्ष गरीबी में उनकी मृत्यु हो गई और समाज द्वारा उन्हें काफी हद तक भुला दिया गया।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 03 अगस्त,1886

पुण्यतिथि 12 दिसम्बर,1964

मैथिलीशरण गुप्त

1*. पूरा नाम - मैथिलीशरण गुप्त
2*. जन्म - 3 अगस्त, 1886
3*. जन्म भूमि - चिरगाँव, झाँसी, उत्तर प्रदेश
4*. मृत्यु - 12 दिसंबर, 1964
5*. मृत्यु स्थान - चिरगाँव, झाँसी
6*. अभिभावक - पिता - सेठ रामचरण
माता -काशीबाई
7*. कर्म भूमि - भारत
8*. कर्म-क्षेत्र - नाटककार, लेखक, कवि
9*. मुख्य रचनाएँ - पंचवटी, साकेत, जयद्रथ वध, यशोधरा, द्वापर, झंकार, जयभारत।
10*. भाषा - ब्रजभाषा
11*. विद्यालय - राजकीय विद्यालय
12*. पुरस्कार-उपाधि - पद्मभूषण, हिन्दुस्तानी अकादमी पुरस्कार, मंगला प्रसाद पारितोषिक, साहित्य वाचस्पति, डी.लिट्. की उपाधि।
13*. देश प्रेम - काव्य के क्षेत्र में अपनी लेखनी से संपूर्ण देश में राष्ट्रभक्ति की भावना भर दी थी। राष्ट्रप्रेम की इस अजस्र धारा का प्रवाह बुंदेलखंड क्षेत्र के चिरगांव से कविता के माध्यम से हो रहा था। बाद में इस राष्ट्रप्रेम की इस धारा को देश भर में प्रवाहित किया था, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने -

जो भरा नहीं है भावों से जिसमें बहती रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

नारियों की दशा को व्यक्त करती उनकी ये पंक्तियां पाठकों के हृदय में करुणा उत्पन्न करती है-

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।

14*. नागरिकता - भारतीय
15*. पद - राष्ट्रकवि, सांसद
16*. अन्य जानकारी - आप खड़ी बोली के प्रथम महत्वपूर्ण कवि थे। महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से आपने खड़ी बोली को अपनी रचनाओं का माध्यम बनाया और अपनी कविता के द्वारा खड़ी बोली को एक काव्य - भाषा के रूप में निर्मित करने में अथक प्रयास किया। इस तरह ब्रज भाषा जैसी समृद्ध काव्य भाषा को छोड़कर समय और संदर्भों के अनुकूल होने के कारण नये कवियों ने इसे ही अपनी काव्य-अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। हिन्दी कविता के इतिहास में गुप्त जी का यह सबसे बड़ा योगदान है।

Scanned with OKEN Scanner

भारत के महान रत्न

जयंती - 03 अगस्त,1890

पुण्यतिथि 23 जून,1971

श्री प्रकाश

551

1*. पूरा नाम - श्रीप्रकाश
2*. जन्म - 3 अगस्त, 1890
3*. जन्म भूमि - वाराणसी, उत्तर प्रदेश
4*. मृत्यु - 23 जून, 1971
5*. मृत्यु स्थान - वाराणसी, उत्तर प्रदेश
6*. अभिभावक - पिता- डॉ. भगवान दास
7*. नागरिकता - भारतीय
8*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता सेनानी और राष्ट्रीय नेता
9*. पार्टी - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
10*. पद - 1952 से 1956 तक मद्रास के राज्यपाल और 1956 से 1962 तक असम एवं महाराष्ट्र के राज्यपाल के रूप में कार्य किया।
11*. शिक्षा - बैचलर ऑफ़ लॉ
12*. विद्यालय - कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी, लन्दन
13*. जेल यात्रा - सन् 1930 के 'नमक सत्याग्रह' में, 1932 के 'करबंदी आंदोलन' में और 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' में उन्होंने जेल की सजाएँ भोगीं।
14*. पुरस्कार-उपाधि - पद्मविभूषण
15*. संपादन - सी. वाई. चिंतामणि के साथ 'लीडर' में और फिर मोतीलाल नेहरू के पत्र 'इंडिपेंडैट' में भी श्रीप्रकाश ने कार्य किया।
16*. विशेष - अच्छे वक्ता, लेखक और देशभक्त श्रीप्रकाश की एक और विशेषता थी कि वे चाहे जिस पद पर रहे हों, लोगों के पत्रों का स्वयं उत्तर देते थे।
17*. अन्य जानकारी - भारत की स्वतंत्रता के बाद उन्हें 1947 में भारत का प्रथम उच्चायुक्त बना कर पाकिस्तान भेजा गया। 1949 में असम के राज्यपाल रहने के बाद वे कुछ समय तक केंद्रीय मंत्रिमंडल के सदस्य भी रहे।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 10 जून,1890

पुण्यतिथि 05 अगस्त,1950

गोपीनाथ बोरदोलोई

1*. पूरा नाम - गोपीनाथ बोरदोलोई
2*. जन्म - 10 जून, 1890 ई.
3*. जन्म भूमि - रोहा, ज़िला नौगाँव, असम
4*. मृत्यु - 5 अगस्त, 1950 ई.
5*. मृत्यु स्थान - गुवाहाटी, असम
6*. अभिभावक - पिता - श्री बुद्धेश्वर बोरदोलोई
माता - प्रानेश्वरी बोरदोलोई
7*. नागरिकता - भारतीय
8*. प्रसिद्धि - राजनीतिज्ञ, स्वतंत्रता सेनानी
9*. पार्टी - कांग्रेस
10*. पद - मुख्यमंत्री
11*. शिक्षा - बी.ए., एम.ए., क़ानून की डिग्री
12*. विद्यालय- कलकत्ता विश्वविद्यालय
13*. भाषा - हिन्दी, अंग्रेज़ी
14*. जेल यात्रा - 1941 ई. में 'व्यक्तिगत सत्याग्रह' में भाग लेने के कारण इन्हें कारावास जाना पड़ा था। वर्ष 1942 ई. में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में भागीदारी के कारण गोपीनाथ बोरदोलाई को पुन: सज़ा हुई।
15*. पुरस्कार-उपाधि - 'भारत रत्न' (1999 ई.)
16*. विशेष योगदान - 'कामरूप अकादमी' (गौहाटी), 'बरुआ कॉलेज', 'गौहाटी विश्व विद्यालय' और 'असम मेडिकल कॉलेज' आदि की स्थापना इन्हीं के प्रयासों द्वारा हुई थी जिसके कारण वहाँ की जनता ने उन्हें 'लोकप्रिय' की उपाधि दी थी।
17*. अन्य जानकारी - गोपीनाथ बोरदोलोई के नेतृत्व में असम प्रदेश में नवनिर्माण की पक्की आधारशिला रखी गई थी, इसलिए उन्हें 'आधुनिक असम का निर्माता' भी कहा जाता है।गोपीनाथ बोरदोलोई के प्रयत्नों से ही असम आज भारत का अभिन्न अंग है। असम में सरकार बनाने तथा उसकी उन्नति के लिए जो कार्य उन्होंने किए, अन्ततः भारत सरकार ने उन्हीं से प्रभावित होकर इन्हें 1999 में मरणोपरान्त भारत के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया। असम के लोग उन्हें बड़े प्यार से शेर-ए-असम के नाम से याद करते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

भारत के महान रत्न

जयंती - 07 मई,1861

पुण्यतिथि 07 अगस्त,1941

गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर

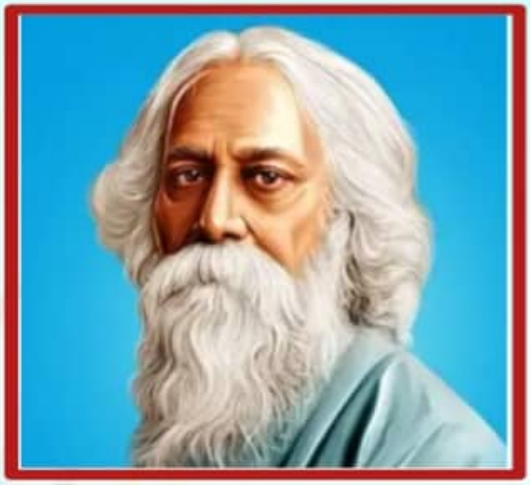

1*. पूरा नाम - रबीन्द्रनाथ ठाकुर
2*. अन्य नाम - रबीन्द्रनाथ टैगोर, गुरुदेव
3*. जन्म - 7 मई, 1861
4*. जन्म भूमि- कलकत्ता, पश्चिम बंगाल
5* vमृत्यु - 7 अगस्त, 1941
6*. मृत्यु स्थान - कलकत्ता, पश्चिम बंगाल
7*. अभिभावक - पिता - श्री देवेंद्रनाथ टैगोर
माता श्रीमती शारदा देवी
8*. पत्नी - मृणालिनी देवी
9*. कर्म भूमि - पश्चिम बंगाल
10*. कर्म-क्षेत्र - साहित्य की सभी विधाएँ
11*. मुख्य रचनाएँ - राष्ट्र-गान जन गण मन और बांग्लादेश का राष्ट्र-गान 'आमार सोनार बांग्ला', 'गीतांजलि', पोस्टमास्टर, मास्टर साहब, गोरा, घरे-बाइरे आदि।
12*. विषय - साहित्य
13*. भाषा - हिन्दी, अंग्रेज़ी, बांग्ला
14*. विद्यालय - सेंट ज़ेवियर स्कूल, लंदन कॉलेज विश्वविद्यालय
25*. पुरस्कार-उपाधि - सन 1913 ई. में 'गीतांजलि' के लिए नोबेल पुरस्कार, नाइटहुड (जलियाँवाला कांड के विरोध में उपाधि वापिस की)
16*. विशेष योगदान - राष्ट्र गान के रचयिता
17*. नागरिकता - भारतीय
18*. अन्य जानकारी - बांग्ला साहित्य के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक चेतना में नयी जान फूँकने वाले युगदृष्टा वे ही थे। वे एशिया के प्रथम नोबेल पुरस्कार सम्मानित व्यक्ति हैं। वे एकमात्र कवि हैं जिसकी दो रचनाएँ दो देशों का राष्ट्रगान बनीं - भारत का राष्ट्र-गान 'जन गण मन' और बाँग्लादेश का राष्ट्रीय गान 'आमार सोनार बांङ्ला' गुरुदेव की ही रचनाएँ हैं। 1901 में टैगोर ने पश्चिम बंगाल के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित शांतिनिकेतन में एक प्रायोगिक विद्यालय की स्थापना की। जहाँ उन्होंने भारत और पश्चिमी परंपराओं के सर्वश्रेष्ठ को मिलाने का प्रयास किया।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 08 अगस्त,1661

बलिदान दिवस 15 मई , 1683

तीलू रौतेली

1*. पूरा नाम - तीलू रौतेली
2*. मूलनाम – तिलोत्तमा देवी
3*. उपनाम – गढ़वाल की झांसी की रानी,जोन आफ आर्क
4*. जन्म वर्ष – 08 अगस्त 1661
5*. जन्म स्थान – चौंदकोट(पौड़ी), गढ़वाल, उत्तराखंड
6*. मृत्यु - 15 मई,1683
7*. मृत्यु स्थान - कांडा गांव
8*. मृत्यु का कारण - शहीद
9*. पिता का नाम – भूपसिंह रावत माता का नाम – मैणा देवी
10*. भाई के नाम – भक्तू, पर्थवा
11*. गुरु का नाम – सिब्बू कार्की
12*. सहेली का नाम – बेल्लू, देवली
13*. घोड़ी का नाम – बिंदूली
14*. नागरिकता - भारतीय
15*. प्रसिद्धि - गढ़वाल की लक्ष्मीबाई
16*. युद्ध - खैरागढ़, उमटागढ़ी, साल्ड महादेव और कालिंकाखाल का युद्ध
17*. विशेष - तीलू रौतेली या तिलोत्तमा देवी, गढ़वाल उत्तराखण्ड की एक ऐसी वीरांगना जो केवल 15 वर्ष की उम्र में, रणभूमि में कूद पड़ी थीं और सात साल तक जिसने अपने दुश्मन कत्यूरी राजाओं को कड़ी चुनौती दी थी। 22 साल की उम्र में उन्होने 13 गढ़ों पर विजय प्राप्त कर ली थी और अंत में अपने प्राणों की आहुति देकर वीरगति को प्राप्त हो गई। तीलू रौतेली आज एक वीरांगना के रूप में उत्तराखंड वासियों द्वारा याद की जाती हैं। तीलू रौतेली भारत की रानी लक्ष्मीबाई, चांद बीबी, झलकारी बाई, बेगम हजरत महल के समान ही देश विदेश में आज ख्याति प्राप्त हैं।
18*. अन्य जानकारी - 1 अप्रैल 2014 को उत्तराखंड राज्य सरकार द्वारा कृषि कार्य के दौरान दुर्घटना ग्रस्त महिला जो विकलांग हो जाती है उनके लिये तीलू रौतेली विशेष पेंशन योजना शुरुवात की गयी है जो 18 से 60 वर्ष की उम्र तक दी जाती है । तीलू रौतेली के जन्मोत्सव पर प्रतिवर्ष महिलाओं को राज्य सरकार के महिला सशक्तिकर्ण विभाग द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य के लिये राज्य की महिलाओं एवं युवतियों के उत्साह वर्धन के लिये तीलू रौतेली महिला शक्ति पुरस्कार दिये जाते है ।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 09 अगस्त,1906

बलिदान दिवस 28 सितम्बर,1926

अनंत हरि मित्रा

1*. पूरा नाम - अनंत हरि मित्रा
2*. जन्म - 09 अगस्त,1906
3*. जन्म स्थान - बेगमपुर , चुआडांगा जिला ,भारत
4*. मृत्यु - 28 सितम्बर, 1926 (आयु 19-20)
5*. मृत्यु स्थान - अलीपुर जेल , कोलकाता ,भारत
6*. मृत्यु का कारण - फाँसी
7*. पिता - श्री रामलाल मित्रा
8*. माता - श्रीमती पंचाननी देवी
9*. नागरिकता - भारतीय
10*. पेशा - भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन कार्यकर्ता
11*. आंदोलन - असहयोग आंदोलन
12*. आपराधिक दंड - सजा - ए - मौत की सुनवाई
13*. विशेष - असहयोग आंदोलन के मद्देनजर , अनंतहरि ने अपनी पढ़ाई छोड़ दी और एक पूर्णकालिक कांग्रेस कार्यकर्ता बन गए, चरखा कातने, बुनने और खद्दर बेचने और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के लिए आंदोलन करने लगे। उसके बाद मित्रा, राष्ट्रवादी क्रांतिकारी कवि बिजयलाल चट्टोपाध्याय से मिले और कृष्णनगर,नादिया आ गए जहाँ उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेताओं से मुलाकात की।1924 में, मित्रा ने क्रांतिकारी स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लिया और दक्षिणेश्वर के लिए रवाना हो गए। इन्होंने दक्षिणेश्वर में रहते हुए बमों का निर्माण किया।10 नवम्बर,1925 ई. को उन्हें दक्षिणेश्वर बम काण्ड के प्रमुख अभियुक्त के रूप में गिरफ्तार किया गया। जेल में उन्होंने पुलिस उप-अधीक्षक की हत्या कर दी तथा उन पर मुक़दमा चलाया गया। 28 सितंबर 1926 को अनंत हरि मित्रा और प्रमोद रंजन चौधरी को कोलकाता की अलीपुर जेल में फाँसी दे दी गई।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 16 सितम्बर,1893

पुण्यतिथि 10 अगस्त,1977

श्यामलाल गुप्त 'पार्षद'

1*. पूरा नाम - श्यामलाल गुप्त 'पार्षद'
2*. जन्म - 16 सितम्बर, 1893
3*. जन्म भूमि - नरवल, कानपुर
4*. मृत्यु - 10 अगस्त, 1977
5*. अभिभावक - पिता - विश्वेश्वर गुप्त माता - श्रीमती कौशल्या देवी
6*. कर्म भूमि - भारत
7*. कर्म-क्षेत्र - स्वतंत्रता सेनानी,पत्रकार, समाजसेवी एवं अध्यापक
8*. मुख्य रचनाएँ - 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा', 'स्वतन्त्र भारत', 'पंजाब केसरी'।
9*. विषय - देशभक्ति
10*. भाषा - हिंदी
11*. पुरस्कार-उपाधि - पद्म श्री
12*. विशेष योगदान - झंडागीत (विजयी विश्व तिरंगा प्यारा) की रचना
13*. नागरिकता - भारतीय
14*. समाज सेवा - राजनीतिक कार्यों के अलावा पार्षदजी सामाजिक कार्यों में भी अग्रणी रहे। उन्होंने दोसर वैश्य इंटर कालेज एवं अनाथालय, बालिका विद्यालय, गणेश सेवाश्रम, गणेश विद्यापीठ, दोसर वैश्य महासभा, वैश्य पत्र समिति आदि की स्थापना एवं संचालन किया। इसके साथ ही स्त्री शिक्षा व दहेज विरोध में आपने सक्रिय योगदान किया। आपने विधवा विवाह को सामाजिक मान्यता दिलाने में सक्रिय योगदान किया। पार्षदजी ने वैश्य पत्रिका का जीवन भर संपादन किया।
15*. अन्य जानकारी - स्वयं पार्षदजी के अनुसार, "गीत लिखते समय मुझे यही महसूस होता था कि भारत माता स्वयं बैठकर मुझे एक-एक शब्द लिखा रही है।"इस तरह उनकी कलम से निकला "विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊंचा रहे हमारा।" इस गीत को लेकर पार्षद जी अगले दिन सुबह ही विद्यार्थी जी के पास पहुंच गए। गणेश शंकर विद्यार्थी को यह गीत बहुत पसंद आया और उन्होंने पार्षद जी की जमकर तारीफ की। इसके बाद यह गीत महात्मा गांधी के पास भेजा गया जिन्होंने इसे छोटा करने की सलाह दी। सन 1938 में कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन में अध्यक्ष के रूप में नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने इसे झंडा गीत के रूप में स्वीकार किया और उनके साथ मौजूद पांच हजार से अधिक लोगों ने इसे पूरे जज्बे के साथ गाया।पार्षद जी के बारे में अपने उद्गार व्यक्त करते हुए नेहरू जी ने कहा था-'भले ही लोग पार्षदजी को नहीं जानते होंगे परंतु समूचा देश राष्ट्रीय ध्वज पर लिखे उनके गीत से परिचित है।'पार्षद जी 1916 से 1947 तक पूर्णत: समर्पित कर्मठ स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रहे।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 03 दिसम्बर,1889

बलिदान दिवस 11 अगस्त,1908

खुदीराम बोस

1*. पूरा नाम - खुदीराम बोस
2*. जन्म - 3 दिसंबर, 1889
3*. जन्म भूमि - गाँव-हबीबपुर,मिदनापुर ज़िला,बंगाल
4*. मृत्यु - 11 अगस्त, 1908
5*. मृत्यु कारण - फाँसी
6*. अभिभावक - पिता- त्रैलोक्य नाथ बोस,
माता - लक्ष्मीप्रिया देवी
7*. नागरिकता - भारतीय
8*. आंदोलन - भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन
9*. प्रसिद्धि - महान क्रांतिकारी
10*. संगठन - रिवोल्यूशनरी पार्टी
11*. विशेष - बंगाल प्रेसीडेंसी के एक भारतीय राष्ट्रवादी थे जिन्होंने भारत में ब्रिटिश शासन का विरोध किया था । मुजफ्फरपुर षडयंत्र केस में उनकी भूमिका के लिए, प्रफुल्ल चाकी के साथ, उन्हें एक ब्रिटिश न्यायाधीश, मजिस्ट्रेट डगलस किंग्सफोर्ड की हत्या की कोशिश के लिए मौत की सजा सुनाई गई थी, जिस पर उन्हें संदेह था कि वह व्यक्ति उस गाड़ी पर बम फेंक रहा था। हालांकि, मजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड एक अलग गाड़ी में बैठे थे, और बम फेंकने से दो ब्रिटिश महिलाओं की मौत हो गई।गिरफ्तारी से पहले प्रफुल्ल ने खुद को गोली मार ली। खुदीराम को गिरफ्तार कर लिया गया और उन पर दो महिलाओं की हत्या का मुकदमा चलाया गया, अंततः उन्हें मौत की सजा सुनाई गई। वह बंगाल में अंग्रेजों द्वारा फांसी दिए जाने वाले पहले भारतीय क्रांतिकारियों में से एक थे।
12*. अन्य जानकारी - खुदीराम बोस की शहादत से समूचे देश में देशभक्ति की लहर उमड़ पड़ी थी। उनके साहसिक योगदान को अमर करने के लिए गीत रचे गए और इनका बलिदान लोकगीतों के रूप में मुखरित हुआ। उनके सम्मान में भावपूर्ण गीतों की रचना हुई, जिन्हें बंगाल के लोक गायक आज भी गाते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 01 मई,1833

बलिदान दिवस 12 अगस्त,1858

बाबू बंधू सिंह

1*. पूरा नाम - बाबू बंधू सिंह
2*. जन्म - 1 मई, 1833
3*. जन्म स्थान - डुमरी, गोरखपुर
4*. मृत्यु - 12 अगस्त, 1858
5*. मृत्यु स्थान - गोरखपुर,डोमिनियन ऑफ इंडिया
6*. मृत्यु का कारण - फाँसी
7*. पिता - श्री शिव प्रसाद सिंह
8*. भाई - दल हम्मन सिंह,तेजई सिंह,फतेह सिंह,झीनक सिंह,करिया सिंह
9*. विश्राम स्थल - शहीद बंधु सिंह स्मारक, गोरखपुर
10*. राष्ट्रीयता - भारतीय
11*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता सेनानी
12*. विशेष - बंधू सिंह गुरिल्ला लड़ाई में माहिर थे, इसलिए जब भी कोई अंग्रेज उस जंगल से गुजरता, बंधू सिंह उसको मार कर उसका सर काटकर देवी मां के चरणों में समर्पित कर देते । पहले तो अंग्रेज यही समझते रहे कि उनके सिपाही जंगल में जाकर लापता हो जा रहे हैं, लेकिन धीरे-धीरे उन्हें भी पता लग गया कि अंग्रेज सिपाही बंधू सिंह के शिकार हो रहे हैं।
13*. अन्य जानकारी - तरकुलहा देवी मंदिर में हर साल चैत्र रामनवमी से एक महीने का मेला (मस्ती का मेला) लगता है। दूर-दराज के स्थानों से लोग अमर शहीद 'तरकुलहा मेला' में अपनी वार्षिक जरूरतों के लिए गरम मसाला (भारतीय मसाले) की खरीदारी करने और पारंपरिक 'नौटंकी' (नाटक), नाग कन्या शो और छोटे सर्कस का आनंद लेने आते हैं। इसके अलावा, तरकुलहा देवी मंदिर शहीद बंधू सिंह का पसंदीदा स्थान था।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 12 अगस्त,1919

पुण्यतिथि 30 दिसम्बर,1971

डॉ. विक्रम साराभाई

1*. पूरा नाम - डॉ. विक्रम अंबालाल साराभाई
2*. जन्म - 12 अगस्त, 1919
3*. जन्म भूमि - अहमदाबाद, गुजरात
4*. मृत्यु - 30 दिसम्बर, 1971
5*. मृत्यु स्थान - कोवलम, तिरुवनंतपुरम, केरल
6*. अभिभावक - अंबालाल साराभाई (पिता), सरला देवी (माता)
7*. कर्म भूमि - भारत
8*. कर्म-क्षेत्र - भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम
9*. भाषा - हिन्दी, अंग्रेज़ी
10*. शिक्षा - प्राकृतिक विज्ञान में ट्राइपॉस, पी.एच.डी
11*. विद्यालय - गुजरात कॉलेज, भारतीय विज्ञान संस्थान, केम्ब्रिज विश्वविद्यालय,
12*. नागरिकता - भारतीय
13*. पुरस्कार-उपाधि - शांतिस्वरूप भटनागर पुरस्कार (1962), पद्मभूषण (1966), पद्मविभूषण मरणोपरांत (1972)
14*. प्रसिद्धि - डॉ. साराभाई को 'भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का जनक माना जाता है।
15*. विशेष योगदान - 'भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन' (इसरो) की स्थापना इनकी महान् उपलब्धियों में से एक है।डॉ. साराभाई विज्ञान की शिक्षा में अत्यधिक दिलचस्पी रखते थे। इसीलिए उन्होंने 1966 में सामुदायिक विज्ञान केंद्र की स्थापना अहमदाबाद में की। आज यह केंद्र 'विक्रम साराभाई सामुदायिक विज्ञान केंद्र' कहलाता है। 1966 में नासा के साथ डॉ. सारा भाई के संवाद के परिणामस्वरूप जुलाई, 1975 से जुलाई, 1976 के दौरान 'उपग्रह अनुदेशा त्मक दूरदर्शन परीक्षण'(एसआईटीई) का प्रमोचन किया गया।डॉ.साराभाई ने भारतीय उपग्रहों के संविरचन और प्रमोचन के लिए परियोजनाएँ प्रारंभ कीं। इसके परिणामस्वरूप प्रथम भारतीय उपग्रह आर्यभट, रूसी कॉस्मोड्रोम से 1975 में कक्षा में स्थापित किया गया।
16*. अन्य जानकारी - डॉ.विक्रम साराभाई ने भारत को अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में नई ऊँचाईयों पर पहुँचाया और अंतर्राष्ट्रीय मानचित्र पर देश की उपस्थिति दर्ज करा दी। विक्रम साराभाई ने अन्य क्षेत्रों में भी समान रूप से पुरोगामी योगदान दिया। वे अंत तक वस्त्र, औषधीय, परमाणु ऊर्जा, इलेक्ट्रॉनिक्स और कई अन्य क्षेत्रों में लगातार काम करते रहे थे।डॉ. साराभाई एक रचनात्मक वैज्ञानिक, एक सफल और भविष्यद्रष्टा उद्योगपति, सर्वोच्च स्तर के प्रर्वतक, एक महान् संस्थान निर्माता, एक भिन्न प्रकार के शिक्षाविद, कला के पारखी, सामाजिक परिवर्तन के उद्यमी, एक अग्रणी प्रबंधन शिक्षक तथा और बहुत कुछ थे।

Scanned with OKEN Scanner

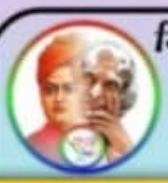

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 31 मई,1725

पुण्यतिथि 13 अगस्त,1795

रानी अहिल्याबाई होलकर

1*. पूरा नाम - रानी अहिल्याबाई होल्कर
2*. जन्म - 31 मई सन् 1725 ई.
3*. जन्म भूमि - चांऊडी गांव (चांदवड़), अहमदनगर, महाराष्ट्र
4*. मृत्यु - 13 अगस्त सन् 1795 ई.
5*. अभिभावक - मानकोजी शिंदे (पिता) सुशीला शिंदे (माता)
6*. पति - खंडेराव
7*. संतान - मालेराव (पुत्र) और मुक्ताबाई (पुत्री)
8*. कर्म भूमि - भारत
9*. विशेष योगदान - रानी अहिल्याबाई ने कलकत्ता से बनारस तक की सड़क, बनारस में अन्नपूर्णा का मन्दिर, गया में विष्णु मन्दिर बनवाये। इसके अतिरिक्त इन्होंने घाट बनवाए, कुओं और बावड़ियों का निर्माण करवाया, मार्ग बनवाए, भूखों के लिए सदाव्रत (अन्नक्षेत्र) खोले, प्यासों के लिए प्याऊ बिठलाईं, मंदिरों में विद्वानों की नियुक्ति शास्त्रों के मनन-चिंतन और प्रवचन हेतु की।
10*. नागरिकता - भारतीय
11*. विशेष - इस महान् शासिका के लिए एक श्रद्धांजलि के रूप में इंदौर घरेलू हवाई अडड्े का नाम देवी अहिल्याबाई होल्कर हवाई अड्डा रखा गया। इसी तरह इंदौर विश्वविद्यालय को देवी अहिल्या विश्वविद्यालय नाम दिया गया है।
12* अन्य जानकारी - अहिल्याबाई को एक दार्शनिक रानी के रूप में भी जाना जाता है। अहिल्याबाई एक महान् और धर्मपारायण स्त्री थी। वह हिंदू धर्म को मानने वाली थी और भगवान शिव की बड़ी भक्त थी।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 24 सितम्बर,1861

पुण्यतिथि 13 अगस्त,1936

भीकाजी कामा

1*. पूरा नाम - भीकाजी रुस्तम कामा
2*. अन्य नाम - मैडम कामा
3*. जन्म - 24 सितंबर, 1861
4*. जन्म भूमि - बम्बई (वर्तमान मुम्बई)
5*. मृत्यु - 13 अगस्त, 1936
6*. मृत्यु स्थान - बम्बई, भारत
7*. माता-पिता- सोराबजी फ्रामजी पटेल
और जैजीबाई सोराबजी पटेल
8*. पति - रुस्तम के. आर. कामा
9*. नागरिकता - भारत, फ्रांस
10*. संगठन - इंडिया हाउस,पेरिस इंडियन सोसाइटी ,भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
11*. प्रसिद्धि - मैडम भीकाजी कामा ने भारत का पहला झंडा फहराया, उसमें हरा, केसरिया तथा लाल रंग के पट्टे थे। लाल रंग यह शक्ति का प्रतीक है, केसरिया विजय का तथा हरा रंग साहस एवं उत्साह का प्रतीक है। उसी प्रकार 8 कमल के फूल भारत के 8 राज्यों के प्रतीक थे। 'वन्दे मातरम्' यह देवनागरी अक्षरों में झंडे के मध्य में लिखा था। यह झंडा वीर सावरकर ने अन्य क्रांतिकारियों के साथ मिलकर बनाया था।
12*. आंदोलन - भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन
13*. अन्य जानकारी - 'वन्दे मातरम' और 'मदन तलवार' नामक दो क्रांतिकारी पत्रों का प्रकाशन किया।कई भारतीय शहरों में भीखाजी कामा या मैडम कामा के नाम पर सड़कें और जगहें हैं। 26 जनवरी 1962 को भारत के 11वें गणतंत्र दिवस पर भारतीय डाक और तार विभाग ने उनके सम्मान में एक स्मारक डाक टिकट जारी किया।भीखाजी कामा ने अपनी अधिकांश निजी संपत्ति लड़कियों के लिए अवबाई पेटिट अनाथालय को दे दी, जिसे अब बाई अवबाई फ्रामजी पेटिट गर्ल्स हाई स्कूल कहा जाता है, जिसने उनके नाम पर एक ट्रस्ट की स्थापना की।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 21 नवम्बर,1872

पुण्यतिथि 14 अगस्त,1941

केसरी सिंह बारहठ

1*. पूरा नाम - केसरी सिंह बारहठ
2*. अन्य नाम - राजस्थान केसरी
3*. जन्म - 21 नवम्बर, 1872
4*. जन्म भूमि - देवपुरा, शाहपुरा, राजस्थान
5*. मृत्यु - 14 अगस्त, 1941
6*. अभिभावक - कृष्ण सिंह बारहठ
7*. भाई - ठाकुर जोरावर सिंह बारहठ
8*. जीवन साथी - माणिक कंवर
9*. संतान - प्रताप सिंह बारहट
10*. नागरिकता - भारतीय
11*. आंदोलन - भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन
12*. प्रसिद्धि - कवि तथा स्वतन्त्रता सेनानी
13*. धर्म - हिन्दू
14*. जेल यात्रा - 1914
15*. विशेष - केसरी सिंह बारहट का नाम कितना प्रसिद्ध था, उसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि उस समय के श्रेष्ठ नेता लोकमान्य तिलक ने अमृतसर में हुए 'कांग्रेस अधिवेशन' में उन्हें जेल से छुड़ाने का प्रस्ताव पेश किया था।
16*. अन्य जानकारी - सन् 1920-21 में वर्धा में केसरी जी के नाम से 'राजस्थान केसरी' नामक साप्ताहिक समाचार पत्र शुरू किया गया था, जिसके संपादक विजय सिंह पथिक थे। वर्धा में ही उनका महात्मा गाँधी से घनिष्ठ संपर्क हुआ। 1974 से, बारहठ परिवार की याद में 23 दिसंबर को शहीद मेला मनाया जाता है; 1912 में इसी दिन ठाकुर जोरावर सिंह बारहठ ने भारत के ब्रिटिश वायसराय की हत्या का प्रयास किया था। शाहपुरा में एक मेला लगता है,और शहीद मेला शहीद त्रिमूर्ति स्मारक पर होता है। स्मारक में बारहठ, जोरावर सिंह और कुंवर प्रताप सिंह की मूर्तियाँ हैं ।

Scanned with OKEN Scanner

भारत के महान रत्न

जयंती - 16 अगस्त,1904

पुण्यतिथि 15 फरवरी,1948

सुभद्रा कुमारी चौहान

1*. पूरा नाम - सुभद्रा कुमारी चौहान
2*. जन्म - 16 अगस्त, 1904
3*. जन्म भूमि - निहालपुर, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
4*. मृत्यु - 15 फरवरी, 1948
5*. मृत्यु स्थान - सड़क दुर्घटना (नागपुर - जबलपुर के मध्य)
6*. अभिभावक - पिता- ठाकुर रामनाथ सिंह
7*. पति - ठाकुर लक्ष्मण सिंह
8*. संतान - सुधा चौहान, अजय चौहान, विजय चौहान, अशोक चौहानत और ममता चौहान
9*. कर्म भूमि - भारत
10*. कर्म-क्षेत्र - लेखक
11*. मुख्य रचनाएँ - 'मुकुल', 'झाँसी की रानी', बिखरे मोती आदि।
12*. विषय सामाजिक, देशप्रेम
13*. भाषा - हिन्दी
14*. पुरस्कार-उपाधि - सेकसरिया पुरस्कार
15*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता सेनानी, कवयित्री, कहानीकार
26*. विशेष योगदान - राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाते हुए, उस आनन्द और जोश में सुभद्रा जी ने जो कविताएँ लिखीं, वे उस आन्दोलन में स्त्रियों में एक नयी प्रेरणा भर देती हैं। हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका थीं। उनके दो कविता संग्रह तथा तीन कथा संग्रह प्रकाशित हुए, पर उनकी प्रसिद्धि 'झाँसी की रानी' कविता के कारण है। सुभद्रा जी राष्ट्रीय चेतना की एक सजग कवयित्री रहीं, किन्तु उन्होंने स्वाधीनता संग्राम में अनेक बार जेल यातनाएँ सहने के पश्चात् अपनी अनुभूतियों को कहानी में भी व्यक्त किया। वातावरण चित्रण-प्रधान शैली की भाषा सरल तथा काव्यात्मक है, इस कारण उनकी रचना की सादगी हृदयग्राही है।

'चमक उठी सन् सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
ख़ूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

17*. नागरिकता - भारतीय
18*. अन्य जानकारी - भारतीय तटरक्षक सेना ने 28 अप्रैल, 2006 को सुभद्रा कुमारी चौहान को सम्मानित करते हुए नवीन नियुक्त तटरक्षक जहाज़ को उन का नाम दिया है।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 18 फरवरी,1883

बलिदान दिवस 17 अगस्त,1909

मदनलाल ढींगरा

1*. पूरा नाम - मदनलाल ढींगरा
2*. जन्म - 18 फ़रवरी, 1883 ई.
3*. जन्म भूमि - पंजाब
4*. मृत्यु - 17 अगस्त, 1909 ई.
5*. मृत्यु स्थान - लंदन, इंग्लैंड
6*. मृत्यु कारण - फाँसी
7*. पिता - डॉ. दित्ता मल ढींगरा
8*. नागरिकता - भारतीय
9*. संगठन - अभिनव भारत मंडल, इंडिया हाउस
10*. आंदोलन - भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन
11*. विशेष - 1जुलाई 1909 को 'इंडियन नेशनल एसोसिएशन' के लंदन में आयोजित वार्षिक दिवस समारोह में बहुत से भारतीय और अंग्रेज़ शामिल हुए। ढींगरा इस समारोह में अंग्रेज़ों को सबक सिखाने के उद्देश्य से गए थे। अंग्रेज़ों के लिए भारतीयों से जासूसी कराने वाले ब्रिटिश अधिकारी सर कर्ज़न वाइली ने जैसे ही हाल में प्रवेश किया तो ढींगरा ने रिवाल्वर से उस पर चार गोलियां दाग़ दीं। कर्ज़न को बचाने की कोशिश करने वाला पारसी डॉक्टर कोवासी ललकाका भी ढींगरा की गोलियों से मारा गया।
12*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता सेनानी
13*. धर्म - हिन्दू
14*. विद्यालय - 'यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन'
15*. अन्य जानकारी - मदनलाल ढींगरा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान् क्रान्तिकारी थे। स्वतंत्रत भारत के निर्माण के लिए भारत-माता के कितने शूरवीरों ने हंसते-हंसते अपने प्राणों का उत्सर्ग किया था, उन्हीं महान् शूरवीरों में 'अमर शहीद मदन लाल ढींगरा' का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य है। अमर शहीद मदन लाल ढींगरा महान् देशभक्त, धर्मनिष्ठ क्रांतिकारी थे। उन्होंने भारत माँ की आज़ादी के लिए जीवन-पर्यन्त अनेक प्रकार के कष्ट सहन किए, परन्तु अपने मार्ग से विचलित न हुए और स्वाधीनता प्राप्ति के लिए फाँसी पर झूल गए।

Scanned with OKEN Scanner

भारत के महान रत्न

जयंती - 14 जनवरी,1934

पुण्यतिथि 17 अगस्त,2007

दशरथ मांझी

1*. पूरा नाम - दशरथ मांझी
2*. अन्य नाम - माउंटेन मैन
3*. जन्म - 14 जनवरी, 1934
4*. जन्म भूमि - गहलौर, बिहार
5*. मृत्यु - 17 अगस्त, 2007
6*. मृत्यु स्थान - एम्स, नई दिल्ली
7*. पत्नी - फाल्गुनी देवी
8*. कर्म भूमि - भारत
9*. कर्म-क्षेत्र - मजदूरी
10*. प्रसिद्धि - एक हथौड़ा और छेनी लेकर दशरथ मांझी ने अकेले ही 22 वर्षों के परिश्रम के बाद 360 फुट लंबी 30 फुट चौड़ी और 25 फुट ऊँचे पहाड़ को काट के एक सड़क बना डाली।
11*. नागरिकता - भारतीय
12*. अन्य जानकारी - दशरथ मांझी ने अपने काम को 22 वर्षों (1960-1982) में पूरा किया। इस सड़क ने गया के अत्रि और वज़ीरगंज सेक्टर्स की दूरी को 55 कि.मी. से 15 कि.मी. कर दिया।फिल्म प्रभाग ने दशरथ मांझी पर एक वृत्तचित्र फिल्म "द मैन हु मूव्ड द माउंटेन" का भी 2012 में निर्माँ किया। कुमुद रंजन इस वृत्तचित्र के निर्देशक थे। जुलाई 2012 में निदेशक केतन मेहता ने दशरथ माँझी के जीवन पर आधारित फिल्म 'मांझी: द माउंटेन मैन' बनाने की घोषणा की। अपनी मृत्युशय्या पर दशरथ मांझी ने अपने जीवन पर एक फिल्म बनाने के लिए "विशेष अधिकार" दे दिया। 21 अगस्त 2015 को फिल्म को रिलीज़ किया गया। नवाज़ुद्दीन सिद्दीकी ने दशरथ मांझी की और राधिका आप्टे ने फाल्गुनी देवी की भूमिका निभाई। दशरथ मांझी के कामों को एक कन्नड़ फिल्म "ओलवे मंदार" में जयतीर्थ द्वारा दिखाया गया है।मार्च 2014 में प्रसारित आमिर खान द्वारा होस्ट किए गए टीवी शो सत्यमेव जयते के सीज़न 2 का पहला एपिसोड दशरथ मांझी को समर्पित था।अपने काम की पहचान पाने के लिए वे नई दिल्ली गए और बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने उन्हें पुरस्कृत किया । 2016 में, भारतीय डाक ने मांझी पर एक डाक टिकट जारी किया।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती -
19 अगस्त,1918

पुण्यतिथि
26 दिसम्बर,1999

डॉ शंकर दयाल शर्मा

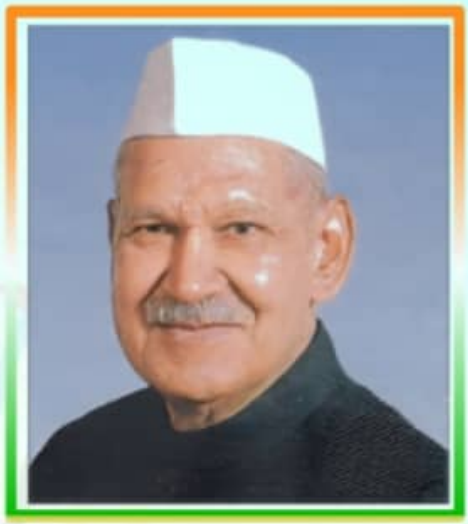

1*. पूरा नाम - डॉक्टर शंकरदयाल शर्मा
2*. जन्म - 19 अगस्त, 1918
3*. जन्म भूमि - भोपाल
4*. मृत्यु - 26 दिसम्बर, 1999
5*. मृत्यु स्थान - नई दिल्ली
6*. मृत्यु कारण - दिल का दौरा
7*. अभिभावक - श्री खुशीलाल शर्मा,
श्रीमती सुभद्रा देवी
8*. पत्नी - श्रीमती विमला शर्मा
9*. संतान - दो पुत्र और दो पुत्री
10*. नागरिकता - भारतीय
11*. प्रसिद्धि - भारत के 9वें राष्ट्रपति
12*. पार्टी - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
13*. पद - राष्ट्रपति, मुख्यमंत्री तथा राज्यपाल
14*. कार्य काल - 25 जुलाई, 1992 से 25 जुलाई, 1997
15*. शिक्षा - एल.एल.बी., पी.एच.डी.
16*. विद्यालय - दिगम्बर जैन स्कूल; सेंट जोंस कॉलेज, आगरा; इलाहाबाद विश्वविद्यालय और लखनऊ विश्वविद्यालय; कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, इंग्लैण्ड
17*. भाषा - हिन्दी, अंग्रेज़ी और संस्कृत
18*. जेल यात्रा - स्वतंत्रता संग्राम के दौरान
19*. पुरस्कार-उपाधि - 'डॉक्टर ऑफ लॉ', अंग्रेज़ी साहित्य, हिन्दी तथा संस्कृत में स्नातकोत्तर उपाधियाँ
20*. अन्य जानकारी - डॉ. शंकर दयाल शर्मा , 1999 में ए.के. गौरहा द्वारा बनाई गई एक लघु वृत्तचित्र फीचर उनके जीवन और राष्ट्रपति पद को दर्शाती है।इसका निर्माण भारत सरकार के फिल्म प्रभाग द्वारा किया गया था ।2000 में, भारतीय डाक द्वारा उनके सम्मान में एक स्मारक डाक टिकट जारी किया गया था। भोपाल में, डॉ. शंकर दयाल शर्मा आयुर्वेदिक कॉलेज और अस्पताल और डॉ. शंकर दयाल शर्मा कॉलेज का नाम उनके नाम पर रखा गया है। लखनऊ विश्वविद्यालय के अंतर्गत डॉ. शंकर दयाल शर्मा लोकतंत्र संस्थान का उद्घाटन 2009 में किया गया। भारत के कई विश्वविद्यालयों में प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला शंकर दयाल शर्मा स्वर्ण पदक, शर्मा द्वारा किए गए दान से 1994 में स्थापित किया गया था।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती -
23 जनवरी,1897

बलिदान दिवस
18 अगस्त,1945

सुभाष चन्द्र बोस

1*. पूरा नाम - सुभाष चंद्र बोस
2*. अन्य नाम - नेताजी
3*. जन्म - 23 जनवरी, 1897
4*. जन्म भूमि - कटक, उड़ीसा
5*. मृत्यु - 18 अगस्त, 1945 (आपकी मृत्यु को लेकर मतभेद है।)
6*. मृत्यु स्थान - ताइवान, जापान
7*. अभिभावक - श्री जानकीनाथ बोस, श्रीमती प्रभावती देवी
8*. पत्नी - ऐमिली शिंकल (Emilie Schenkl)
9*. संतान पुत्री- अनीता बोस
10*. नागरिकता - भारतीय
11*. धर्म - हिन्दू
12*. आंदोलन - भारतीय स्वतंत्रता संग्राम
13*. संगठन - फारवर्ड ब्लाक, आजाद हिन्द फौज
14*. प्रसिद्ध नारा - 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा',जय हिन्द
15*. विद्यालय - प्रेज़िडेंसी कॉलेज, स्कॉटिश चर्च कॉलेज, केंब्रिज विश्वविद्यालय
16*. शिक्षा - स्नातक
17*. विशेष - द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए उन्होंने जापान के सहयोग से आजाद हिन्द फौज का गठन 1943 में किया था। आजाद हिन्द सरकार और बैंक की स्थापना की। देश के बाहर हिंदुस्तान की आजादी के लिए अन्य देशों से समर्थन हासिल किया।
18*. अन्य जानकारी - नेताजी सुभाष चंद्र बोस के अतिरिक्त भारत के इतिहास में ऐसा कोई व्यक्तित्व नहीं हुआ, जो एक साथ महान् सेनापति, वीर सैनिक, राजनीति का अद्भुत खिलाड़ी और अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पुरुषों, नेताओं के समकक्ष साधिकार बैठकर कूटनीति तथा चर्चा करने वाला हो। भारत की स्वतंत्रता के लिए सुभाष चंद्र बोस ने क़रीब-क़रीब पूरे यूरोप में अलख जगाया। बोस प्रकृति से साधु, ईश्वर भक्त तथा तन एवं मन से देशभक्त थे। महात्मा गाँधी के नमक सत्याग्रह को 'नेपोलियन की पेरिस यात्रा' की संज्ञा देने वाले सुभाष चंद्र बोस का एक ऐसा व्यक्तित्व था, जिसका मार्ग कभी भी स्वार्थों ने नहीं रोका। जिसके पाँव लक्ष्य से कभी पीछे नहीं हटे, जिसने जो भी स्वप्न देखे, उन्हें साधा। नेताजी में सच्चाई के सामने खड़े होने की अद्भुत क्षमता थी।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 20 अगस्त,1915

पुण्यतिथि 12 सितम्बर,1997

बाबू मूलचंद जैन

1*. पूरा नाम - बाबू मूलचंद जैन
2*. अन्य नाम - हरियाणा के गांधी
3*. जन्म - 20 अगस्त,1915
4*. जन्म स्थान - सिकंदरपुर माजरा,गोहाना,सोनीपत,हरियाणा
5*. मृत्यु - 12 सितम्बर,1997
6*. मृत्यु स्थान - करनाल, हरियाणा
7*. शिक्षा - स्नातक
8*. विद्यालय - एसडी कॉलेज, लाहौर
9*. पेशा - स्वतंत्रता सेनानी,
10* भारतीय राजनेता, सांसद, वकील, सत्याग्रही, सामाजिक कार्यकर्ता
11*. आंदोलन - सविनय अवज्ञा आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन
12*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता सेनानी, हरियाणा के गांधी
13*. नागरिकता - भारतीय
14*. जेल यात्रा - गांधीजी के आह्वान पर स्वतंत्रता आंदोलन में कूदे बाबू मूलचंद को सिकंदरपुर माजरा में सत्याग्रह पर गिरफ्तार कर लिया गया। एक साल की सजा काटकर लौटे तो 1942 में करनाल कचहरी से उन्हें भारत छोड़ो आंदोलन में सहभागिता के कारण गिरफ्तार कर पुरानी केंद्रीय जेल मुलतान (पाकिस्तान) भेज दिया गया, जहां वह एक साल रहे।
15*. अन्य जानकारी - बाबू मूलचंद जैन जिन्हें अक्सर "हरियाणा के गांधी" के रूप में जाना जाता है। एक गांधीवादी जो अलग-अलग समय पर कांग्रेस पार्टी, विशाल हरियाणा पार्टी, जनता पार्टी, लोक दल और फिर हरियाणा विकास पार्टी के सदस्य रहे। वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक स्वतंत्रता सेनानी, सांसद, वकील, सत्याग्रही सामाजिक कार्यकर्ता और भारतीय राजनेता थे, जिन्होंने संयुक्त पंजाब में आबकारी एवं कराधान और लोक निर्माण विभाग मंत्री के साथ-साथ वित्त मंत्री , उपाध्यक्ष (योजना बोर्ड) के रूप में भी कार्य किया।हरियाणा सरकार ने आईटीआई करनाल का नाम मद्धम बाबू मूलचंद जैन एआईटीआई करनाल आतिथ्य स्वतंत्रता सेनानी को नामित किया है।आईटीआई से कुंजपुरा तक के रोड का नाम बाबू मूलचंद मार्ग रखा गया है।

Scanned with OKEN Scanner

भारत के महान रत्न

जयंती - 17 सितम्बर,1872

पुण्यतिथि 21 अगस्त,1948

वामनराव बलिराम लाखे

556

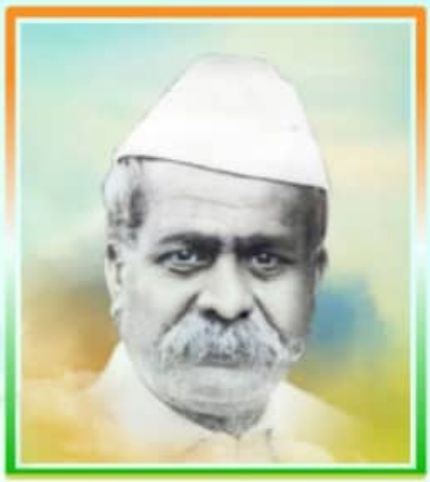

1*. पूरा नाम - वामनराव बलिराम लाखे
2*. जन्म - 17 सितम्बर, 1872
3*. जन्म स्थान - रायपुर, छत्तीसगढ़
4*. मृत्यु - 21 अगस्त, 1948
5*. अभिभावक - पण्डित बलीराव गोविंदराव लाखे
6*. पत्नी - जानकी बाई
7*. नागरिकता - भारतीय
8*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता सेनानी
9*. आंदोलन - असहयोग आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन
10*. धर्म - हिन्दू
11*. पत्रिका प्रकाशन - छत्तीसगढ़ पत्रिका के मुख्य सहयोगी
12*. पुरस्कार/उपाधि - राय साहब
13*. विशेष योगदान - आपने रायपुर में 'ए.वी.एम. स्कूल' की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसे बाद में इनकी मृत्यु के पश्चात् नाम बदलकर 'श्री वामनराव लाखे उच्चतर माध्यमिक शाला' कर दिया गया।
14*. अन्य जानकारी - भारत की आज़ादी के लिए संघर्ष करने वाले छत्तीसगढ़ राज्य के स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थे। 1913 में लाखे जी ने अपना कार्य क्षेत्र सहकारी आंदोलन को बनाया था, जिससे वे जीवन पर्यन्त जुड़े रहे। सहकारिता आंदोलन के द्वारा दु:खी और शोषित किसानों की सेवा तथा सहयोग करना उनका प्रमुख उद्देश्य था। सन 1915 में रायपुर में 'होमरूल लीग' की स्थापना की गई थी।वामनराव बलिराम लाखे जी उसके संस्थापक थे।छत्तीसगढ़ में शुरू में जो राजनीतिक चेतना फैली, उसमें लाखे जी का बहुत बड़ा योगदान था। उन्होंने अपना सारा जीवन राष्ट्रीय आन्दोलन और सहकारी संगठन में बिताया।1922 में वामनराव लाखे 'रायपुर ज़िला कांग्रेस' के अध्यक्ष निर्वाचित हुए थे। इसी समय में उन्होंने नियमित खादी वस्त्र पहनने तथा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का संकल्प लिया।

Scanned with OKEN Scanner

भारत के महान रत्न

जयंती - 20 फरवरी,1915

पुण्यतिथि 22 अगस्त,1983

सरदार कुलबीर सिंह

557

1*. पूरा नाम - सरदार कुलबीर सिंह
2*. जन्म - 20 फरवरी,1915
3*. जन्म स्थान - गांव बंगा,लायलपुर, पंजाब,
4*. मृत्यु - 22 अगस्त,1983
5*. मृत्यु स्थान - फिरोजपुर , चंडीगढ़
6*. पिता - सरदार किशनसिंह
7*. माता - विद्यावती कौर
8*. चाचा - सरदार अजीत सिंह
9*. भाई - बहन - भगत सिंह, कुलतार सिंह, अमर कौर, शकुंतला कौर, रणबीर सिंह, राजेंद्र सिंह, सुमित्रा कौर (प्रकाश कौर)
10*. शिक्षा - D.A.V. मीडिल स्कूल, लाहौर
11*. जेल यात्रा - लगभग 6 वर्षों तक जेल में बंद रहे।
12*. संगठन - नौजवान भारत सभा
13* आंदोलन - भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन
14*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता सेनानी,
15*. नागरिकता - भारतीय
16*. सरदार कुलबीर सिंह के नाम भगत सिंह के पत्र - देश के हजारों नौजवानों की भांति वह भी भगतसिंह को अपना आदर्श मानते थे । भगत सिंह भी उन्हें बहुत चाहते थे, उन्होंने जेल में रहते हुए कुलवीर जी को 3 पत्र क्रमशः 16 सितम्बर 1930, 25 सितम्बर 1930 और 3 मार्च 1931 को लिखे थे ।
भगत सिंह मां मेरी लाश को लेने तुम मत आना, कुलबीर को भेज देना। मेरी लाश देखकर कहीं तुम रो पड़ी तो लोग कहेंगे देखो भगत सिंह की मां रो रही है।
उन्होंने अंतिम पत्र में कुलबीर के लिए काफी चिंता व्यक्त करते हुए लिखा था कि
"मै तुम्हारे लिए कुछ न कर सका, तुम्हारी जिन्दगी का क्या होगा, गुजारा कैसे करोगे, यह सोचकर कांप जाता हूँ, मगर भाई हौसला रखना, मुसीबत में भी कभी मत घबराना, मेहनत करके पढ़ते जाना, जानता हूँ कि आज तुम्हारे दिल के अंदर गम का समुन्द्र टाठे मार रहा है, पर हौसला रखना मेरे प्यारे भाई ।"
17*. अन्य जानकारी - उन्होंने युवाओ को अतीत के गौरव और देशभक्ति की प्रेरणा देने के लिए "सरदार कुलबीर सिंह फाउंडेशन" की स्थापना की, वह आ. भा. स्वाधीनता संग्राम सेनानी संघ की हरियाणा शाखा के प्रमुख भी रहे, उन्होंने Faridabad Branch of Indian Council of World Affairs के प्रेजिडेंट पद पर भी कार्य किया, उन्होंने एक पुस्तक "Revolutionary Movements" Significance and Sardar Ajit Singh" भी लिखी, उन्होंने अपना बाद का जीवन क्रान्तिकारियों के दुर्लभ दस्तावेजो के संग्रह में व्यतीत किया, यह उल्लेखनीय है कि भगत सिंह द्वारा जेल में लिखी गयी जेल डायरी उनकी शहादत के 2 दिन पहले ही लाहौर के जेलर द्वारा कुलबीर सिंह को सौपी गयी थी।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - ********1903

बलिदान दिवस 23 अगस्त,1935

गुलाब सिंह लोधी

558

1*. पूरा नाम - गुलाब सिंह लोधी
2*. जन्म - *****1903
3*. जन्म स्थान - उन्नाव ,उत्तर प्रदेश,भारत
4*. मृत्यु - 23 अगस्त 1935 (आयु 32)
5*. मृत्यु स्थान - अमीनाबाद,लखनऊ,भारत
6*. पिता - ठाकुर राम रतन सिंह लोधी
7*. धर्म - हिन्दू
8*. नागरिकता - भारतीय
9*. आंदोलन - झण्डा सत्याग्रह आंदोलन
10*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता सेनानी
11*. विशेष - झण्डा सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेने उन्नाव जिले के कई सत्याग्रही जत्थे गये थे, परन्तु सिपाहियों ने उन्हें खदेड दिया और ये जत्थे तिरंगा झंडा फहराने में कामयाब नहीं हो सके। इन्हीं सत्याग्रही जत्थों में शामिल वीर गुलाब सिंह लोधी किसी तरह फौजी सिपाहियों की टुकड़ियों के घेरे की नजर से बचकर अमीनाबाद पार्क में घुस गये और चुपचाप वहां खड़े एक पेड़ पर चढ़ने में सफल हो गये।क्रांतिवीर ठा0 गुलाब सिंह लोधी के हाथ में डंडा जैसा बैलों को हांकने वाला पैना था। उसी पैना में तिरंगा झंडा लगा लिया, जिसे उन्होंने अपने कपड़ों में छिपाकर रख लिया था। क्रांतिवीर गुलाब सिंह लोधी के झंडा फहराते ही सिपाहियों की आँख फिरी और अंग्रेजी साहब का हुकुम हुआ, गोली चलाओ। कई बंदूकें एकसाथ ऊपर उठीं और धांय-धांय कर फायर होने लगे। गोलियां क्रांतिवीर सत्याग्रही गुलाब सिंह लोधी को जा लगीं जिसके फलस्वरूप वे घायल होकर पेड़ से जमीन पर गिर पड़े। रक्तरंजित वे वीर धरती पर ऐसे पड़े थे, मानो वे भारतमाता की गोद में सो गए हों। इस प्रकार वे आजादी की बलिवेदी पर अपने प्राणों को न्योछावर कर 23 अगस्त 1935 को शहीद हो गए।
12*. अन्य जानकारी - भारत सरकार ने वर्ष 2013 के 23 दिसंबर को 'गुलाब सिंह लोधी' के सम्मान में एक डाक टिकट जारी किया।2004 में पार्क में उनकी एक प्रतिमा स्थापित की गई थी लेकिन 2009 तक वह जीर्ण-शीर्ण अवस्था में थी।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 24 अगस्त,1908

बलिदान दिवस 23 मार्च,1931

शिवराम हरि राजगुरु

1*. पूरा नाम - शिवराम हरि राजगुरु
2*. अन्य नाम - राजगुरु
3*. जन्म - 24 अगस्त, 1908
4*. जन्म भूमि - पुणे, भारत
5*. मृत्यु - 23 मार्च, 1931
6*. मृत्यु स्थान - लाहौर, पाकिस्तान
7*. मृत्यु कारण - शहीद
8*. अभिभावक पिता- श्री हरि नारायण,
माता- पार्वती बाई
9*. नागरिकता - भारतीय
10*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता सेनानी
11*. धर्म - हिन्दू
22*. आंदोलन - भारतीय स्वतंत्रता संग्राम
13*. जेल यात्रा - 28 सितंबर, 1929
14*. विशेष - भगत सिंह और सुखदेव, ये दोनों राजगुरु को अपना सबसे अच्छा साथी मानते थे। दल ने लाला लाजपत राय की मृत्यु के जिम्मेदार अंग्रेज़ अफ़सर स्कॉट का वध करने की योजना बनायी। इस काम के लिए राजगुरु और भगत सिंह को चुना गया। राजगुरु तो अंग्रेज़ों को सबक सिखाने का अवसर ढूँढ़ते ही रहते थे, अब वह सुअवसर उन्हें मिल गया था। 19 दिसंबर, 1928 को राजगुरु,स भगत सिंह और चंद्रशेखर आज़ाद ने सुखदेव के कुशल मार्गदर्शन के फलस्वरूप जे. पी. सांडर्स नाम के एक अन्य अंग्रेज़ अफ़सर, जिसने स्कॉट के कहने पर लाला लाजपत राय पर लाठियाँ चलायी थीं, का वध कर दिया। कार्रवाई के पश्चात् भगत सिंह अंग्रेज़ी साहब बनकर, राजगुरु उनके सेवक बनकर और चंद्रशेखर आज़ाद सुरक्षित पुलिस की दृष्टि से बचकर निकल गए। लेकिन कुछ दिनों बाद गिरफ्तार कर लिए गए।
15*. अन्य जानकारी - भारत के प्रसिद्ध वीर स्वतंत्रता सेनानी थे। ये सरदार भगत सिंह और सुखदेव के घनिष्ठ मित्र थे। इस मित्रता को राजगुरु ने मृत्यु पर्यंत निभाया। देश की आजादी के लिए दिये गये राजगुरु के बलिदान ने इनका नाम भारतीय इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित करवा दिया। राजगुरु, भगत सिंह और सुखदेव का बलिदान आज भी भारत के युवकों को प्रेरणा प्रदान करता है। राजगुरु `स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं उसे हासिल करके रहूँगा' का उद्घोष करने वाले बाल गंगाधर तिलक के विचारों से बहुत प्रभावित थे। पुणे का वह खेड़ा गाँव जहाँ राजगुरु का जन्म हुआ था, उसे अब 'राजगुरु नगर' के नाम से जाना जाता है।

Scanned with OKEN Scanner

भारत के महान रत्न

जयंती - 24 अगस्त,1911

पुण्यतिथि 26 दिसम्बर,1986

बीना दास

559

1*. पूरा नाम - बीना दास
2*. जन्म - 24 अगस्त, 1911 ई.
3*. जन्म भूमि - कृष्णानगर, बंगाल (आज़ादी से पूर्व)
4*. मृत्यु - 26 दिसम्बर, 1986
5*. मृत्यु स्थान - ऋषिकेश, उत्तराखण्ड
6*. अभिभावक - पिता - श्री बेनी माधव दास
माता - श्रीमती सरला दास
7*. जीवन साथी - ज्योतिश चन्द्र भौमिक
8*. नागरिकता - भारतीय
9*. संगठन - युगांतर दल
10*. आंदोलन - भारत छोड़ो आंदोलन
11*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता सेनानी
12*. धर्म - हिन्दू
13*. पुरस्कार/उपाधि - पद्म श्री
14*. जेल यात्रा - 'भारत छोड़ो आन्दोलन' के समय बीना दास को तीन वर्ष के लिये नज़रबन्द कर लिया गया था।
15*. शिक्षा - बी.ए.
16*. अन्य जानकारी - भारत की महिला क्रांतिकारियों में से एक थीं। इनका रुझान प्रारम्भ से ही सार्वजनिक कार्यों की ओर रहा था। 'पुण्याश्रम संस्था' की स्थापना इन्होंने की थी, जो निराश्रित महिलाओं को आश्रय प्रदान करती थी। बीना दास का सम्पर्क 'युगांतर दल' के क्रांतिकारियों से हो गया था। एक दीक्षांत समारोह में इन्होंने अंग्रेज़ गवर्नर स्टनली जैक्सन पर गोली चलाई, लेकिन इस कार्य में गवर्नर बाल-बाल बच गया और बीना गिरफ़्तार कर ली गईं। 1937 में कांग्रेस की सरकार बनने के बाद कई राजबंदियों के साथ बीना दास को भी रिहा कर दिया गया।1946 से 1951 तक बीना दास बंगाल विधान सभा की सदस्य रही थीं। गांधी जी की नौआख़ाली यात्रा के समय लोगों के पुनर्वास के काम में बीना ने भी आगे बढ़कर हिस्सा लिया था।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 26 अगस्त,1910

पुण्यतिथि 05 सितम्बर,1997

मदर टेरेसा

1*. पूरा नाम - एग्नेस गोनक्शा बोजाक्शिहउ
2*. जन्म - 26 अगस्त, 1910
3*. जन्म भूमि - यूगोस्लाविया
4*. मृत्यु - 5 सितंबर, 1997
5*. मृत्यु स्थान - कलकत्ता
6*. अभिभावक - पिता- निकोला बोयाजू
7*. कर्म भूमि - भारत
8*. कर्म-क्षेत्र - समाजसेवा
9*. पुरस्कार-उपाधि - पद्मश्री, नोबेल पुरस्कार, भारत रत्न, मेडल आफ़ फ्रीडम।
10*. प्रसिद्धि - सामाजिक कार्यकर्ता व सेविका
11*. नागरिकता - भारतीय
12*. विशेष - मदर टेरेसा जब भारत आईं तो उन्होंने यहाँ बेसहारा और विकलांग बच्चों तथा सड़क के किनारे पड़े असहाय रोगियों की दयनीय स्थिति को अपनी आँखों से देखा और फिर वे भारत से मुँह मोड़ने का साहस नहीं कर सकीं। वे यहीं पर रुक गईं और जनसेवा का व्रत ले लिया, जिसका वे अनवरत पालन करती रहीं।
13*. अन्य जानकारी - मदर टेरेसा मात्र अठारह वर्ष की उम्र में में दीक्षा लेकर वे सिस्टर टेरेसा बनी थीं। इस दौरान 1948 में उन्होंने बच्चों को पढ़ाने के लिए एक स्कूल खोला और तत्पश्चात् 'मिशनरीज ऑफ चैरिटी' की स्थापना की। सच्ची लगन और मेहनत से किया गया काम कभी निष्फल नहीं होता, यह कहावत मदर टेरेसा के साथ सच साबित हुई। मदर टेरेसा की मिशनरीज संस्था (Mother Teresa missionaries of charity) ने 1996 तक क़रीब 125 देशों में 755 निराश्रित गृह खोले जिससे क़रीबन पाँच लाख लोगों की भूख मिटाए जाने लगी।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 07 मई,1889

पुण्यतिथि 26 अगस्त,1975

एन. एस. हार्डिकर

560

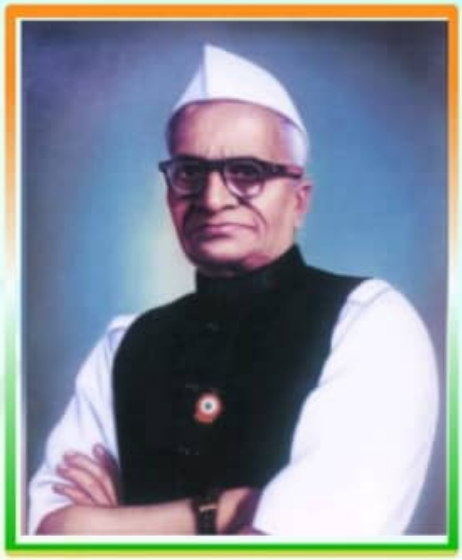

1*. पूरा नाम - नारायण सुब्बाराव हार्डिकर
2*. जन्म - 7 मई, 1889
3*. जन्म भूमि - धारवाड़ ज़िला, कर्नाटक
4*. मृत्यु - 26 अगस्त, 1975
5*. अभिभावक - पिता - सुब्बाराव
माता - यमुनाबाई
6*. नागरिकता - भारतीय
7*. आंदोलन - सविनय अवज्ञा आंदोलन,झण्डा सत्याग्रह
8*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता सेनानी
9*. धर्म - हिन्दू
10*. जेल यात्रा - 3 वर्षों तक जेल में रहे।
11*. मासिक पत्रिका - वालंटियर ,यंग इंडिया
12*. विद्यालय - 'मैचिंगन यूनिवर्सिटी', अमरीका
13*. पुरस्कार-उपाधि - 'पद्मभूषण'
14*. विशेष योगदान- भारत लौटने पर नारायण सुब्बाराव ने कर्नाटक में राष्ट्रीय भावनाओं के प्रचार के लिए अनेक संस्थाओं की स्थापना की। उनका सबसे महत्त्वपूर्ण काम 1923 में 'हिन्दुस्तान सेवादल' की स्थापना था। देश-भर में घूम कर हार्डिकर ने इस संस्था का विस्तार किया। 'हिन्दुस्तान सेवादल' का देश के। स्वतंत्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा था। इसके स्वयं सेवक हर संघर्ष में भाग लेते रहे। डॉ. नारायण सुब्बाराव हार्डिकर 1930 में गिरफ्तार कर लिए गए और सेवादल ग़ैर-क़ानूनी घोषित कर दिया गया। इसके बाद भी हर आंदोलन में नारायण सुब्बाराव जेलों में बंद किए गए।
15*. अन्य जानकारी - स्वतंत्रता के बाद नारायण सुब्बाराव हार्डिकर को 1952 में राज्य सभा का सदस्य चुना गया। 1962 तक वे इस पद पर बने रहे। उनकी जन्म शताब्दी मनाने के लिए, डाक विभाग ने 1989 में उनके सम्मान में एक स्मारक डाक टिकट जारी किया।

Scanned with OKEN Scanner

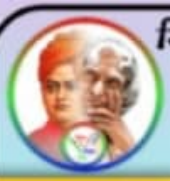

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 28 अगस्त,1975

बलिदान दिवस 07 जुलाई,1999

कैप्टन अनुज नैय्यर

1*. पूरा नाम - कैप्टन अनुज नैय्यर
2*. जन्म - 28 अगस्त, 1975
3*. जन्म भूमि - दिल्ली
4*. मृत्यु - 07 जुलाई,1999
5*. मृत्यु स्थान - कारगिल, जम्मू और कश्मीर
6*. मृत्यु का कारण - शहीद
7*. *. अभिभावक - माता- मीना नैय्यर
पिता- एस. के. नैय्यर
8*. सेना - भारतीय सेना
9*. रैंक - कैप्टन
10*. यूनिट - 17 जाट
11*. सेवा काल - 1997–1999
12*. युद्ध - कारगिल युद्ध, ऑपरेशन विजय
13*. सम्मान - महावीर चक्र, 1999
14*. नागरिकता - भारतीय
15*. विशेष योगदान - 06 जुलाई 1999 को चार्ली कंपनी को एक लक्ष्य पर कब्ज़ा करने का काम सौंपा गया था, जो मुश्कोह घाटी में प्वाइंट 4875 के पश्चिमी ढलानों पर पिंपल कॉम्प्लेक्स का एक हिस्सा था। हमले की शुरुआत में, कंपनी कमांडर घायल हो गया और कंपनी की कमान कैप्टन अनुज नैयर को सौंपी गई। कैप्टन नैयर ने भारी दुश्मन तोपखाने और मोर्टार फायर के बीच हमले में अपनी अग्रणी प्लाटून की कमान संभालना जारी रखा। जैसे-जैसे प्लाटून आगे बढ़ी, अग्रणी सेक्शन ने 3 से 4 दुश्मन के ठिकानों की जानकारी दी। कैप्टन नैयर पहले दुश्मन के ठिकाने की ओर आगे बढ़े और एक रॉकेट लॉन्चर दागा और उस पर ग्रेनेड फेंके। इसके बाद, कैप्टन नैयर के साथ सेक्शन ने शारीरिक रूप से हमला किया और स्थिति को साफ कर दिया। दुश्मन, जो अच्छी तरह से घिरा हुआ था, ने भारी मात्रा में स्वचालित गोलाबारी की। कैप्टन अनुज नैयर ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना अपने आदमियों को प्रेरित किया और दो और दुश्मन की स्थिति को साफ कर दिया। चौथी स्थिति को साफ करते समय दुश्मन के रॉकेट से चलने वाले ग्रेनेड ने अधिकारी को मारा और वह मौके पर ही शहीद हो गया। कैप्टन अनुज नैयर के नेतृत्व में इस कार्रवाई के परिणामस्वरूप नौ दुश्मन सैनिक मारे गए और दुश्मन की तीन मध्यम मशीन गन स्थितियाँ नष्ट हो गईं। थोड़े समय के झटके के बाद इस ऑपरेशन की सफलता काफी हद तक इस साहसी अधिकारी की उत्कृष्ट व्यक्तिगत बहादुरी और अनुकरणीय कनिष्ठ नेतृत्व के कारण थी। कैप्टन अनुज नैयर ने अदम्य संकल्प, धैर्य और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया।
16*. अन्य जानकारी - नैयर के पिता एस.के. नैयर को उनके बेटे की सेवाओं के सम्मान में भारत सरकार द्वारा दिल्ली में एक गैस स्टेशन आवंटित किया गया था।जाट रेजिमेंट के एक साथी सैनिक तेजबीर सिंह ने नैयर के सम्मान में अपने बेटे का नाम अनुज रखा।दिल्ली के जनकपुरी इलाके में स्कूल का नाम "शहीद कैप्टन अनुज नैय्यर सर्वोदय बाल विद्यालय" रखा गया।दिल्ली के जनकपुरी क्षेत्र में एक सड़क का नाम "कैप्टन अनुज नैयर मार्ग" रखा गया।

Scanned with OKEN Scanner

भारत के महान रत्न

जयंती - 02 अगस्त,1920

पुण्यतिथि 28 अगस्त,1992

भोजराज सिंह

561

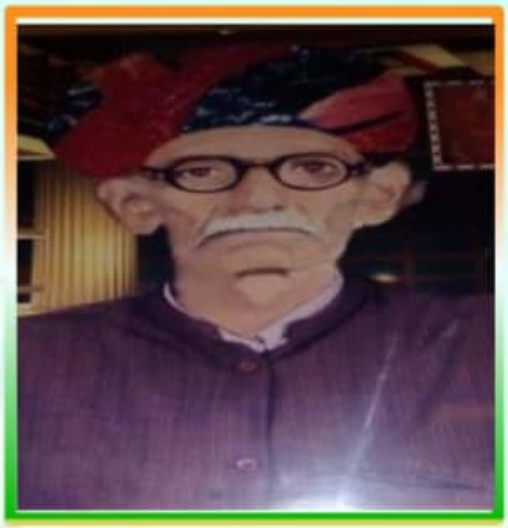

1*. पूरा नाम - भोजराज सिंह
2*. जन्म - 02 अगस्त,1920
3*. जन्म स्थान - ग्राम - भारिजा,दांतारामगढ़ तहसील, सीकर जिला, राजस्थान, भारत
4*. मृत्यु - 28 अगस्त,1992
5*. मृत्यु स्थान - ग्राम - भारिजा,दांतारामगढ़ तहसील, सीकर जिला, राजस्थान, भारत
6*. पिता - श्री उदय सिंह राजपूत
7*. नागरिकता - भारतीय
8*. पेशा - आजाद हिन्द फौज के सिपाही
9*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता सेनानी
10*. विशेष योगदान - स्वतंत्रता सेनानी भोजराज सिंह सन् 1941 में भारतीय सशस्त्र सेना में भर्ती होकर जापान गए। वहां सुभाष चंद्र बोस के भाषण में देश प्रेम के आव्हान पर आजाद हिंद फौज में शामिल हो गए और अंग्रेजों की फौज के विरुद्ध युद्ध करना प्रारंभ कर दिया। उन्होंने शाहनवाज खान के साथ युद्ध में रहकर विदेशी फौजों का मुकाबला देश को आजादी दिलाने के लिए किया। उनकी फौज को अंग्रेजों ने कैद कर लिया और इन्हें वहां रंगून से मुल्तान जेल में रखा गया और देश को आजादी मिलने पर ही रिहा हुए।
11*. अन्य जानकारी - भोजराज सिंह की वीरता पर देश की तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने स्वतंत्रता के 25वें दिवस पर ताम्रपत्र से सम्मानित किया था। इंडियन नेशनल आर्मी के ज्वाइंट सेक्रेट्री जगदेव सिंह ने 21 मार्च 1969 को भोजराज सिंह को स्वतंत्रता सेनानी के रूप में प्रमाण पत्र दिया गया।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 29 अगस्त,1905

पुण्यतिथि 03 दिसम्बर,1979

मेज़र ध्यानचंद

1*. पूरा नाम - मेजर ध्यानचन्द सिंह
2*. जन्म - 29 अगस्त, 1905
3*. जन्म भूमि - इलाहाबाद
4*. मृत्यु - 3 दिसंबर, 1979
5*. मृत्यु स्थान - नई दिल्ली
6*. अभिभावक - समेश्वर दत्त सिंह (पिता)
7*. कर्म भूमि - भारत
8*. खेल-क्षेत्र - हॉकी
9*. पुरस्कार-उपाधि - पद्म भूषण (1956)
10*. खेल परिचय - ध्यानचंद के बाल्य-जीवन में खिलाड़ीपन के कोई विशेष लक्षण दिखाई नहीं देते थे। इसलिए कहा जा सकता है कि हॉकी के खेल की प्रतिभा जन्मजात नहीं थी, बल्कि उन्होंने सतत साधना, अभ्यास, लगन, संघर्ष और संकल्प के सहारे यह प्रतिष्ठा अर्जित की थी। ध्यानचंद को फुटबॉल में पेले और क्रिकेट में ब्रैडमैन के समतुल्य माना जाता है। गेंद इस क़दर उनकी स्टिक से चिपकी रहती कि प्रतिद्वंद्वी खिलाड़ी को अक्सर आशंका होती कि वह जादुई स्टिक से खेल रहे हैं। यहाँ तक हॉलैंड में उनकी हॉकी स्टिक में चुंबक होने की आशंका में उनकी स्टिक तोड़ कर देखी गई। जापान में ध्यानचंद की हॉकी स्टिक से जिस तरह गेंद चिपकी रहती थी उसे देख कर उनकी हॉकी स्टिक में गोंद लगे होने की बात कही गई। ध्यानचंद की हॉकी की कलाकारी के जितने किस्से हैं उतने शायद ही दुनिया के किसी अन्य खिलाड़ी के बाबत सुने गए हों। उनकी हॉकी की कलाकारी देखकर हॉकी के मुरीद तो वाह - वाह कह ही उठते थे बल्कि प्रतिद्वंद्वी टीम के खिलाड़ी भी अपनी सुधबुध खोकर उनकी कलाकारी को देखने में मशगूल हो जाते थे। उनकी कलाकारी से मोहित होकर ही जर्मनी के रुडोल्फ हिटलर सरीखे जिद्दी सम्राट ने उन्हें जर्मनी के लिए खेलने की पेशकश कर दी थी। लेकिन ध्यानचंद ने हमेशा भारत के लिए खेलना ही सबसे बड़ा गौरव समझा। वियना में ध्यानचंद की चार हाथ में चार हॉकी स्टिक लिए एक मूर्ति लगाई और दिखाया कि ध्यानचंद कितने जबर्दस्त खिलाड़ी थे। सुनने में ये सभी घटनाएं भले अतिशयोक्तिपूर्ण लगे, लेकिन ये सभी बातें कभी हकीकत रही हैं।
11*. प्रसिद्धि - हॉकी का जादूगर
12*. विशेष योगदान - ओलम्पिक खेलों में भारत को लगातार तीन स्वर्ण पदक (1928, 1932 और 1936) दिलाने में मेजर ध्यानचन्द का अहम योगदान है।
13*. नागरिकता - भारतीय
14*. अन्य जानकारी - ध्यानचन्द के जन्मदिन (29 अगस्त) को भारत का 'राष्ट्रीय खेल दिवस' घोषित किया गया है।इसी दिन खेल में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार अर्जुन और द्रोणाचार्य पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। भारतीय ओलम्पिक संघ ने ध्यानचंद को शताब्दी का खिलाड़ी घोषित किया था।

Scanned with OKEN Scanner

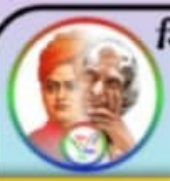

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

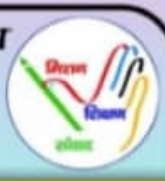

जयंती - 29 अगस्त,1887

पुण्यतिथि 07 नवम्बर,1978

जीवराज नारायण मेहता

562

1*. पूरा नाम - जीवराज नारायण मेहता
2*. जन्म - 29 अगस्त, 1887
3*. जन्म भूमि - बड़ौदा, गुजरात
4*. मृत्यु - 7 नवम्बर, 1978
5*. पत्नी - हंसा मेहता
6*. नागरिकता - भारतीय
7*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता सेनानी, चिकित्सक,राजनीतिज्ञ
8*. पार्टी - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
9*. पद - प्रथम मुख्यमंत्री, गुजरात
10*. कार्य काल - 1 मई, 1960 से 3 मार्च, 1962 तक,3 मार्च, 1962 से 19 सितंबर, 1963 तक
11*. विद्यालय - 'ग्रांट मेडिकल कॉलेज', मुम्बई
12*. जेल यात्रा - जीवराज मेहता ने 1930 के 'नमक सत्याग्रह' और 1942 के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में भाग लिया और जेल की सज़ा भोगी।
13*. प्रेरक प्रसंग - डॉ. जीवराज मेहता गांधी जी के निजी चिकित्सक और सहयोगी थे। गांधी जी के विचारों का उन पर गहरा असर था। एक बार वह गांधी जी के साथ बड़ौदा से इलाहाबाद पहुंचे। गांधी जी के आने की सूचना पहले से थी, इसलिए स्टेशन पर कार्यकर्ताओं की भारी भीड़ जमा थी। गांधी जी के हाथ ख़ाली थे, मगर मेहता जी के हाथ में एक अटैची थी। ट्रेन से उतरते ही एक कार्यकर्ता आगे बढ़ कर मेहता जी के हाथ से अटैची लेने लगा। मेहता जी ने उसे मना कर दिया। उसी समय मेहता जी की नजर एक अधेड़ महिला पर पड़ी, जिसकी गोद में एक छोटा बच्चा था। वह दूसरे हाथ से एक बक्सा संभाले हुई थी। उसे चलने में बहुत कठिनाई हो रही थी।मेहता जी भीड़ को धक्का देते हुए उस महिला के पास पहुंचे और बोले- "बहन, आप को बहुत दिक्कत हो रही है। यह बक्सा मुझे दे दो। मैं आपको स्टेशन के बाहर तक छोड़ देता हूँ।" वह महिला संकोच करने लगी। उसे असमंजस में देख कर मेहता जी ने कहा- "घबराओ नहीं। मैं कोई चोर-उचक्का नहीं हूँ। तुम्हारा सामान कहीं नहीं जाएगा।" महिला ने अपना बक्सा मेहता जी को पकड़ा दिया। तब तक दूसरे लोग भी वहाँ आ गए। एक कार्यकर्ता मेहता जी के हाथ से बक्सा लेने लगा तो वह बोले- "यह बहुत हल्का है। मुझे कोई परेशानी नहीं हो रही है। तुम लोग उसकी मदद करो, जिसको तुम्हारी मदद की ज़रूरत है। असहायों की सेवा करना ही हमारा कर्म और धर्म है।" सब मेहता जी के व्यवहार से बेहद प्रभावित हुए।
14*. विशेष - गाँधीजी को जब भी चिकित्सा परामर्श की आवश्कता होती तो सदा डॉक्टर जीवराज मेहता को ही याद किया जाता था।
15*. अन्य जानकारी - छात्र जीवन में जीवराज मेहता बड़े प्रतिभाशाली थे। मुंबई के 'ग्रांट मेडिकल कॉलेज' की पढ़ाई में उन्हें आठ में से सात विषयों में छात्रवृत्ति और पुरस्कार मिले थे। आठवें विषय का आधा पुरस्कार भी उन्हीं के हिस्से में आया था।नव स्थापित प्रथम डॉ. जीवराज मेहता पुरस्कार भी 4 फरवरी, 2015 को वरिष्ठ डॉ. जी.एस. सैनानी (मुंबई), डॉ. वी. मोहन (चेन्नई), डॉ. सिद्धार्थ शाह (मुंबई), डॉ. अशोक के. दास (पांडिचेरी) और डॉ. एस.के. शर्मा (एम्स, नई दिल्ली) को प्रदान किए गए।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 30 अगस्त,1888

पुण्यतिथि 10 नवम्बर,1908

कनाईलाल दत्त

1*. पूरा नाम - कनाईलाल दत्त
2*. जन्म - 30 अगस्त, 1888
3*. जन्म भूमि - हुगली ज़िला, बंगाल
4*. मृत्यु - 10 नवम्बर, 1908
5*. मृत्यु स्थान - कोलकाता
6*. मृत्यु कारण - फाँसी
7*. अभिभावक - चुन्नीलाल दत्त
8*. नागरिकता - भारतीय
9*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता सेनानी
10*. शिक्षा - स्नातक
11*. विद्यालय - हुगली कॉलेज
12*. विशेष योगदान - 1905 के 'बंगाल विभाजन' विरोधी आन्दोलन में कनाईलाल दत्त ने आगे बढ़कर भाग लिया। वे इस आन्दोलन के नेता सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के प्रमुख सहयोगी थे।
13*. अन्य जानकारी - भारत की आज़ादी के लिए फाँसी के फंदे पर झूलने वाले अमर शहीदों में से एक थे। उन्होंने 1905 में बंगाल के विभाजन का पूर्ण विरोध किया था। अपनी स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करके कनाईलाल कोलकाता आ गये थे और बारीन्द्र कुमार के दल में शामिल हो गए। 1908 में मुजफ़्फ़रपुर के अंग्रेज़ अधिकारी किंग्सफ़ोर्ड पर हमला किया गया था। इस हमले में कनाईलाल दत्त, अरविन्द घोष, बारीन्द्र कुमार आदि पकड़े गये। इनके दल का एक युवक नरेन गोस्वामी अंग्रेज़ों का सरकारी मुखबिर बन गया। क्रांतिकारियों ने इससे बदला लेने का निश्चय कर लिया था। अपना यह कार्य पूर्ण करने के बाद ही कनाईलाल पकड़े गए और उन्हें फाँसी दे दी गई। फाँसी के दिन जब जेल के कर्मचारी उन्हें लेने के लिए उनकी कोठरी में पहुँचे, उस समय कनाईलाल दत्त गहरी नींद में सोये हुए थे। मात्र बीस वर्ष की आयु में ही शहीद हो जाने वाले कनाईलाल दत्त की शहादत को भारत में कभी भुलाया नहीं जा सकेगा। कनाईलाल के फैसले में लिखा गया था कि इसे अपील करने की इजाजत नहीं होगी।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती -
11 दिसम्बर,1935

पुण्यतिथि
31 अगस्त,2020

प्रणब मुखर्जी

1*. पूरा नाम - प्रणब कुमार मुखर्जी
2*. अन्य नाम - प्रणब दा, दादा, पोल्टू
3*. जन्म - 11 दिसंबर, 1935
4*. जन्म भूमि - मिराटी(मिराती) गाँव,बीरभूम ज़िला,पश्चिम बंगाल
5*. मृत्यु - 31 अगस्त, 2020
6*. मृत्यु स्थान - दिल्ली
7*. अभिभावक - कामदा किंकर मुखर्जी
माता - राजलक्ष्मी मुखर्जी
8*. पत्नी - शुभ्रा मुखर्जी
9*. संतान - दो पुत्र- अभिजीत व इंद्रजीत और एक पुत्री शर्मिष्ठा
10*. नागरिकता - भारतीय
11*. पार्टी - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
12*. पद - भारत के 13वें राष्ट्रपति और पूर्व वित्त मंत्री
13*. कार्य काल - 25 जुलाई, 2012 से 25 जुलाई, 2017 तक
14*. शिक्षा - इतिहास और राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर, एलएलबी
15*. विद्यालय - कलकत्ता विश्वविद्यालय
16*. भाषा - हिन्दी, अंग्रेज़ी
17*. पुरस्कार-उपाधि - पद्म विभूषण, भारत रत्न (2019)
18*. विशेष - प्रणब मुखर्जी को कई प्रतिष्ठित और हाई प्रोफाइल मंत्रालय संभालने जैसी विशिष्टता प्राप्त है। उन्होंने रक्षा मंत्रालय, वित्त मंत्रालय, विदेश विषयक मंत्रालय, शिपिंग, राजस्व, नौवहन, यातायात, संचार, वाणिज्य और उद्योग, आर्थिक मामले जैसे लगभग सभी महत्त्वपूर्ण मंत्रालयों में अपनी सेवाएं दी हैं।
19*. अन्य जानकारी - भारत के तेरहवें राष्ट्रपति रह चुके हैं। 26 जनवरी 2019 को प्रणब मुखर्जी को भारत रत्न से सम्मानित किया गया। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं में से एक थे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेतृत्व वाले संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन ने उन्हें अपना उम्मीदवार घोषित किया। सीधे मुकाबले में उन्होंने अपने प्रतिपक्षी प्रत्याशी पी.ए. संगमा को हराया। उन्होंने 25 जुलाई 2012 को भारत के तेरहवें राष्ट्रपति के रूप में पद और गोपनीयता की शपथ ली। प्रणब मुखर्जी ने किताब 'द कोलिएशन ईयर्स: 1996 -2012' लिखा है।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 01 जनवरी,1919

पुण्यतिथि 02 सितम्बर,2000

श्रीकृष्ण सरल

563

1*. पूरा नाम - श्रीकृष्ण सरल
2*. जन्म - 01 जनवरी,1919
3*. जन्म स्थान - अशोकनगर, गुना, मध्य प्रदेश
4*. मृत्यु - 02 सितम्बर,2000
5*. मृत्यु स्थान - अशोक नगर, गुना, मध्यप्रदेश
6*. पिता - पं. भगवती प्रसाद बिरथरे
7*. माता - यमुनादेवी
8*. नागरिकता - भारतीय
9*. कार्य क्षेत्र - क्रांतिकारियों पर लेखन
10*. पद - शिक्षक
11*. आंदोलन - भारत छोड़ो आंदोलन
12*. प्रसिद्धि - कवि, स्वतंत्रता सेनानी
13*. पुरस्कार/उपाधि - भारत गौरव', 'राष्ट्र कवि', 'क्रांति-कवि', 'क्रांति-रत्न', 'अभिनव-भूषण', 'मानव-रत्न', 'श्रेष्ठ कला-आचार्य' आदि।
14*. विशेष - राष्ट्रकवि श्रीकृष्ण सरलजी ने अपने निजी व्यय से 10 से अधिक महाकाव्य, 4 खंड काव्य, 125 पुस्तकें, 45 काव्य खंड, 31 काव्य संकलन एवं 8 उपन्यासों का प्रकाशन करवाया। राष्ट्रकवि श्रीकृष्ण सरलजी ने अपने लेखन हेतु प्रामाणिक तथ्य संकलित करने के उद्देश्य से निजी व्यय से 10 देशों व लगभग 10 लाख किमी से अधिक की यात्राएं कीं।
15*. अन्य जानकारी - श्री कृष्ण सरल एक भारतीय कवि एवं लेखक थे। भारतीय क्रांतिकारियों पर उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखीं जिनमें पन्द्रह महाकाव्य हैं। सरल जी ने अपना सम्पूर्ण लेखन भारतीय क्रांतिकारियों पर ही किया है। उन्होने लेखन में कई विश्व कीर्तिमान स्थापित किए हैं। सर्वाधिक क्रांति-लेखन और सर्वाधिक महाकाव्य (पन्द्रह) लिखने का श्रेय सरलजी को ही जाता है। उनके द्वारा भारतीय सैनिकों की बलिदानी परमपराओं का स्मरण कराते राष्ट्रवादी काव्य के लिए उन्हें 'युग-चारण' भी कहा जाता है। उनके द्वारा रचित "मैं अमर शहीदों का चारण" हिंदी भाषा की एक लोकप्रिय कविता है। मध्य प्रदेश की साहित्य अकादमी द्वारा श्रीकृष्ण सरल के नाम पर कविता के लिए "श्रीकृष्ण सरल पुरस्कार" प्रति वर्ष प्रदान किया जाता है।

श्रीकृष्ण सरल जी के बारे में विद्वानों का कहना है-

1. 'श्री सरल जीवित शहीद हैं। उनकी साहित्य साधना तपस्या कोटि की है।' -महान क्रांतिकारी पं. परमानंद
2. 'सरलजी का लेखन ऐतिहासिक दस्तावेज से कम नहीं है। वह नेताजी सुभाष और आजाद हिन्द फौज का स्थायी स्मारक सिद्ध होगा।'-कर्नल जीएस ढिल्लन, आजाद हिन्द फौज
3. सरल साहब ने इतनी साहित्यिक ऊंचाई प्राप्त कर ली है कि उन्हें कोई भी अलंकरण छोटा ही पड़ेगा।'
-पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह
4. 4. 'सरलजी के लेखन का मूल्यांकन तो इतिहास ही कर सकेगा। हम तो केवल उनकी वंदना कर सकते हैं।'
-तत्कालीन सांसद शंकरदयाल सिंह
5. 'भारतवर्ष में शहीदों का समुचित श्राद्ध यदि किसी ने किया है, तो वह किया है कविवर श्रीकृष्ण सरल ने।'
-पं. बनारसीदास चतुर्वेदी

श्री कृष्ण सरल जी कहते हैं-

'पूजे न गए शहीद तो फिर आजादी कौन बचाएगा? फिर कौन मौत की छाया में जीवन के रास रचाएगा?'

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 04 सितम्बर,1825

पुण्यतिथि 30 जून,1917

दादा भाई नौरोजी

565

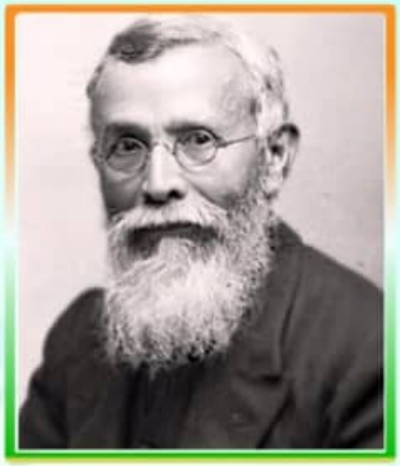

1*. पूरा नाम - दादा भाई नौरोजी
2*. जन्म - 4 सितम्बर, 1825
3*. जन्म भूमि - मुम्बई, महाराष्ट्र
4*. मृत्यु - 30 जून, 1917
5*. मृत्यु स्थान - मुम्बई, महाराष्ट्र
6*. जीवन साथी - गुलबाई देवी
7*. नागरिकता - भारतीय
8*. पार्टी - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
9*. विद्यालय - एलफिंस्टन इंस्टीटयूट
10*. भाषा - गुजराती भाषा, अंग्रेज़ी और हिन्दी
11*. रचना - पॉवर्टी ऐंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया 'राष्ट्रीय आंदोलन की बाइबिल'
12*. व्यवसाय - बौद्धिक, शिक्षक, व्यापारी कपास, और एक प्रारंभिक भारतीय राजनीतिक नेता
13*. प्रसिद्ध नाम - भारत के ग्रैंड ओल्ड मैन
14*. विशेष योगदान - दादाभाई नौरोजी ने 'ज्ञान प्रसारक मण्डली' नामक एक महिला हाई स्कूल एवं 1852 में 'बम्बई एसोसिएशन' की स्थापना की। लन्दन में रहते हुए दादाभाई ने 1866 ई. मे 'लन्दन इण्डियन एसोसिएशन' एवं 'ईस्ट इंडिया एसोसिएशन' की स्थापना की। वे राजनीतिक विचारों से काफ़ी उदार थे। ब्रिटिश शासन को वे भारतीयों के लिए दैवी वरदान मानते थे। 1906 ई. में उनकी अध्यक्षता में प्रथम बार कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में स्वराज्य की मांग की गयी। दादाभाई ने कहा "हम दया की भीख नहीं मांगते। हम केवल न्याय चाहते हैं। ब्रिटिश नागरिक के समान अधिकारों का ज़िक्र नहीं करते, हम स्वशासन चाहते है।"दादाभाई कितने प्रखर देशभक्त थे, इसका परिचय 1906 ई. की कोलकाता कांग्रेस में मिला। यहाँ उन्होंने पहली बार स्वराज शब्द का प्रयोग किया। उन्होंने कहा, हम कोई कृपा की भीख नहीं माँग रहे हैं। हमें तो न्याय चाहिए।
15*. अन्य जानकारी - दादा भाई नौरोजी को 'भारतीय राजनीति का पितामह' कहा जाता है। वह दिग्गज राजनेता, उद्योगपति, शिक्षाविद, विचारक और स्वतंत्रता सेनानी भी थे। दादाभाई नौरोजी का शैक्षिक पक्ष अत्यन्त उज्ज्वल रहा। 1845 में एल्फिन्स्टन कॉलेज में गणित के प्राध्यापक हुए। यहाँ के एक अंग्रेज़ी प्राध्यापक ने इन्हें 'भारत की आशा' की संज्ञा दी। अनेक संगठनों का निर्माण दादाभाई ने किया। 1851 में गुजराती भाषा में 'रस्त गफ्तार' साप्ताहिक निकालना प्रारम्भ किया। 1867 में 'ईस्ट इंडिया एसोसियेशन' बनाई। अन्यत्र लन्दन के विश्वविद्यालय में गुजराती के प्रोफेसर बने। 1869 में भारत वापस आए। यहाँ पर उनका 30,000 रु की थैली व सम्मान-पत्र से स्वागत हुआ। 1885 में 'बम्बई विधान परिषद' के सदस्य बने। 1886 में 'होलबार्न क्षेत्र' से पार्लियामेंट के लिए चुनाव लड़ा, लेकिन असफल रहे। 1886 में फिन्सबरी क्षेत्र से पार्लियामेंट के लिए निर्वाचित हुए। 'पावर्टी एण्ड अनब्रिटिश रूल इन इण्डिया' पुस्तक लिखी, जो अपने समय की महती कृति थी। 1886 व 1906 ई. में वह 'इंडियन नेशनल कांग्रेस' के अध्यक्ष बनाए गए।

Scanned with OKEN Scanner

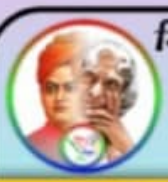

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 05 सितम्बर 1888

पुण्यतिथि 17 अप्रैल,1975

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

1*. पूरा नाम - डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन
2*. जन्म - 5 सितंबर, 1888
3*. जन्म भूमि - तिरूतनी, तमिलनाडु
4*. मृत्यु - 17 अप्रैल, 1975
5*. मृत्यु स्थान - चेन्नई, तमिलनाडु
6*. मृत्यु कारण - स्वास्थ्य ख़राब
7*. अभिभावक - पिता - सर्वपल्ली वीरास्वामी,
माता - सीताम्मा
8*. पत्नी - सिवाकामू
9*. संतान - पाँच पुत्र, एक पुत्री
10*. नागरिकता - भारतीय
11*. पार्टी - स्वतंत्र
12*. पद - भारत के दूसरे राष्ट्रपति
13*. कार्य काल - 13 मई, 1962 से 13 मई, 1967
14*. शिक्षा - एम.ए.
15*. विद्यालय - क्रिश्चियन मिशनरी संस्था लुथर्न मिशन स्कूल, मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज
16*. पेशा - राजनीतिज्ञ,प्रोफ़ेसर,कुलपति
17*. पुरस्कार-उपाधि - भारत रत्न (1954),टेम्पलटन पुरस्कार (1975
18*. अन्य जानकारी - हमारे देश में डॉक्टर राधाकृष्णन के जन्मदिन 5 सितंबर को प्रतिवर्ष 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इस दिन समस्त देश में भारत सरकार द्वारा श्रेष्ठ शिक्षकों को पुरस्कार प्रदान किया जाता है। डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन गैर राजनीतिक व्यक्ति होते हुए भी देश के राष्ट्रपति बने। इससे यह साबित होता है कि यदि व्यक्ति अपने क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ कार्य करे तो भी दूसरे क्षेत्र उसकी प्रतिभा से अप्रभावित नहीं रहते। डॉक्टर राधाकृष्णन बहुआयामी प्रतिभा के धनी होने के साथ ही देश की संस्कृति को प्यार करने वाले व्यक्ति थे। उन्हें एक बेहतरीन शिक्षक, दार्शनिक, देशभक्त और निष्पक्ष एवं कुशल राष्ट्रपति के रूप में यह देश सदैव याद रखेगा। राष्ट्रपति बनने के बाद कुछ शिष्य और प्रशंसक उनके पास गए और उन्होंने निवेदन किया था कि वे उनका जन्मदिन 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाना चाहते हैं। डॉक्टर राधाकृष्णन ने कहा, 'मेरा जन्मदिन 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाने के आपके निश्चय से मैं स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करूँगा।' तभी से 5 सितंबर देश भर में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जा रहा है।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 10 अप्रैल,1928

पुण्यतिथि 06 सितम्बर,2005

मेज़र धनसिंह थापा

1*. पूरा नाम - मेजर धन सिंह थापा
2*. जन्म - 10 अप्रैल, 1928
3*. जन्म भूमि- शिमला, हिमाचल प्रदेश
4*. मृत्यु - 6 सितम्बर, 2005 (आयु- 77)
5*. सेना - भारतीय थल सेना
6*. रैंक - मेजर, लेफ़्टिनेंट कर्नल
7*. यूनिट - 1/8 गोरखा राइफल्स
8*. सेवा काल - 1949-1975
9*. युद्ध - भारत-चीन युद्ध (1962)
10*. सम्मान - परमवीर चक्र
11*. नागरिकता - भारतीय
12*. विशेष - भारत द्वारा अधिकृत विवादित क्षेत्र में बढ़ते चीनी घुसपैठ के जवाब में भारत सरकार ने "फॉरवर्ड पॉलिसी" को लागू किया। योजना यह थी कि चीन के सामने कई छोटी-छोटी पोस्टों की स्थापना की जाए। चीन-भारतीय युद्ध अक्टूबर 1962 में शुरू हुआ; 21 अक्तूबर को, चीनी ने पैनगॉन्ग झील के उत्तर में सिरिजैप और यूल पर कब्ज़ा करने के उद्देश्य से घुसपैठ शुरू की थी। सिरिजैप 1, पांगॉन्ग झील के उत्तरी किनारे पर 8 गोरखा राइफल्स की प्रथम बटालियन द्वारा स्थापित एक पोस्ट थी जो मेजर धन सिंह थापा मगर जी की कमान में थी। जल्द ही यह पोस्ट चीनी सेनाओं द्वारा घेर लिया गया था। मेजर थापा मगर जी और उनके सैनिकों ने इस पोस्ट पर होने वाले तीन आक्रमणों को असफल कर दिया। श्री थापा मगर सहित बचे लोगों को युद्ध के कैदियों के रूप में कैद कर लिया गया था। अपने महान कृत्यों और अपने सैनिकों को युद्ध के दौरान प्रेरित करने के उनके प्रयासों के कारण उन्हें परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया।
13*. अन्य जानकारी - मेजर धनसिंह थापा शत्रु द्वारा बन्दी बना लिए गए थे। देश लौटकर दुबारा सेना में आने के बाद मेजर थापा अंतत: लेफ़्टिनेंट कर्नल के पद तक पहुँचे और पद मुक्त हुए। उसके बाद उन्होंने लखनऊ में सहारा एयर लाइंस के निदेशक का पद संभाला।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती -
07 सितम्बर,1963

पुण्यतिथि
05 सितम्बर,1986

नीरजा भनोट

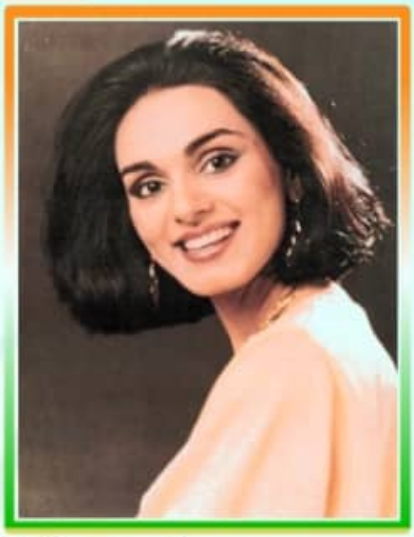

1*. पूरा नाम - नीरजा भनोट
2*. अन्य नाम - 'हिरोइन ऑफ हाईजैक'
3*. जन्म - 7 सितंबर, 1963
4* vजन्म भूमि - चंडीगढ़
5*. मृत्यु - 5 सितंबर, 1986
6*. मृत्यु स्थान - कराची, पाकिस्तान
7*. अभिभावक - हरीश भनोट (पिता)
माता - रमा भनोट
8*. कर्म भूमि - भारत
9*. कर्म-क्षेत्र - विमान परिचारिका (एयर होस्टेस)
10*. पुरस्कार-उपाधि - अशोक चक्र,पाकिस्तान की सरकार ने भी नीरजा को 'तमगा-ए-इन्सानियत' प्रदान किया।वर्ष 2005 में अमेरिका ने उन्हें 'जस्टिस फॉर क्राइम अवार्ड' दिया।
11*. नागरिकता - भारतीय
12*. अन्य जानकारी - नीरजा भनोट 5 सितंबर 1986 के पैन ऐम उड़ान 73 के अपहृत विमान में यात्रियों की सहायता एवं सुरक्षा करते हुए आतंकवादियों की गोलियों का शिकार हो गईं थीं।नीरजा वास्तव में स्वतंत्र भारत की महानतम वीरांगना थीं। आतंकियों से लगभग 400 यात्रियों की जान बचाते हुए उन्होंने अपना जीवन बलिदान कर दिया था। नीरजा भनोट 'अशोक चक्र' पाने वाली पहली महिला थीं। उनकी कहानी पर आधारित 2016 में एक फ़िल्म भी बनी, जिसमें उनका किरदार सोनम कपूर ने अदा किया था।नीरजा की समृति में मुम्बई के घाटकोपर इलाके में एक चौराहे का नामकरण किया गया है, जिसका उद्घाटन 90 के दशक में हिंदी फ़िल्मों के ख्यातिप्राप्त अभिनेता अमिताभ बच्चन ने किया। इसके अलावा उनकी स्मृति में एक संस्था 'नीरजा भनोट पैन ऍम न्यास' की स्थापना भी हुई है, जो उनकी वीरता को स्मरण करते हुए महिलाओं को अदम्य साहस और वीरता हेतु पुरस्कृत करती है। उनके परिजनों द्वारा स्थापित यह संस्था प्रतिवर्ष दो पुरस्कार प्रदान करती है, जिनमें से एक विमान कर्मचारियों को वैश्विक स्तर पर प्रदान किया जाता है और दूसरा भारत में महिलाओं को विभिन्न प्रकार के अन्याय और अत्याचार के खिलाफ़ आवाज़ उठाने और संघर्ष के लिये। प्रत्येक पुरास्कार की धनराशि 1,50,000 रुपये है और इसके साथ पुरस्कृत महिला को एक ट्रॉफी और स्मृतिपत्र दिया जाता है। महिला अत्याचार के खिलाफ़ आवाज़ उठाने के लिये प्रसिद्ध हुई राजस्थान की दलित महिला भंवरीबाई को भी यह पुरस्कार दिया गया था।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 09 सितम्बर,1974

बलिदान दिवस 07 जुलाई,1999

कैप्टन विक्रम बत्रा

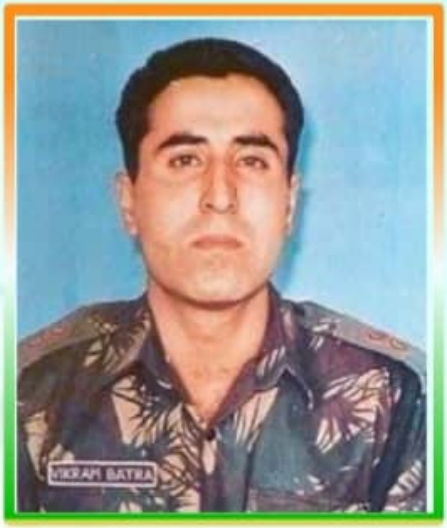

1*. पूरा नाम - कैप्टन विक्रम बत्रा
2*. प्रसिद्ध नाम - शेरशाह, कारगिल का शेर
3*. जन्म - 9 सितंबर, 1974
4*. जन्म भूमि - पालमपुर, हिमाचल प्रदेश
5*. मृत्यु - 07 जुलाई,1999
6*. मृत्यु स्थान - कारगिल, जम्मू और कश्मीर
7*. अभिभावक - पिता- जी. एल. बत्रा,
माता- कमलकांता बत्रा
8*. सेना - भारतीय थल सेना
9*. रैंक - कैप्टन
10*. यूनिट - 13 जे एंड के राइफ़ल
11*. सेवा काल -1996–1999
12*. युद्ध - कारगिल युद्ध
13*. शिक्षा - स्नातक (विज्ञान)
14*. विद्यालय - सेंट्रल स्कूल पालमपुर, डीएवी कॉलेज, चंडीगढ़
15*. सम्मान - परमवीर चक्र (1999 में मरणोपरांत)
16*. नागरिकता - भारतीय
17*. विशेष - कारगिल युद्ध में श्रीनगर-लेह मार्ग के ठीक ऊपर महत्वपूर्ण 5140 पॉइंट को पाक सेना से मुक्त कराया। बेहद दुर्गम क्षेत्र होने के बाद भी कैप्टन बत्रा ने 20 जून 1999 को सुबह तीन बजकर 30 मिनट पर इस चोटी को कब्जे में लिया। कैप्टन बत्रा ने जब रेडियो पर कहा- 'यह दिल मांगे मोर' तो पूरे देश में उनका नाम छा गया। इसके बाद 4875 पॉइंट पर कब्जे का मिशन शुरू हुआ। तब आमने-सामने की लड़ाई में पांच दुश्मन सैनिकों को मार गिराया। गंभीर जख्मी होने के बाद भी उन्होंने दुश्मन की ओर ग्रेनेड फेंके। इस ऑपरेशन में विक्रम शहीद हो गए, लेकिन भारतीय सेना को मुश्किल हालातों में जीत दिलाई।
18*. अन्य जानकारी - विक्रम बत्रा ने 18 वर्ष की आयु में ही अपने नेत्र दान करने का निर्णय ले लिया था। वह नेत्र बैंक के कार्ड को हमेशा अपने पास रखते थे।परमवीर चक्र पुरस्कार विजेता के रूप में, एक द्वीप का नाम विक्रम बत्रा के नाम पर बत्रा द्वीप रखा गया है । बत्रा सहित युद्ध के दिग्गजों के लिए एक स्मारक उनके अल्मा माटर डीएवी कॉलेज , चंडीगढ़ में सैनिकों की सेवाओं का सम्मान करते हुए खड़ा है। बाद में बत्रा की याद में गवर्नमेंट कॉलेज पालमपुर का नाम बदल दिया गया। कॉलेज का नाम बदलकर शहीद कैप्टन विक्रम बत्रा गवर्नमेंट कॉलेज, पालमपुर कर दिया गया।दिसंबर 2019 में बत्रा के सम्मान में नई दिल्ली के मुकरबा चौक और उसके फ्लाईओवर का नाम बदलकर "शहीद कैप्टन विक्रम बत्रा चौक" कर दिया गया।पालमपुर में शहीद कैप्टन विक्रम बत्रा स्टेडियम का नाम बत्रा के नाम पर रखा गया। 2003 में बनी हिंदी फ़िल्म, LOC: कारगिल , जो पूरे कारगिल संघर्ष पर आधारित थी , में अभिषेक बच्चन ने बत्रा की भूमिका निभाई थी। इसका निर्देशन जेपी दत्ता ने किया था।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 10 सितम्बर,1887

पुण्यतिथि 07 मार्च,1961

पं. गोविन्द वल्लभ पंत

1*. पूरा नाम - गोविंद बल्लभ पंत
2*. जन्म - 10 सितम्बर, 1887
3*. जन्म भूमि - अल्मोड़ा, उत्तराखंड
4*. मृत्यु - 7 मार्च, 1961
5*. अभिभावक - पिता - श्री मनोरथ पंत
माता - गोविन्दी बाई
6*. पत्नी - श्रीमती गंगा देवी
7*. नागरिकता - भारतीय
8*. पार्टी - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
9*. पद - उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री और भारत के गृहमंत्री
10*. कार्य काल - मुख्यमंत्री- 15 अगस्त 1947 से 27 मई 1954,
गृहमंत्री - 1955 - 1961
11*. शिक्षा - वकालत
12*. विद्यालय - 'म्योर सेण्ट्रल कॉलेज', इलाहाबाद
13*. भाषा - अंग्रेज़ी, संस्कृत
14*. स्वतंत्रता आन्दोलन - दिसम्बर १९२१ में वे गान्धी जी के आह्वान पर असहयोग आन्दोलन के रास्ते खुली राजनीति में उतर आये।९ अगस्त १९२५ को काकोरी काण्ड करके उत्तर प्रदेश के कुछ नवयुवकों ने सरकारी खजाना लूट लिया तो उनके मुकदमें की पैरवी के लिये अन्य वकीलों के साथ पन्त जी ने जी-जान से सहयोग किया। उस समय वे नैनीताल से स्वराज पार्टी के टिकट पर लेजिस्लेटिव कौन्सिल के सदस्य भी थे। १९२७ में राम प्रसाद 'बिस्मिल' व उनके तीन अन्य साथियों को फाँसी के फन्दे से बचाने के लिये उन्होंने पण्डित मदन मोहन मालवीय के साथ वायसराय को पत्र भी लिखा किन्तु गान्धी जी का समर्थन न मिल पाने से वे उस मिशन में कामयाब न हो सके। १९२८ के साइमन कमीशन के बहिष्कार और १९३० के नमक सत्याग्रह में भी उन्होंने भाग लिया और मई १९३० में देहरादून जेल की हवा भी खायी।
15*. पुरस्कार-उपाधि - भारत रत्न (1957)
16*. रचनाएँ - वरमाला, 'राजमुकुट' और 'अंगूर की बेटी'
17*. अन्य जानकारी - गोविन्द बल्लभ पंत का मुक़दमा लड़ने का ढंग निराला था, जो मुवक्किल अपने मुक़दमों के बारे में सही जानकारी नहीं देते थे, पंत जी उनका मुक़दमा नहीं लेते थे। काशीपुर में एक बार वे धोती, कुर्ता तथा गाँधी टोपी पहनकर कोर्ट चले गये। वहां अंग्रेज़ मजिस्ट्रेट ने आपत्ति की। गोविंद बल्लभ पंत के जीवन और योगदान ने भारत के इतिहास पर एक महत्वपूर्ण छाप छोड़ी है। स्वतंत्रता, सामाजिक सुधार और राष्ट्र-निर्माण के प्रति उनका समर्पण पीढ़ियों को प्रेरित करता है और एक प्रगतिशील और एकजुट भारत के लिए उनके दृष्टिकोण के प्रमाण के रूप में खड़ा है।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 07 दिसम्बर,1879

बलिदान दिवस 10 सितम्बर,1915

जतीन्द्रनाथ मुखर्जी

1*. पूरा नाम - जतीन्द्रनाथ मुखर्जी
2*. अन्य नाम - जतीन्द्रनाथ मुखोपाध्याय (बचपन में)
3*. जन्म - 7 दिसम्बर, 1879
4*. जन्म भूमि - नदिया-कुष्टिया, बंगाल, ब्रिटिश भारत
5*. मृत्यु - 10 सितम्बर, 1915
6*. मृत्यु स्थान - बालासोर, बंगाल, ब्रिटिश भारत
7*. माता-पिता:- उमेश्चन्द्र मुखर्जी, शरत शशि
8*. नागरिकता - भारतीय
9*. संगठन - युगांतर पार्टी
10*. प्रसिद्धि - क्रांतिकारी
11*. आंदोलन - भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन
12*. विशेष - क्रांतिकारियों के पास आन्दोलन के लिए धन जुटाने का प्रमुख साधन डकैती था।दुलरिया नामक स्थान पर भीषण डकैती के दौरान अपने ही दल के एक सहयोगी की गोली से क्रांतिकारी अमृत सरकार घायल हो गए। विकट समस्या यह खड़ी हो गयी कि धन लेकर भागें या साथी के प्राणों की रक्षा करें! अमृत सरकार ने जतीन्द्रनाथ से कहा कि धन लेकर भाग जाओ, तुम मेरी चिंता मत करो, लेकिन इस कार्य के लिए जतीन्द्रनाथ तैयार न हुए तो अमृत सरकार ने आदेश दिया- "मेरा सिर काटकर ले जाओ, जिससे कि अंग्रेज़ पहचान न सकें।" इन डकैतियों में 'गार्डन रीच' की डकैती बड़ी मशहूर मानी जाती है। इसके नेता जतीन्द्रनाथ मुखर्जी ही थे। इसी समय में विश्वयुद्ध प्रारंभ हो चुका था। कलकत्ता में उन दिनों 'राडा कम्पनी' बंदूक-कारतूस का व्यापार करती थी। इस कम्पनी की एक गाडी रास्ते से गायब कर दी गयी थी, जिसमें क्रांतिकारियों को 52 मौजर पिस्तौलें और 50 हज़ार गोलियाँ प्राप्त हुई थीं। ब्रिटिश सरकार हो ज्ञात हो चुका था कि 'बलिया घाट' तथा 'गार्डन रीच' की डकैतियों में जतीन्द्रनाथ का ही हाथ है।
13*. अन्य जानकारी - 27 वर्ष की आयु में एक बार जंगल से गुज़रते हुए जतीन्द्रनाथ मुखर्जी की मुठभेड़ एक बाघ से हो गयी थी। उन्होंने बाघ को अपने हंसिये से मार गिराया। इस घटना के बाद से ही जतीन्द्रनाथ 'बाघा जतीन' के नाम से विख्यात हो गए थे।एक प्रसिद्ध फ्रांसीसी दार्शनिक रेमंड एरन ने पाया कि "जतिंद्र 'कार्यशील विचारक' का प्रतीक हैं जो आधुनिक इतिहास में 'लापता कड़ी' प्रदान करते हैं।" अमेरिकी प्रचारक रॉस हेडविसेक ने कहा, "अगर ईवी वोस्का (चेक जासूस जिसने भारत-जर्मनी साजिश को उजागर किया) ने इस इतिहास में हस्तक्षेप नहीं किया होता, तो आज महात्मा गांधी के बारे में कोई नहीं जानता और भारतीय राष्ट्र के पिता बाघा जतिन होते।" जतिंद्र की योजना इतनी भव्य थी कि अगर यह सफल हो जाती, तो संभवतः इसने एक नई विश्व व्यवस्था स्थापित की होती और प्रथम विश्व युद्ध की दिशा बदल दी होती और इसके साथ ही, ब्रिटिश साम्राज्य का भाग्य लगभग तीस साल पहले ही तय हो गया होता। जतिंद्र के इस साहसिक कदम की तारीफ़ किसी और ने नहीं बल्कि उनके मुख्य शिकारी चार्ल्स टेगार्ट ने की, जो कलकत्ता के कुख्यात पुलिस कमिश्नर थे। उन्होंने कहा कि अगर यह व्यक्ति (जतिंद्र) इंग्लैंड में पैदा हुआ होता, तो उसकी मूर्ति ट्राफलगर स्क्वायर में नेल्सन के बगल में लगाई जाती। महात्मा गांधी ने 1925 में उन्हें "दिव्य पुरुष" कहा था।
एक प्रसिद्ध फ्रांसीसी दार्शनिक रेमंड एरन ने पाया कि "जतिंद्र 'कार्यशील विचारक' का प्रतीक हैं जो आधुनिक इतिहास में 'लापता कड़ी' प्रदान करते हैं।" अमेरिकी प्रचारक रॉस हेडविसेक ने कहा, "अगर ईवी वोस्का (चेक जासूस जिसने भारत-जर्मनी साजिश को उजागर किया) ने इस इतिहास में हस्तक्षेप नहीं किया होता, तो आज महात्मा गांधी के बारे में कोई नहीं जानता और भारतीय राष्ट्र के पिता बाघा जतिन होते।" जतिंद्र की योजना इतनी भव्य थी कि अगर यह सफल हो जाती, तो संभवतः इसने एक नई विश्व व्यवस्था स्थापित की होती और प्रथम विश्व युद्ध की दिशा बदल दी होती और इसके साथ ही, ब्रिटिश साम्राज्य का भाग्य लगभग तीस साल पहले ही तय हो गया होता। जतिंद्र के इस साहसिक कदम की तारीफ़ किसी और ने नहीं बल्कि उनके मुख्य शिकारी चार्ल्स टेगार्ट ने की, जो कलकत्ता के कुख्यात पुलिस कमिश्नर थे। उन्होंने कहा कि अगर यह व्यक्ति (जतिंद्र) इंग्लैंड में पैदा हुआ होता, तो उसकी मूर्ति ट्राफलगर स्क्वायर में नेल्सन के बगल में लगाई जाती। महात्मा गांधी ने 1925 में उन्हें "दिव्य पुरुष" कहा था।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 11 सितम्बर,1895

पुण्यतिथि 15 नवम्बर,1982

विनोबा भावे

1*. पूरा नाम - विनायक नरहरि भावे
2*. जन्म - 11 सितंबर, 1895
3*. जन्म भूमि - गाहोदे, गुजरात, भारत
4*. मृत्यु - 15 नवम्बर, 1982
5*. मृत्यु स्थान - वर्धा, महाराष्ट्र
6*. अभिभावक - पिता - नरहरि भावे
माता - रूक्मिणी बाई
7*. कर्म भूमि - भारत
8*. कर्म-क्षेत्र - स्वतंत्रता सेनानी, विचारक, समाज सुधारक
9*. भाषा - मराठी, संस्कृत, हिंदी, अरबी, फ़ारसी, गुजराती, बंगला, अंग्रेज़ी, फ्रेंच आदि।
10*. पुरस्कार-उपाधि - भारत रत्न (1983), प्रथम रेमन मैग्सेसे पुरस्कार
11*. आंदोलन - भूदान आंदोलन
12*. नागरिकता - भारतीय
13*. विशेष योगदान - भूदान आंदोलन संत बिनोवा भावे ने किया था जोकि महात्मा गांधी के विचारों से बहुत प्रभावित थे और गांधी जी से प्रेरणा लेकर उन्होंने ऐसा किया। मुख्य कड़ी भूदान आन्दोलन सन्त विनोबा भावे द्वारा सन् 1951 में आरम्भ किया गया स्वैच्छिक भूमि सुधार आन्दोलन था। विनोबा की कोशिश थी कि भूमि का पुनर्वितरण सिर्फ सरकारी कानूनों के जरिए नहीं हो, बल्कि एक आंदोलन के माध्यम से इसकी सफल कोशिश की जाए। 20वीं सदी के पचासवें दशक में भूदान आंदोलन को सफल बनाने के लिए विनोबा ने गांधीवादी विचारों पर चलते हुए रचनात्मक कार्यों और ट्रस्टीशिप जैसे विचारों को प्रयोग में लाया। उन्होंने सर्वोदय समाज की स्थापना की। यह रचनात्मक कार्यकर्ताओं का अखिल भारतीय संघ था। इसका उद्देश्य अहिंसात्मक तरीके से देश में सामाजिक परिवर्तन लाना था।
14*. स्वतंत्रता सेनानी - रचनात्मक कार्यों के अतिरिक्त वे महान स्वतंत्रता सेनानी भी थे। नागपुर झंडा सत्याग्रह में वे बंदी बनाये गये। १९३७ में गान्धिजी जब लंदन की गोलमेज कांफ्रेंस से खाली हाथ लोटे तो जलगांव में विनोबा भावे ने एक सभा में अंग्रेजों की आलोचना की तो उन्हें बंदी बनाकर छह माह की सजा दी गयी। कारागार से मुक्त होने के बाद गान्धीजी ने उन्हें पहेला सत्याग्रही बनाया। १७ अक्टूबर १९४० को विनोबा भावेजी ने सत्याग्रह किया और वे बंदी बनाये गये तथा उन्हें ३ वर्ष के लिए सश्रम कारावास का दंड मिला। गांधीजी ने १९४२ को भारत छोडा आंदोलन करने से पूर्व विनोबाजी से परामर्श लिया था।
15*. अन्य जानकारी - इन्हें 'भारत का राष्ट्रीय अध्यापक' और महात्मा गांधी का 'आध्यात्मिक उत्तराधिकारी' समझा जाता है।

Scanned with OKEN Scanner

भारत के महान रत्न

जयंती - 12 सितम्बर,1883

पुण्यतिथि 17 अक्टूबर,1939

जोरावर सिंह बारहठ

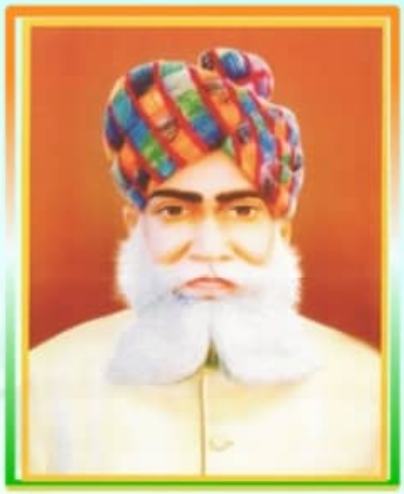

1*. पूरा नाम - ठाकुर जोरावर सिंह बारहठ
2*. अन्य नाम - साधु अमरदास बैरागी
3*. जन्म - 12 सितम्बर, 1883
4*. जन्म स्थान - देवपुरा, शाहपुरा, भीलवाड़ा
5*. मृत्यु - 17 अक्टूबर,1939
6*. मृत्यु स्थान - एकलगढ़, सीतामऊ स्टेट
7*. पिता - ठाकुर कृष्ण सिंह बारहठ
8*. रिश्तेदार - ठाकुर केसरी सिंह बारहठ (भाई),
कुँवर प्रताप सिंह बारहठ (भतीजा)
9*. जीवनसाथी - अनूप कंवर
10*. प्रसिद्धि - लॉर्ड हार्डिंग पर बम विस्फोट (दिल्ली षडयंत्र केस)
11*. आंदोलन - भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन
12*. आपराधिक दंड - मौत की सज़ा
13*. नागरिकता - भारतीय
14*. विशेष - देश की स्वतंत्रता के लिए धन जुटाने के उद्देश्य से की गयी आरा (बिहार) के निमाज के महन्त की हत्या और लूट में जोरावर भी सम्मिलित थे। रासबिहारी बोस ने लार्ड हार्डिंग्ज बम कांड की योजना को मूर्तरूप देने के लिए जोरावरसिंह और प्रतापसिंह को बम फेंकने की जिम्मेदारी सौंपी। 23 दिसंबर, 1912 को वायसराय लार्ड हार्डिंग्ज का जुलूस दिल्ली के चांदनी चौक से गुजर रहा था। भारी सुरक्षा के बीच वायसराय हाथी पर सवार था। चांदनी चौक स्थित पंजाब नेशनल बैंक भवन की छत पर भीड़ में जोरावर सिंह और प्रतापसिंह और बसन्त कुमार विश्वास (बंगाल) थे। जैसे ही जुलूस सामने से गुजरा, जोरावरसिंह ने हार्डिंग्ज पर बम फेंका, लेकिन पास खड़ी महिला के हाथ से टकरा जाने से निशाना चूक गया और हार्डिंग्ज बच गया। छत्ररक्षक महावीर सिंह मारा गया।
15*. अन्य जानकारी - 1974 से, हर 23 दिसंबर को बारहठ परिवार की याद में एक उत्सव मनाया जाता है, जो हार्डिंग पर हमले की सालगिरह है। उनके गृहनगर शाहपुरा में एक मेले का आयोजन किया जाता है और यह कार्यक्रम शहीद त्रिमूर्ति स्मारक पर होता है, जहाँ ठाकुर केसरी सिंह, ठाकुर ज़ोरावर सिंह और कुंवर प्रताप सिंह की मूर्तियाँ हैं।भीलवाड़ा के शाहपुरा में स्थित "स्वर्गीय श्री केसरी सिंह बारहठ की हवेली" राजस्थान सरकार के अधीन एक राज्य संरक्षित स्मारक है । यह अब एक राष्ट्रीय संग्रहालय है, जिसमें परिवार के अस्त्र-शस्त्र प्रदर्शित हैं। जनवरी 2019 में तीनों बारहठ क्रांतिकारियों का चित्र दिल्ली विधानसभा की गैलरी में रखा गया है।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 13 सितम्बर,1926

पुण्यतिथि ** सितम्बर,2010

नगेन्द्र बाला

566

1*. पूरा नाम - नगेन्द्र बाला
2*. जन्म - 13 सितम्बर, 1926
3*. जन्म स्थान - कोटा, राजस्थान
4*. मृत्यु - सितम्बर, 2010
5*. मृत्यु स्थान - कोटा, राजस्थान
6*. पिता - श्री रणजीत सिंह
7*. पौत्री - केसरी सिंह बारहठ
8*. भतीजी - प्रताप सिंह बारहठ
9*. जीवन साथी - श्री अमर सिंह देपावत
10*. शिक्षा - व्यावसायिक शिक्षा (विशारद), भारतेन्द्र समिति, कोटा
11*. नागरिकता भारतीय
12*. राजनीतिक पद - सदस्य, कांग्रेस सेवा दल,सदस्य, युवक कांग्रेस
13*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता सेनानी
14*. धर्म - हिन्दू
15*. विशेष- उनकी शुरू से ही जनसेवा, राजनीति और महिला उत्थान जैसे कार्यों में विशेष रुचि रही थी स्वाधीनता संग्राम में सहभागिता वर्ष 1942 के स्वाधीनता आंदोलन में नगेन्द्र बाला ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के निधन पर वे दिल्ली से अस्थि कलश लेकर कोटा आईं और चम्बल नदी में उनकी अस्थियां विसर्जित की।
16*. अन्य जानकारी - भारत की प्रसिद्ध महिला स्वतंत्रता सेनानी थीं। वे देश में ज़िला प्रमुख बनने वाली प्रथम महिला थीं। वे दो बार विधायक के पद पर भी रहीं। उन्होंने 1941 से 1945 तक किसान आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। नगेन्द्र बाला राजस्थान के हाड़ौती क्षेत्र की पहली महिला थीं, जिन्होंने महिलाओं में राष्ट्रीय चेतना का प्रसार किया। वह सदैव महिला कल्याण कार्यों से जुड़ी रहीं।नगेन्द्र बाला ने कोटा में 'करणी नगर विकास समिति' की स्थापना भी की तथा समिति के भवन के लिए अपने परिवार की जमीन उपलब्ध कराई।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 17 सितम्बर,1872

पुण्यतिथि 21 अगस्त,1948

वामनराव बलिराम लाखे

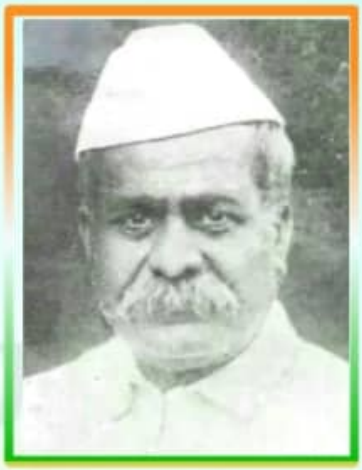

1*. पूरा नाम - वामनराव बलिराम लाखे
2*. जन्म - 17 सितम्बर, 1872
3*. जन्म स्थान - रायपुर, छत्तीसगढ़
4*. मृत्यु - 21 अगस्त, 1948
5*. अभिभावक - पण्डित बलीराव गोविंदराव लाखे
6*. पत्नी - जानकी बाई
7*. नागरिकता - भारतीय
8*. पत्रिका - छत्तीसगढ़ मित्र
9*. सम्मान / उपाधि - रायसाहब
10*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता सेनानी
11*. धर्म - हिन्दू
12*. जेल यात्रा - वामनराव बलिराम लाखे ने जब एक सभा में 'अंग्रेज़ी शासन को गुण्डों का राज्य' कहा तो उन्हें गिरफ़्तारकर लिया गया और उन्हें एक साल की सज़ा तथा 3000 रुपये जुर्माना हुआ। 1941 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में लाखे जी को सिमगा में सत्याग्रह करते हुए गिरफ़्तार किया गया और चार महीनों की सजा दी गई। उन्हें नागपुर जेल में रखा गया था। उस वक्त लाखे जी 70 वर्ष के थे। छ: साल बाद जब आज़ादी मिली तो 15 अगस्त को रायपुर के गाँधी चौक में वामनराव बलिराम लाखे ने तिरंगा झंडा फरहाया।
13*. विशेष योगदान - आपने रायपुर में 'ए.वी.एम. स्कूल' की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसे बाद में इनकी मृत्यु के पश्चात् नाम बदलकर 'श्री वामनराव लाखे उच्चतर माध्यमिक शाला' कर दिया गया। 1922 में वामनराव लाखे 'रायपुर ज़िला कांग्रेस' के अध्यक्ष निर्वाचित हुए थे। इसी समय में उन्होंने नियमित खादी वस्त्र पहनने तथा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का संकल्प लिया।
14*. अन्य जानकारी - वामनराव बलिराम लाखे भारत की आज़ादी के लिए संघर्ष करने वाले छत्तीसगढ़ राज्य के स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थे। 1913 में लाखे जी ने अपना कार्य क्षेत्र सहकारी आंदोलन को बनाया था, जिससे वे जीवन पर्यन्त जुड़े रहे। सहकारिता आंदोलन के द्वारा दु:खी और शोषित किसानों की सेवा तथा सहयोग करना उनका प्रमुख उद्देश्य था। सन 1915 में रायपुर में 'होमरूल लीग' की स्थापना की गई थी। वामनराव बलिराम लाखे जी उसके संस्थापक थे। छत्तीसगढ़ में शुरू में जो राजनीतिक चेतना फैली, उसमें लाखे जी का बहुत बड़ा योगदान था। उन्होंने अपना सारा जीवन राष्ट्रीय आन्दोलन और सहकारी संगठन में बिताया।

Scanned with OKEN Scanner

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 12 जनवरी, 1869

पुण्यतिथि 18 सितम्बर, 1972

डॉ. भगवान दास

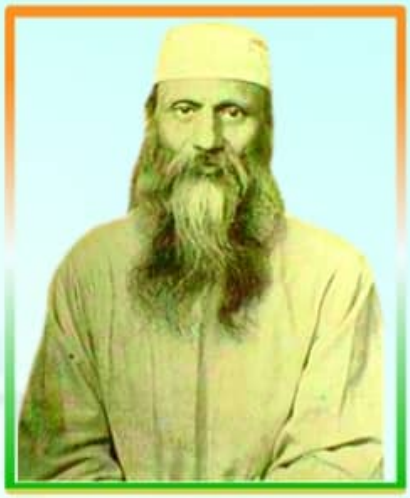

1*. पूरा नाम - डॉ. भगवान दास
2*. जन्म - 12 जनवरी, 1869
3*. जन्म भूमि - वाराणसी
4*. मृत्यु - 18 सितम्बर, 1972
5*. अभिभावक - श्री साह माधव दास
6*. नागरिकता - भारतीय
7*. प्रसिद्धि - स्वतन्त्रता सेनानी, क्रान्तिकारी, लेखक, शिक्षा विशेषज्ञ
8*. शिक्षा - एम.ए (दर्शन शास्त्र)
9*. विद्यालय - क्वींस कॉलेज वाराणसी
10*. भाषा - हिन्दी, अरबी, उर्दू, संस्कृत, फ़ारसी आदि।
11*. पुरस्कार-उपाधि - भारत रत्न (1955)
12*. कृतियाँ - डॉ. भगवान दास ने कई पुस्तकों और प्रकाशनों का लेखन और सह-लेखन किया, जिनमें "सनातन धर्म: हिंदू धर्म और नैतिकता की एक उन्नत पाठ्यपुस्तक", "भगवद गीता", "स्वराज की एक रूपरेखा योजना", "सभी धर्मों की आवश्यक एकता", "आधुनिक समस्याओं के लिए प्राचीन समाधान" और "आधुनिक समाजों का सामाजिक पुनर्निर्माण" शामिल हैं।
13*. जेल यात्रा - डॉ.भगवान दास ने देश के प्रति अपने कर्त्तव्यों को भी उसी भाव से निभाया। 1921 के 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' में भाग लेने पर वह गिरफ्तार होकर जेल गये। इसके बाद 'असहयोग आन्दोलन' में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाये।
14*. विशेष योगदान - डॉ. भगवान दास का योगदान जितना भारतीय शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ और विकसित करने में मानाजाता है, उतना ही योगदान देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण माना जाता है, और जितना योगदान देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण माना जाता है, उतना ही योगदान भारतीय दर्शन और धर्मशास्त्र को विश्वस्तर पर प्रतिष्ठित करने में माना जाता है। 'वसुदैव कुटंबकम' अर्थात् 'सारा विश्व एक ही परिवार है' की भावना रखने वाले डॉ. भगवान दास ने सम्पूर्ण विश्व के दर्शन और धर्म को प्राचीन और सामयिक परिस्थितियों के अनुरूप एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया।डॉक्टर भगवान दास एनी बेसेन्ट के साथ व्यवसायी सहयोग किया, जो बाद मे सेन्ट्रल हिन्दू कालेज की स्थापना का प्रमुख कारण बना। सेन्ट्रल हिन्दू कालेज, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना का मूल है। बाद मे उन्होंने काशी विद्यापीठ की स्थापना की और वहाँ वे प्रमुख अध्यापक एवं कुलपति भी रहे। सन् 1921 के हिन्दी साहित्य सम्मेलन के वे अध्यक्ष थे।
15*. अन्य जानकारी - सन् 1947 में जब देश स्वतंत्र हुआ, तब डॉ. भगवान दास की देशसेवा और विद्वत्ता को देखते हुए उनसे सरकार में महत्त्वपूर्ण पद संभालने का अनुरोध किया गया, किंतु प्रबल गाँधीवादी विचारों के डॉ. भगवान दास ने विनयपूर्वक अस्वीकार कर दर्शन, धर्म और शिक्षा के क्षेत्र को ही प्राथमिकता दी और वह आजीवन इसी क्षेत्र में सक्रिय रहे।आपको 1929 में बीएचयू और 1937 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा मानद डॉक्टरेट की उपाधि भी प्रदान की गई थी।आपने संस्कृत भाषा को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 22 दिसम्बर,1924

बलिदान दिवस 20 सितम्बर,1942

कनकलता बरूआ

1*. पूरा नाम - कनकलता बरुआ
2*. जन्म - 22 दिसंबर, 1924
3*. जन्म भूमि - बोरांगबारी,गोहपुर,दर्रांग असम
4*. मृत्यु - 20 सितम्बर, 1942
5*. मृत्यु स्थान - बोरांगबारी,गोहपुर,दर्रांग, असम
6*. अभिभावक - पिता - श्री कृष्णकांत बरूआ
माता - श्रीमती कर्णेश्वरी देवी
7*. नागरिकता - भारतीय
8*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता सेनानी
9*. आंदोलन - भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन
10*. कर्मभूमि - भारत
11*. विशेष - मई, 1931 में गमेरी गाँव में रैयत सभा आयोजित की गई थी। उस समय कनकलता केवल सात वर्ष की थीं। फिर भी सभा में अपने मामा देवेन्द्रनाथ और यदुराम बोस के साथ भाग लिया।कनकलता बरुआ भारत की ऐसी शहीद पुत्री थीं, जो भारतीय वीरांगनाओं की लंबी कतार में जा मिलीं। मात्र 18 वर्षीय कनकलता अन्य बलिदानी वीरांगनाओं से उम्र में छोटी भले ही रही हों, लेकिन त्याग व बलिदान में उनका कद किसी से कम नहीं। एक गुप्त सभा में 20 सितंबर, 1942 ई. को तेजपुर की कचहरी पर तिरंगा झंडा फहराने का निर्णय लिया गया था। तिरंगा फहराने आई हुई भीड़ पर गोलियाँ दागी गईं और यहीं पर कनकलता बरुआ ने शहादत पाई। शहीद मुकंद काकोती के शव का तेजपुर नगरपालिका के कर्मचारियों ने गुप्त रूप से दाह संस्कार कर दिया था, किंतु कनकलता का शव स्वतंत्रता सेनानी कंधों पर उठाकर ले जाने में सफल रहे।
12*. अन्य जानकारी - कनकलता बरुआ की कहानी दृढ़ता, दृढ़ संकल्प और स्वतंत्रता की अमर भावना की कहानी है। उनका बलिदान भारत स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अंकित है, जो आने वाली स्वतंत्रता संग्राम के लिए प्रेरणा है। बांरगबाड़ी में स्थापित कनकलता मॉडल गर्ल्स हाईस्कूल जो कनकलता के आत्म–बलिदान की स्मृति में बनाया गया है, आज भी यह भवन स्वतंत्रता की रक्षा करने की प्रेरणा दे रहा है।उनकी कहानी को चंद्र मुदोई द्वारा निर्देशित फिल्म एपहा फुलहिल एपाह ज़ोरिल में फिर से बताया गया है। व्यापक दर्शकों तक के लिए फिल्म का हिंदी संस्करण, जिसका शीर्षक पूरब की आवाज़ थी, भी जारी किया गया।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
23 सितम्बर,1908

पुण्यतिथि
22 अप्रैल,1974

रामधारी सिंह दिनकर

1*. पूरा नाम - रामधारी सिंह दिनकर
2*. अन्य नाम - दिनकर
3*. जन्म - 23 सितंबर, 1908
4*. जन्म भूमि - सिमरिया, मुंगेर, बिहार
5*. मृत्यु - 24 अप्रैल, 1974
6*. मृत्यु स्थान - चेन्नई, तमिलनाडु
7*. अभिभावक - पिता - श्री रवि सिंह
माता - श्रीमती मनरूप देवी
8*. कर्म भूमि - पटना, भारत
9*. कर्म-क्षेत्र - कवि, लेखक
10*. मुख्य रचनाएँ - रश्मिरथी, उर्वशी, कुरुक्षेत्र, संस्कृति के चार अध्याय, परशुराम की प्रतीक्षा, हुंकार, हाहाकार, चक्रव्यूह, आत्मजयी, वाजश्रवा के बहाने आदि।
11*. विषय - कविता, खंडकाव्य, निबंध, समीक्षा
12*. भाषा - हिन्दी
13*. विद्यालय - राष्ट्रीय मिडिल स्कूल, मोकामाघाट हाई स्कूल, पटना विश्वविद्यालय
14*. पुरस्कार-उपाधि - 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार', 'साहित्य अकादमी पुरस्कार', 'पद्म भूषण'
15*. प्रसिद्धि - राष्ट्रकवि
16*. नागरिकता - भारतीय
17*. विशेष - 1952 में जब भारत की प्रथम संसद का निर्माण हुआ, तो उन्हें राज्यसभा का सदस्य चुना गया और वह दिल्ली आ गए। दिनकर 12 वर्ष तक संसद-सदस्य रहे, बाद में उन्हें सन् 1964 से 1965 ई. तक 'भागलपुर विश्वविद्यालय' का कुलपति नियुक्त किया गया। लेकिन अगले ही वर्ष भारत सरकार ने उन्हें 1965 से 1971 ई. तक अपना 'हिन्दी सलाहकार' नियुक्त किया।
18*. अन्य जानकारी - 'राष्ट्रकवि दिनकर' आधुनिक युग के श्रेष्ठ वीर रस के कवि के रूप में स्थापित हैं। उनको राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत, क्रांतिपूर्ण संघर्ष की प्रेरणा देने वाली ओजस्वी कविताओं के कारण असीम लोकप्रियता मिली। वर्ष 1934 में बिहार सरकार के अधीन इन्होंने 'सब-रजिस्ट्रार' का पद स्वीकार कर लिया और लगभग नौ वर्षों तक वह इस पद पर रहे।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
25 सितम्बर,1914

पुण्यतिथि
06 अप्रैल,2001

चौधरी देवीलाल

1*. पूरा नाम - चौधरी देवी लाल
2*. जन्म - 25 सितंबर, 1914
3*. जन्म भूमि - ज़िला सिरसा, हरियाणा
4*. मृत्यु - 6 अप्रैल, 2001
5*. अभिभावक - चौधरी लेखराम (पिता),
श्रीमती शुंगा देवी (माता)
6*. पत्नी - श्रीमती हरखी देवी
7*. नागरिकता - भारतीय
8*. प्रसिद्धि - किसानों के मसीहा, हरियाणा के जन्मदाता और राजनीति के भीष्म पितामह के रूप में ख्याति प्राप्त हैं।
पद - भूतपूर्व मुख्यमंत्री, हरियाणा
9*. भाषा - हिन्दी
10*. जेल यात्रा - जन आन्दोलन और स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जेल यात्राएँ कीं।
11*. जीवन शैली - चौधरी देवी लाल अक्सर कहा करते थे कि भारत के विकास का रास्ता खेतों से होकर गुजरता है, जब तक ग़रीब किसान, मज़दूर इस देश में सम्पन्न नहीं होगा, तब तक इस देश की उन्नति के कोई मायने नहीं हैं। इसलिए वो अक्सर यह दोहराया करते थे- हर खेत को पानी, हर हाथ को काम, हर तन पे कपड़ा, हर सिर पे मकान, हर पेट में रोटी, बाकी बात खोटी।
12*. विशेष - चौधरी देवी लाल भारत के पूर्व उप प्रधानमंत्री एवं भारतीय राजनीति के पुरोधा, किसानों के मसीहा, महान् स्वतंत्रता सेनानी, हरियाणा के जन्मदाता, राष्ट्रीय राजनीति के भीष्म-पितामह, करोड़ों भारतीयों के जननायक थे। आज भी चौधरी देवी लाल का महज नाम-मात्र लेने से ही, हज़ारों की संख्या में बुजुर्ग एवं नौजवान उद्वेलित हो उठते हैं। उन्होंने आजीवन किसान, मुजारों, मज़दूरों, ग़रीब एवं सर्वहारा वर्ग के लोगों के लिए लड़ाई लड़ी और कभी भी पराजित नहीं हुए। आज उनका क़द भारतीय राजनीति में बहुत ऊंचा है। उन्हें लोग भारतीय राजनीति के अपराजित नायक के रूप में जानते हैं। उन्होंने भारतीय राजनीतिज्ञों के सामने अपना जो चरित्र रखा वह वर्तमान दौर में बहुत प्रासंगिक है।
13*. अन्य जानकारी - देवी लाल जी ने सन् 1977 से 1979 तथा 1987 से 1989 तक हरियाणा प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में जनकल्याणकारी नीतियों के माध्यम से पूरे देश को एक नई राह दिखाई। केन्द्र में प्रधानमंत्री के पद को ठुकरा कर भारतीय राजनीतिक इतिहास में त्याग का नया आयाम स्थापित किया।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
25 सितम्बर,1920

पुण्यतिथि
03 जनवरी,2002

सतीश धवन

1*. पूरा नाम - सतीश धवन
2*. जन्म - 25 सितंबर, 1920
3*. जन्म भूमि - श्रीनगर
4*. मृत्यु - 3 जनवरी, 2002
5*. कर्म भूमि - भारत
6*. कर्म-क्षेत्र - भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम
7*. नागरिकता - भारतीय
8*. भाषा - हिन्दी, अंग्रेज़ी
9*. शिक्षा - बी.ए, एम.ए., बी.ई. (1945), वैमानिक इंजीनियरिंग में एम.एस. (1947), वैमानिकी और गणित में पी.एच.डी (1951)
10*. विद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, लाहौर (अविभाजित भारत); मिनेसोटा विश्वविद्यालय, मिनियापोलिस; कैलिफ़ोर्निया इन्स्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी
11*. पुरस्कार-उपाधि - पद्म विभूषण (1981), इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार (1999), विशिष्ट पूर्व छात्र पुरस्कार, कैलिफ़ोर्निया इन्स्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नॉलोजी (1969) आदि।
12*. प्रसिद्धि - वैज्ञानिक तथा 'इसरो' के भूतपूर्व अध्यक्ष
13*. विशेष योगदान - आपके प्रयासों से ही इन्सैट-एक दूरसंचार उपग्रह, आईआरएस-भारतीय सुदूर संवेदन उपग्रह और 'ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान' (पीएसएलवी) जैसी प्रणालियों का मार्ग भारत में प्रशस्त हुआ।
14*. अन्य जानकारी - सतीश धवन भारत के प्रसिद्ध रॉकेट वैज्ञानिक थे। देश के अंतरिक्ष कार्यक्रम को नई ऊँचाईयों पर पहुँचाने में उनका बहुत ही महत्त्वपूर्ण योगदान था। एक महान् वैज्ञानिक होने के साथ-साथ प्रोफ़ेसर सतीश धवन एक बेहतरीन इनसान और कुशल शिक्षक भी थे। उन्हें भारतीय प्रतिभाओं पर बहुत भरोसा था। सतीश धवन को विक्रम साराभाई के बाद देश के अंतरिक्ष कार्यक्रम की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। वे 'इसरो' के अध्यक्ष भी नियुक्त किये गए थे। प्रोफ़ेसर धवन ने इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस में कई सकारात्मक बदलाव किए थे। उन्होंने संस्थान में अपने देश के अलावा विदेशों से भी युवा प्रतिभाओं को शामिल किया। उन्होंने कई नए विभाग भी शुरू किए और छात्रों को विविध क्षेत्रों में शोध के लिए प्रेरित किया। सतीश धवन के प्रयासों से ही संचार उपग्रह इन्सैट, दूरसंवेदी उपग्रह आईआरएस और ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान पीएसएलवी का सपना साकार हो पाया था।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
22 मई,1772

पुण्यतिथि
27 सितम्बर,1833

राजा राममोहन राय

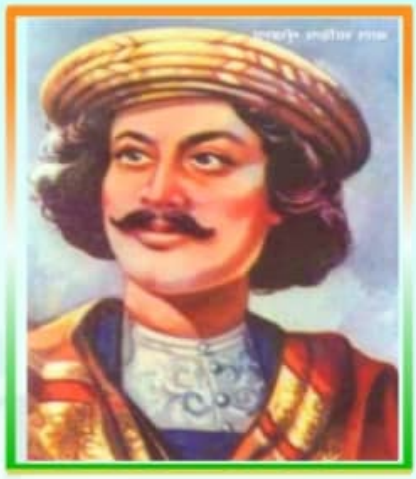

1*. पूरा नाम - राजा राममोहन राय
2*. जन्म - 22 मई, 1772
3*. जन्म भूमि - बंगाल, भारत
4*. मृत्यु - 27 सितम्बर, 1833
5*. मृत्यु स्थान - इंग्लैंड
6*. अभिभावक - रमाकांत रय
7*. पत्नी - उमा देवी
8*. कर्म भूमि - भारत
9*. कर्म-क्षेत्र - समाज सुधारक
10*. भाषा - अरबी, फ़ारसी, अंग्रेज़ी, ग्रीक, हिब्रू (इब्रानी) आदि।
11*. प्रसिद्धि - वेदान्त के ऊपर अंग्रेज़ी में लिखकर उन्होंने यूरोप तथा अमेरिका में भी बहुत प्रसिद्धि अर्जित की।
12*. सम्मान - उपाधि - उन्हें मुग़ल सम्राट की ओर से 'राजा' की उपाधि दी गयी।
13*. धार्मिक सुधारक - राजा राममोहन राय एक धार्मिक सुधारक तथा सत्य के अन्वेषक थे। सभी धर्मों के अध्ययन से वे इस परिणाम पर पंहुचे कि सभी धर्मों में अद्वैतवाद सम्बधी सिद्धांतों का प्रचलन है। मुसलमान उन्हें मुसलमान समझते थे, ईसाई उन्हें ईसाई समझते थे, अद्वैतवादी उन्हें अद्वैतवाती मानते थे तथा हिन्दू उन्हें वेदान्ती स्वीकार करते थे। वे सब धर्मों की मौलिक सत्यता तथा एकता में विश्वास करते थे।
14*. विशेष योगदान - राजा राममोहन राय को 'आधुनिक भारतीय समाज का जन्मदाता' कहा जाता है। वे ब्रह्म समाज के संस्थापक, भारतीय भाषायी प्रेस के प्रवर्तक, जनजागरण और सामाजिक सुधार आंदोलन के प्रणेता तथा बंगाल में नव-जागरण युग के पितामह थे। धार्मिक और सामाजिक विकास के क्षेत्र में राजा राममोहन राय का नाम सबसे अग्रणी है। राजा राम मोहन राय ने तत्कालीन भारतीय समाज की कट्टरता, रूढ़िवादिता एवं अंध विश्वासों को दूर करके उसे आधुनिक बनाने का प्रयास किया।
15*. नागरिकता - भारतीय
16*. स्थापना - ब्रह्मसमाज, यूनीटेरियन एसोसिएशन, हिन्दू कॉलेज
17*. अन्य जानकारी - राजा राममोहन राय 19वीं सदी में समाज सुधार के लिए कई बड़े आंदोलन चलाए, जिनमें सती प्रथा को खत्म करना सबसे अहम है। गूगल ने समाज के लिए किए गए उनके योगदान के चलते डूडल बनाकर उन्हें सलाम किया है। राजा राममोहन राय ने समाचार पत्रों की स्वतंत्रता के लिए भी कड़ा संघर्ष किया था। उन्होंने स्वयं एक बंगाली पत्रिका 'सम्वाद-कौमुदी' आरम्भ की और उसका सम्पादन भी किया।ब्रिटेन के ब्रिस्टल नगर के आरनोस वेल क़ब्रिस्तान में राजा राममोहन राय की समाधि है।विद्वानों की राय में राजा राममोहन राय को नये युग का अग्रदूत ठीक ही कहा गया है।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
27 सितम्बर,1873

पुण्यतिथि
22 अक्टूबर,1933

विट्ठल भाई पटेल

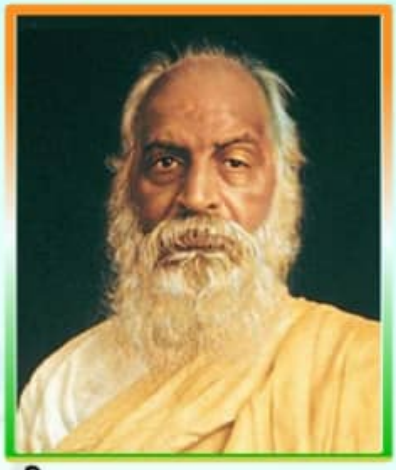

1*. पूरा नाम - विट्ठलदास झवेरभाई पटेल
2*. जन्म - 27 सितम्बर, 1873
3*. जन्म भूमि - नाडियाड, गुजरात
4*. मृत्यु - 22 अक्टूबर, 1933
5*. मृत्यु स्थान - वियना, स्विट्जरलैंड
6*. अभिभावक - पिता - झवेरभाई पटेल
माता - लाड़बाई
7*. नागरिकता - भारतीय
8*. कर्मभूमि - भारत
9*. प्रसिद्धि - सरदार वल्लभ भाई पटेल के बड़े भाई, स्वतंत्रता सेनानी
10*. शिक्षा - वकालत
11*. विशेष योगदान - महात्मा गांधी के दर्शन और नेतृत्व को कभी भी सही मायने में स्वीकार नहीं करने वाले पटेल कांग्रेस और स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हो गए। उनके पास समर्थन का कोई क्षेत्रीय आधार नहीं था, फिर भी वे एक प्रभावशाली नेता थे जिन्होंने उग्र भाषणों और प्रकाशित लेखों के माध्यम से संघर्ष का विस्तार किया। जब महात्मा गांधी ने चौरी चौरा की घटना के बाद 1922 में संघर्ष को समाप्त कर दिया , तो पटेल ने कांग्रेस छोड़ दी और चित्तरंजन दास और मोतीलाल नेहरू के साथ स्वराज पार्टी का गठन किया , जिसका उद्देश्य परिषदों में प्रवेश पाने के बाद सरकार में तोड़फोड़ करके राज को विफल करना था। स्वराज पार्टी केंद्रीय विधानमंडल और अधिकांश प्रांतीय विधान सभाओं में सबसे बड़ी पार्टी बन गई। विट्ठलभाई पटेल खुद भारत की केंद्रीय विधान सभा के अध्यक्ष (स्पीकर के समकक्ष) चुने गए, और कई विधायी प्रक्रियाओं को लागू करने में मदद की जो आज भी मौजूद हैं। पटेल और अन्य महत्वपूर्ण आवाज़ें थीं जिन्होंने गांधी के नेतृत्व के खिलाफ विद्रोह किया जब राष्ट्र असहयोग आंदोलन के निरस्त होने से दुखी था।
12*. अन्य जानकारी - विट्ठलभाई इतने चतुर और व्यावहारिक थे कि जब भी उनकी कोई साझा रणनीति होती तो वे गांधीजी का समर्थन करते थे क्योंकि उनके लक्ष्य एक ही थे - भारत की स्वतंत्रता। गांधीजी ने कहा, " श्री. पटेल विधानसभा में वही कर रहे हैं जो एक भारतीय अपने देश की भलाई के लिए कर सकता है। अपनी निडरता से वे अपने पद और अपने देश के लिए योग्य साबित हो रहे हैं।" विट्ठलदास झवेरभाई पटेल महान् देशभक्त थे और भारत के अंग्रेज़ शासक भी उनसे डरते थे।सरदार पटेल से इतर उनका कद इतना बड़ा था कि 1933 में उनके अंतिम संस्कार में तीन लाख लोगों का हुजूम उमड़ा था।आजादी की लड़ाई में योगदान देने के लिए 1978 में जब गांधीनगर में गुजरात की नई विधानसभा बनकर तैयार हुई तो इसका नाम विट्ठलभाई भवन रखा गया।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
28 सितम्बर,1929

पुण्यतिथि
06 फरवरी,2022

लता मंगेशकर

1*. पूरा नाम - कुमारी लता दीनानाथ मंगेशकर
2*. उपनाम - स्वर-साम्राज्ञी, राष्ट्र की आवाज, सहराब्दी की आवाज, भारत कोकिला,स्वर कोकिला
3*. जन्म - 28 सितम्बर, 1929
4*. जन्म भूमि - इंदौर, मध्यप्रदेश
5*. मृत्यु - 6 फ़रवरी, 2022
6*. मृत्यु स्थान - मुम्बई, महाराष्ट्र
7*. अभिभावक - पिता- दीनानाथ मंगेशकर
माता - सुधामती मंगेशकर
8*. कर्म भूमि - मुम्बई
9*. कर्म-क्षेत्र - फ़िल्म संगीत (पार्श्वगायिका), भारतीय शास्त्रीय संगीत
10*. मुख्य फ़िल्में - मदर इंडिया, मुग़ल ए आज़म
11*. विषय - भारतीय शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत, भजन, ग़ज़ल
12*. पुरस्कार-उपाधि - भारत रत्न, पद्म भूषण, दादा साहब फाल्के पुरस्कार, पद्मविभूषण
13*. नागरिकता - भारतीय
मुख्य गीत'आएगा आने वाला', 'ऐ मेरे वतन के लोगों', 'नाम गुम जाएगा', 'अल्ला तेरो नाम' आदि।
14*. भाई-बहन- हृदयनाथ मंगेशकर, आशा भोंसले, उषा मंगेशकर, मीना खड़ीकर
15*. देश-भक्ति गीत - 1962 के भारत-चीन युद्ध के बाद शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिये एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इस में तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू भी उपस्थित थे। इस समारोह में लता जी के द्वारा गाए गये गीत "ऐ मेरे वतन के लोगों" को सुन कर सब लोग भाव-विभोर हो गये थे। पं नेहरू की आँखें भी भर आईं थीं। ऐसा था आपका भावपूर्ण एवं मर्मस्पर्शी स्वर। आज भी जब देश-भक्ति के गीतों की बात चलती है तो सब से पहले इसी गीत का उदाहरण दिया जाता है।
16*. अन्य जानकारी - लता मंगेशकर भारत की 'भारत रत्न' सम्मानित मशहूर पार्श्वगायिका थीं, जिनकी आवाज़ ने छह दशकों से भी ज़्यादा संगीत की दुनिया को सुरों से नवाज़ा। भारत की 'स्वर कोकिला' लता मंगेशकर ने 20 भाषाओं में 30,000 गाने गाये। उनकी आवाज़ सुनकर कभी किसी की आँखों में आँसू आए तो कभी सीमा पर खड़े जवानों को सहारा मिला। उन्होंने स्वयं को पूर्णत: संगीत को समर्पित कर रखा था। लता मंगेशकर जैसी शख़्सियतें विरले ही जन्म लेती हैं। सर्वाधिक गीत रिकार्ड करने का भी गौरव प्राप्त है।लता जी की जादुई आवाज़ के भारतीय उपमहाद्वीप के साथ-साथ पूरी दुनिया में दीवाने हैं। टाईम पत्रिका ने उन्हें भारतीय पार्श्वगायन की अपरिहार्य और एकछत्र साम्राज्ञी स्वीकार किया है। प्यार से सब उन्हें 'लता दीदी' कहकर पुकारते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
28 सितम्बर,1907

बलिदान दिवस
23 मार्च,1931

भगत सिंह

1*. पूरा नाम - बलिदान-ए-आज़म अमर बलिदानी सरदार भगतसिंह
2*. अन्य नाम - भागां वाला
3*. जन्म - 28 सितंबर, 1907
4*. जन्म भूमि - लायलपुर, पंजाब
5*. मृत्यु - 23 मार्च, 1931 ई.
6*. मृत्यु स्थान - लाहौर, पंजाब
7*. मृत्यु कारण- बलिदान
8*. अभिभावक - पिता - सरदार किशन सिंह
माता - विद्यावती कौर
9*. नागरिकता - भारतीय
10*. धर्म - सिख
11*. आंदोलन - भारतीय स्वतंत्रता संग्राम
12*. जेल यात्रा - असेम्बली बमकाण्ड (8 अप्रैल, 1929)
13*. विद्यालय - डी.ए.वी. स्कूल
14*. शिक्षा - बारहवीं
15*. प्रमुख संगठन - 'नौज़वान भारत सभा', 'कीर्ति किसान पार्टी' एवं 'हिन्दुस्तान समाजवादी गणतंत्र संघ'
16*. रचनाएँ - आत्मकथा 'दि डोर टू डेथ' (मौत के दरवाज़े पर), 'आइडियल ऑफ़ सोशलिज्म' (समाजवाद का आदर्श), 'स्वाधीनता की लड़ाई में पंजाब का पहला उभार'।
17*. मुख्य लेख :- मैं नास्तिक क्यों हूँ? -भगतसिंह - 'मैं नास्तिक क्यों हूँ' भारत के प्रसिद्ध क्रांतिकारी सरदार भगतसिंह द्वारा लिखा गया एक लेख है, जो उन्होंने लाहौर की केंद्रीय जेल में अपने बंदी जीवन के समय लिखा था। यह लेख 27 सितम्बर, सन 1931 को लाहौर के समाचार पत्र 'द पीपल' में प्रकाशित हुआ था। इस लेख में भगतसिंह ने ईश्वर कि उपस्थिति पर अनेक तर्कपूर्ण सवाल खड़े किये हैं और इस संसार के निर्माण, मनुष्य के जन्म, मनुष्य के मन में ईश्वर की कल्पना के साथ-साथ संसार में मनुष्य की दीनता, उसके शोषण, दुनिया में व्याप्त अराजकता और और वर्गभेद की स्थितियों का भी विश्लेषण किया है। यह भगतसिंह के लेखन के सबसे चर्चित हिस्सों में से एक रहा है।
18*. अन्य जानकारी - भगत सिंह भारत के एक महान स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रान्तिकारी थे। चन्द्रशेखर आजाद व पार्टी के अन्य सदस्यों के साथ मिलकर इन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए अभूतपूर्व साहस के साथ शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार का मुक़ाबला किया। पहले लाहौर में बर्नी सैंडर्स की हत्या और उसके बाद दिल्ली की केन्द्रीय संसद (सेण्ट्रल असेम्बली) में बम-विस्फोट करके ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध खुले विद्रोह को बुलन्दी प्रदान की। इन्होंने असेम्बली में बम फेंककर भी भागने से मना कर दिया। जिसके फलस्वरूप अंग्रेज सरकार ने इन्हें 23 मार्च 1931 को इनके दो अन्य साथियों, राजगुरु तथा सुखदेव के साथ फाँसी पर लटका दिया। अमर बलिदानी सरदार भगतसिंह का नाम विश्व में 20वीं शताब्दी के अमर बलिदानियों में बहुत ऊँचा है। भगतसिंह ने देश की आज़ादी के लिए जिस साहस के साथ शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार का मुक़ाबला किया, वह आज के युवकों के लिए एक बहुत बड़ा आदर्श है। भगतसिंह अपने देश के लिये ही जिये और उसी के लिए बलिदान भी दे गये।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
30 सितम्बर,1837

पुण्यतिथि
24 जून,1881

पंडित श्रद्धाराम शर्मा

1*. पूरा नाम - पंडित श्रद्धाराम शर्मा
2*. अन्य नाम - पंडित श्रद्धाराम फिल्लौरी
3*. जन्म - 30 सितम्बर, 1837 ई.
4*. जन्म भूमि - फुल्लौर ग्राम, जालंधर, पंजाब
5*. मृत्यु - 24 जून, 1881 ई.
6*. मृत्यु स्थान - लाहौर, पाकिस्तान
7*. अभिभावक - पिता- जयदयालु
8*. पत्नी - महताब कौर
9*. कर्म भूमि - भारत
10*. कर्म-क्षेत्र - ज्योतिष तथा साहित्यकार
11*. मुख्य रचनाएँ - 'ओम जय जगदीश' की आरती, 'सत्य धर्म मुक्तावली', 'शातोपदेश', 'सीखन दे राज दी विधिया', 'पंजाबी बातचीत', 'भाग्यवती', 'सत्यामृत प्रवाह' आदि।
12*. भाषा - संस्कृत, हिन्दी, फ़ारसी
13*. नागरिकता - भारतीय
14*. जनजागरण का कार्य - वैसे पंडित श्रद्धाराम शर्मा धार्मिक कथाओं और आख्यानों के लिए काफ़ी प्रसिद्ध थे। उन्होंने धार्मिक कथाओं और आख्यानों का उद्धरण देते हुए अंग्रेज़ हुकुमत के ख़िलाफ़ जनजागरण का ऐसा वातावरण तैयार किया कि उनका आख्यान सुनकर हर एक व्यक्ति के भीतर देशभक्ति की भावना भर जाती थी। इससे अंग्रेज़ सरकार की नींद उड़ गई। श्रद्धाराम जी देश के स्वतन्त्रता आन्दोलनों में भाग लेने तथा अपने भाषणों में महाभारत के उद्धरणों का उल्लेख करते हुए ब्रिटिश सरकार को उखाड़ फेंकने का संदेश देते थे और लोगों में क्रांतिकारी विचार पैदा करते थे।
15*. स्त्री शिक्षा पर बल - श्रद्धाराम शर्मा जी ने लड़कियों को तब पढ़ाने की वकालात की, जब लड़कियों को घर से बाहर तक नहीं निकलने दिया जाता था, परंपराओं, कुप्रथाओं और रूढ़ियों पर चोट करते रहने के बावजूद वे लोगों के बीच लोकप्रिय बने रहे। जबकि वह एक ऐसा दौर था, जब कोई व्यक्ति अंधविश्वासों और धार्मिक रूढ़ियों के ख़िलाफ़ कुछ बोलता था तो पूरा समाज उसके ख़िलाफ़ हो जाता था। निश्चय ही उनके अंदर अपनी बात को कहने का साहस और उसे लोगों तक पहुँचाने की जबर्दस्त क्षमता थी।
16*. अन्य जानकारी - पंडित जी सनातन धर्म प्रचारक, ज्योतिषी, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और संगीतज्ञ होने के साथ-साथ हिन्दी और पंजाबी के प्रसिद्ध साहित्यकार भी थे। अपनी विलक्षण प्रतिभा और ओजस्वी वाक्पटुता के बल पर उन्होंने पंजाब में नवीन सामाजिक चेतना एवं धार्मिक उत्साह जगाया था, जिससे आगे चलकर आर्य समाज के लिये पहले से। निर्मित एक उर्वर भूमि मिली।श्रद्धाराम शर्मा जी की अधिकांश रचनाएँ गद्य में हैं। वे 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हिन्दी और पंजाबी के प्रतिनिधि गद्यकार थे। उनके हिन्दी गद्य में खड़ी बोली का प्राधान्य है। यत्रतत्र उर्दू और पंजाबी का पुठ भी है।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
02 अक्टूबर,1904

पुण्यतिथि
11 जनवरी,1966

लाल बहादुर शास्त्री

1*. पूरा नाम - लाल बहादुर शास्त्री
2*. अन्य नाम - शास्त्री जी
3*. जन्म - 02 अक्टूबर 1904
4*. जन्म भूमि - मुग़लसराय, उत्तर प्रदेश
5*. मृत्यु - 11 जनवरी, 1966
6*. मृत्यु स्थान - ताशकंद, रूस (अब उज़बेकिस्तान)
7*. मृत्यु कारण - अज्ञात
8*. अभिभावक - श्री शारदा प्रसाद और श्रीमती रामदुलारी देवी
9*. पत्नी - ललितादेवी
10*. संतान - 6(हरिकृष्ण, अनिल, सुनील व अशोक और कुसुम व सुमन)
11*. नागरिकता - भारतीय
12*. प्रसिद्धि - भारतीय राजनेता व देश के दूसरे प्रधानमंत्री
13*. पार्टी - भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस
14*. पद - भारत के दूसरे प्रधानमंत्री
15*. कार्य काल - 9 जून, 1964 से 11 जनवरी, 1966
16*. शिक्षा - स्नातकोत्तर
17*. विद्यालय - काशी विद्यापीठ
18*. भाषा - हिंदी, अंग्रेज़ी
19*. पुरस्कार-उपाधि - भारत रत्न
20*. अन्य जानकारी - लाल बहादुर शास्त्री भारत के दूसरे प्रधानमन्त्री थे। वह 9 जून 1964 से 11 जनवरी 1966 को अपनी मृत्यु तक लगभग अठारह महीने भारत के प्रधानमन्त्री रहे। इस प्रमुख पद पर उनका कार्यकाल अद्वितीय रहा। शास्त्री जी ने काशी विद्यापीठ से शास्त्री की उपाधि प्राप्त की। भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात शास्त्रीजी को उत्तर प्रदेश के संसदीय सचिव के रूप में नियुक्त किया गया था। गोविंद बल्लभ पंत के मन्त्रिमण्डल में उन्हें पुलिस एवं परिवहन मन्त्रालय सौंपा गया। परिवहन मन्त्री के कार्यकाल में उन्होंने प्रथम बार महिला संवाहकों (कण्डक्टर्स) की नियुक्ति की थी। पुलिस मंत्री होने के बाद उन्होंने भीड़ को नियन्त्रण में रखने के लिये लाठी की जगह पानी की बौछार का प्रयोग प्रारम्भ कराया। 1951 में, जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में वह अखिल भारत कांग्रेस कमेटी के महासचिव नियुक्त किये गये। उन्होंने 1952, 1957 व 1962 के चुनावों में कांग्रेस पार्टी को भारी बहुमत से जिताने के लिये बहुत परिश्रम किया।जवाहरलाल नेहरू का उनके प्रधानमन्त्री के कार्यकाल के दौरान 27 मई, 1964 को देहावसान हो जाने के बाद साफ सुथरी छवि के कारण शास्त्रीजी को 1964 में देश का प्रधानमन्त्री बनाया गया। उन्होंने 9 जून 1964 को भारत के प्रधानमंत्री का पद भार ग्रहण किया। उनके कार्यकाल में 1965 का भारत पाक युद्ध शुरू हो गया। इससे तीन वर्ष पूर्व चीन का युद्ध भारत हार चुका था। शास्त्रीजी ने अप्रत्याशित रूप से हुए इस युद्ध में राष्ट्र को उत्तम नेतृत्व प्रदान किया और पाकिस्तान को करारी शिकस्त दी। इसकी कल्पना पाकिस्तान ने कभी सपने में भी नहीं की थी।लाल बहादुर शास्त्री किसानों को जहां देश का अन्नदाता मानते थे, वहीं देश के सीमा प्रहरियों के प्रति भी उनके मन में अगाध प्रेम था जिसके चलते उन्होंने 'जय जवान, जय किसान' का नारा दिया। ताशकंद में पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री अयूब खान के साथ युद्ध समाप्त करने के समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद 11 जनवरी 1966 की रात में ही रहस्यमय परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हो गयी। उनकी सादगी, देशभक्ति और ईमानदारी के लिये मरणोपरान्त भारत रत्न से सम्मानित किया गया।आपको राष्ट्रीय नायक के रूप में सम्मानित किया गया और आपके सम्मान में विजय घाट स्मारक बनाया गया।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
02 अक्टूबर,1869

पुण्यतिथि
30 जनवरी,1948

महात्मा गांधी

1*. पूरा नाम - मोहनदास करमचंद गाँधी
2*. अन्य नाम - बापू, महात्मा जी
3*. जन्म - 0 2 अक्तूबर, 1869
4*. जन्म भूमि - पोरबंदर, गुजरात
5*. मृत्यु - 30 जनवरी, 1948
6*. मृत्यु स्थान - नई दिल्ली
7*. मृत्यु कारण - हत्या
8*. अभिभावक - पिता - करमचंद गाँधी, माता - पुतलीबाई
9*. पत्नी कस्तूरबा गाँधी
10*. संतान - हरिलाल, मनिलाल, रामदास, देवदास
11*. स्मारक - राजघाट (दिल्ली), बिरला हाउस (दिल्ली) आदि।
12*. नागरिकता - भारतीय
13*. पार्टी - काँग्रेस
14*. शिक्षा - बैरिस्टर
15*. विद्यालय - बंबई यूनिवर्सिटी, सामलदास कॉलेज
16*. भाषा - हिन्दी, अंग्रेज़ी
17*. पुरस्कार-उपाधि - राष्ट्रपिता
18*. विशेष - मोहनदास करमचन्द गांधी जिन्हें महात्मा गांधी के नाम से भी जाना जाता है, भारत एवं भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के एक प्रमुख राजनैतिक एवं आध्यात्मिक नेता थे। वे सत्याग्रह (व्यापक सविनय अवज्ञा) के माध्यम से अत्याचार के प्रतिकार करने के समर्थक अग्रणी नेता थे, उनकी इस अवधारणा की नींव सम्पूर्ण अहिंसा के सिद्धान्त पर रखी गयी थी जिसने भारत सहित पूरे विश्व में जनता के नागरिक अधिकारों एवं स्वतन्त्रता के प्रति आन्दोलन के लिये प्रेरित किया। उन्हें संसार में साधारण जनता महात्मा गांधी के नाम से जानती है। संस्कृत भाषा में महात्मा अथवा 'महान आत्मा' एक सम्मान सूचक शब्द है। गांधी को महात्मा के नाम से सबसे पहले 1915 में राजवैद्य जीवराम कालिदास ने संबोधित किया था। एक अन्य मत के अनुसार स्वामी श्रद्धानन्द ने 1915 मे महात्मा की उपाधि दी थी। तीसरा मत ये है कि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने 12 अप्रैल 1919 को अपने एक लेख मे उन्हें महात्मा कहकर सम्बोधित किया था। उन्हें बापू (गुजराती भाषा में બાપુ बापू अर्थात् पिता) के नाम से भी स्मरण किया जाता है। एक मत के अनुसार गांधीजी को बापू सम्बोधित करने वाले प्रथम व्यक्ति उनके साबरमती आश्रम के शिष्य थे सुभाष चन्द्र बोस ने 6 जुलाई 1944 को रंगून रेडियो से गांधी जी के नाम जारी प्रसारण में उन्हें राष्ट्रपिता कहकर सम्बोधित करते हुए आज़ाद हिन्द फौज के सैनिकों के लिये उनका आशीर्वाद और शुभकामनाएँ माँगीं थीं।प्रति वर्ष 2 अक्टूबर को उनका जन्म दिन भारत में गांधी जयन्ती के रूप में और पूरे विश्व में अन्तरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जाता है।
19*. अन्य जानकारी - 1930 में टाइम पत्रिका ने महात्मा गाँधी को वर्ष का पुरूष का नाम दिया। 1999 में गाँधी अलबर्ट आइंस्टाइन जिन्हे सदी का पुरूष नाम दिया गया के मुकाबले द्वितीय स्थान जगह पर थे। टाइम पत्रिका ने दलाई लामा, लेच वालेसा, डॉ मार्टिन लूथर किंग, जूनियर, सेसर शावेज़, औंग सान सू कई, बेनिग्नो अकुइनो जूनियर, डेसमंड टूटू और नेल्सन मंडेला को गाँधी के अहिंसा के आद्यात्मिक उत्तराधिकारी के रूप में कहा गया।भारत सरकार प्रति वर्ष उल्लेखनीय सामाजिक कार्यकर्ताओं, विश्व के नेताओं और नागरिकों को महात्मा गाँधी शान्ति पुरस्कार से पुरस्कृत करती है। दक्षिण अफ्रीकी नेल्सन मंडेला, जो कि जातीय मतभेद और पार्थक्य के उन्मूलन में संघर्षरत रहे, इस पुरूस्कार को पाने वाले पहले गैर-भारतीय थे। यूनाइटेड किंगडम में ऐसे अनेक गाँधी जी की प्रतिमाएँ उन ख़ास स्थानों पर हैं जैसे लन्दन विश्वविद्यालय कालेज के पास ताविस्तोक चौक, लन्दन जहाँ पर उन्होंने कानून की शिक्षा प्राप्त की। यूनाइटेड किंगडम में जनवरी 30 को "राष्ट्रीय गाँधी स्मृति दिवस" मनाया जाता है।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
18 जुलाई,1861

पुण्यतिथि
03 अक्टूबर,1923

कादम्बिनी गांगुली

1*. पूरा नाम - कादम्बिनी गांगुली
2*. जन्म - 18 जुलाई, 1861
3*. जन्म भूमि - भागलपुर, बिहार
4*. मृत्यु - 3 अक्टूबर, 1923
5*. मृत्यु स्थान - कलकत्ता, ब्रिटिश भारत
6* vअभिभावक - बृजकिशोर बासु
7*. पति - द्वारकानाथ गंगोपाध्याय
8*. कर्म भूमि - भारत
9*. कर्म-क्षेत्र - चिकित्सा
10*. भाषा - हिन्दी, अंग्रेज़ी
11*. शिक्षा - चिकित्साशास्त्र
12*. विद्यालय - कोलकाता विश्वविद्यालय, ग्लासगो और ऐडिनबर्ग विश्वविद्यालय।
13*. प्रसिद्धि - भारत की पहली महिला स्नातक और पहली महिला फ़िजीशियन, स्वतंत्रता सेनानी
14*. नागरिकता - भारतीय
15*. विशेष - कादम्बिनी गांगुली पहली दक्षिण एशियाई महिला थीं, जिन्होंने यूरोपियन मेडिसिन में प्रशिक्षण लिया था।
16*. समाज सुधार भूमिका - कादम्बिनी गांगुली, केवल भारत की पहली महिला डॉक्टर ही नहीं थीं, बल्कि वे एक प्रभावशाली समाज सुधारक भी थीं जिन्होंने 19वीं और 20वीं सदी के दौरान भारतीय समाज में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महिलाओं के लिए शिक्षा को प्रोत्साहित करना उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य था। इसके अलावा उन्होंने विधवाओं के पुनर्विवाह का समर्थन किया, जो उस समय में एक सामाजिक कुरीति माना जाता था। उन्होंने बाल विवाह के खिलाफ भी आवाज उठाई। उन्होंने लोगों को इसके हानिकारक प्रभावों के बारे में शिक्षित किया और सरकार से इस प्रथा पर पाबंदी लगाने की मांग की। कादम्बिनी जी ने सती प्रथा के खिलाफ भी लंबी लड़ाई लड़ी थी।
17*. अन्य जानकारी - कादम्बिनी गांगुली का नाम भारतीय इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा गया है। वह उन अग्रणी महिलाओं में से एक थीं जिन्होंने ब्रिटिश भारत में महिलाओं की स्थिति को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कादम्बिनी ने सामाजिक और सांस्कृतिक रूढ़ियों को तोड़कर चिकित्सा के क्षेत्र में प्रवेश किया। आगे चल कर वर्ष 1886 में उन्होंने भारत की पहली महिला डॉक्टर बनने का गौरव हासिल किया। वह न सिर्फ भारत की पहली महिला डॉक्टर थीं, बल्कि उनका नाम उन महिलाओं में भी शामिल जिन्होंने पूरे दक्षिण एशिया में सबसे पहले पश्चिमी चिकित्सा पद्धति (वेस्टर्न मेडिसिन) की पढ़ाई और ट्रेनिंग की। वहीं सिर्फ चिकित्सा के क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि कादम्बिनी ने शिक्षा और सामाजिक सुधारों के क्षेत्र में भी अमूल्य योगदान दिया। उनका साहस और समर्पण हमेशा लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहेगा। कांग्रेस के 1889 के मद्रास अधिवेशन में उन्होंने भाग लिया और भाषण दिया। संस्था के उस समय तक के इतिहास में भाषण देने वाली कादम्बिनी पहली महिला थीं। भारत सरकार ने कादम्बिनी गांगुली के सम्मान में 18 जुलाई 1964 को एक डाक टिकट जारी किया था।18 जुलाई 2021 को गूगल ने भारत में अपने होम पेज पर डूडल के साथ गांगुली का 160 वाँ जन्मदिन मनाया।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
04 अक्टूबर,1857

पुण्यतिथि
31 मार्च,1930

श्यामजी कृष्ण वर्मा

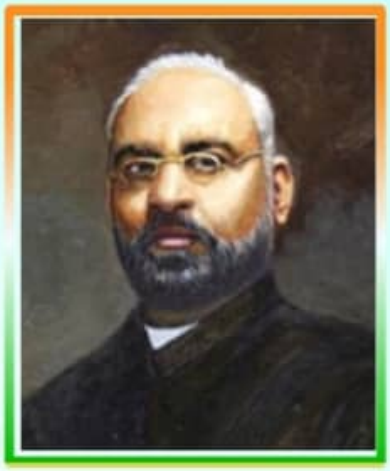

1*. पूरा नाम - श्यामजी कृष्ण वर्मा
2*. जन्म - 4 अक्टूबर, 1857
3*. जन्म भूमि - मांडवी गांव, गुजरात
4*. मृत्यु - 31 मार्च, 1930
5*. मृत्यु स्थान - जेनेवा, स्विट्ज़रलैण्ड
6*. माता-पिता - श्री कृष्ण वर्मा, गोमती बाई
7*. पत्नी - भानुमति कृष्ण वर्मा
8*. नागरिकता - भारतीय
9*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता सेनानी, लेखक, वकील, पत्रकार
10*. विद्यालय - विल्सन हाईस्कूल, मुम्बई; ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय
11*. शिक्षा - बी.ए.
12*. विशेष योगदान - इंग्लैंड से मासिक 'द इंडियन सोशिओलॉजिस्ट' प्रकाशित किया, जिसका प्रकाशन बाद में जिनेवा में भी किया गया।
13*. अन्य जानकारी - श्यामजी कृष्ण वर्मा भारत के उन अमर सपूतों में हैं, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन भारत की आज़ादी के लिए लगा दिया। ब्रिटिश सरकार के अत्याचारों से त्रस्त होकर भारत से इंग्लैण्ड चले गये श्यामजी कृष्ण वर्मा ने अपना सारा जीवन भारत की स्वतन्त्रता के लिए माहौल बनाने में और नवयुवकों को प्रेरित करने में लगाया। स्वामी दयानंद सरस्वती के सान्निध्य में रहकर मुखर हुए संस्कृत व वेदशास्त्रों के मूर्धन्य विद्वान के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त श्यामजी कृष्ण वर्मा 1885 में तत्कालीन रतलाम राज्य के 1889 तक दीवान पद पर आसीन रहे।सात समंदर पार से अंग्रेज़ों की धरती से ही भारत मुक्ति की बात करना सामान्य नहीं था, उनकी देश भक्ति की तीव्रता थी ही, स्वतंत्रता के प्रति आस्था इतनी दृढ़ थी कि पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा ने अपनी मृत्यु से पहले ही यह इच्छा व्यक्त की थी कि उनकी मृत्यु के बाद अस्थियां स्वतंत्र भारत की धरती पर ले जाई जाए। भारतीय स्वतंत्रता के 17 वर्ष पहले दिनांक 31 मार्च, 1930 को उनकी मृत्यु जिनेवा में हुई, उनकी मृत्यु के 73 वर्ष बाद स्वतंत्र भारत के 56 वर्ष बाद 2003 में भारत माता के सपूत की अस्थियां गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी की पहल पर देश की धरती पर लाने की सफलता मिली।रतलाम में श्यामजी कृष्ण वर्मा सृजन पीठ की स्थापना भी की जा चुकी है। श्यामजी कृष्ण वर्मा की जन्मस्थली माण्डवी गुजरात क्रांति तीर्थ के रूप में विकसित किया जा रहा है। जहां स्वाधीनता संग्राम सैनानियों की प्रतिमाएं व 21 हजार वृक्षों का क्रांतिवन आकार ले रहा है। रतलाम में ही स्वतंत्रता संग्राम सैनानियों के परिचय गाथा की गैलरी प्रस्तावित है, ताकि भारतीय स्वतंत्रता के आधारभूत मूल तत्वों का स्मरण एवं उनके संबंधित शोध कार्य की ओर आगे बढ़ सके, लेकिन इसके लिए रतलाम ज़िला प्रशासन एवं मध्यप्रदेश शासन की मुखरता भी अपेक्षित है।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
11 अक्टूबर,1902

पुण्यतिथि
08 अक्टूबर,1979

जय प्रकाश नारायण

1*. पूरा नाम - जयप्रकाश नारायण
2*. अन्य नाम - लोकनायक, जेपी, जयप्रकाश
3*. जन्म - 11 अक्टूबर, सन् 1902
4*. जन्म भूमि - सिताबदियारा, बिहार
5*. मृत्यु - 8 अक्टूबर, सन् 1979
6*. मृत्यु स्थान - पटना, बिहार
7*. अभिभावक - पिता - श्री देवकी बाबू,
माता - फूलरानी देवी
8*. पत्नी - प्रभावती
9*. नागरिकता - भारतीय
10*. पार्टी - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, जनता पार्टी
11*. शिक्षा - एम. ए (समाजशास्त्र से)
12*. विद्यालय - सन 1922 से 1929 ई. के बीच कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बरकली, विसकांसन विश्वविद्यालय
13*. जेल यात्रा - 7 मार्च सन् 1940 को ब्रिटिश पुलिस द्वारा, हज़ारी बाग़ जेल में क़ैद, आगरा सेन्ट्रल जेल
14*. पुरस्कार-उपाधि - भारत रत्न, रेमन मैग्सेसे पुरस्कार
15*. विशेष योगदान - जयप्रकाश जी के योगदानों के बारे में जितना कहा जाए वह कम है। ये अत्यन्त परिश्रमी व्यक्ति थे। इनकी विलक्षणता की तारीफ़ स्वयं गांधीजी और नेहरू जैसे लोग किया करते थे। भारत माता को आज़ाद कराने हेतु इन्होंने तरह-तरह की परेशानियों को झेला किन्तु इन्होंने अंग्रेज़ों के सामने घुटने नहीं टेके। क्योंकि ये दृढ़निश्चयी व्यक्ति थे। संघर्ष के इसी दौर में उनकी पत्नी भी गिरफ़्तार कर ली गईं और उन्हें दो वर्ष की सज़ा हुई। क्योंकि वह भी स्वतंत्रता आंदोलन में कूदी थीं और जनप्रिय नेता बन चुकी थीं। जयप्रकाश जी अपनी निष्ठा और चतुराई के लिए प्रसिद्ध थे। वे सच्चे देशभक्त एवं ईमानदार नेता थे। वे ब्रिटिश प्रशासन का समूल नष्ट करने पर तुले हुए थे।उन्होंने विश्व स्तर पर अपनी आवाज़ बुलन्द करते हुए कहा है कि विश्व के संकट को मद्देनज़र रखते हुए भारत को आज़ादी प्राप्त होना अति आवश्यक है। जब तक हम आज़ाद न होंगे, हमारा स्वतंत्र अस्तित्व क़ायम न होगा और हम विकास के पथ पर अग्रसर न हो सकेंगे।
16*. अन्य जानकारी - जयप्रकाश नारायण राजनीतिज्ञ और सिद्धांतवादी नेता थे। मातृभूमि के वरदपुत्र जयप्रकाश नारायण ने हमारे देश की सराहनीय सेवा की है। लोकनायक जयप्रकाश नारायण त्याग एवं बलिदान की प्रतिमूर्ति थे। कहा गया है–

होनहार वीरवान के होत चीकने पात

जयप्रकाश विचार के पक्के और बुद्धि के सुलझे हुए व्यक्ति थे। जयप्रकाश जी देश के सच्चे सपूत थे। जयप्रकाश ने देश को अन्धकार से प्रकाश की ओर लाने का सच्चा प्रयास किया, जिसमें वह पूरी तरह से सफल रहे हैं। लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने भारतीय जनमानस पर अपना अमिट छाप छोड़ी है। जयप्रकाश जी का समाजवाद का नारा आज भी गूँज रहा है। समाजवाद का सम्बन्ध न केवल उनके राजनीतिक जीवन से था, अपितु यह उनके सम्पूर्ण जीवन में समाया हुआ था। जयप्रकाश जी का समाजवाद का नारा आज भी गूँज रहा है। समाजवाद का सम्बन्ध न केवल उनके राजनीतिक जीवन से था, अपितु यह उनके सम्पूर्ण जीवन में समाया हुआ था।

दिनकर ने लोकनायक के विषय में लिखा है–

है जयप्रकाश वह नाम,जिसे इतिहास आदर देता है।
बढ़कर जिसके पद चिह्नों की,उन पर अंकित कर देता है।
कहते हैं जो यह प्रकाश को,नहीं मरण से जो डरता है।
ज्वाला को बुझते देख,कुंड में कूद स्वयं जो पड़ता है।।

Scanned with OKEN Scanner

भारत के महान रत्न

जयंती :-
25 मई,1917

बलिदान दिवस
10 अक्टूबर,1943

वक्कोम अब्दुल खादर

569

1*. पूरा नाम - वक्कोम अब्दुल खादर
2*. जन्म - 25 मई 1917
3*. जन्म भूमि - वक्कोम , त्रिवेंद्रम , त्रावणकोर
4*. मृत्यु - 10 अक्टूबर 1943 (आयु 26)
5*. मृत्यु स्थान - सेंट जॉर्ज किला , मद्रास , ब्रिटिश भारत
6*. मृत्यु का कारण - फाँसी द्वारा मृत्युदंड
7*. अभिभावक - वावकुंजु (पिता)
उम्मू सलमा (माँ)
8*. राष्ट्रीयता - भारतीय
9*. व्यवसाय - आजाद हिन्द फौज का एक सिपाही, जिसका नेतृत्व नेताजी सुभाष बोस ने किया था।
10*. प्रसिद्धि - महान क्रांतिकारी
11*. विशेष - वक्कोम अब्दुल खादर स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय थे, अपने रोमांचक देशभक्ति गीतों से लोगों को आनंदित करते थे। महात्मा गांधी की केरल यात्रा के दौरान, ट्रेन कडक्कवुर रेलवे स्टेशन पर रुकी, जहाँ स्थानीय लोगों ने गर्व से कहा कि अब्दुल खादर नाम के एक छोटे लड़के ने बड़ी भीड़ के बीच गांधीजी को माला पहनाई थी। 1938 में, जब वह 21 वर्ष के थे, ख़ादर अपने पिता के कहने पर मलेशिया चले गए और लोक निर्माण विभाग के इंजीनियरिंग अनुभाग में शामिल हो गए। हालाँकि, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के उत्साह ने ख़ादर के मन को झकझोर दिया। वह इंडियन इंडिपेंडेंस लीग में शामिल हो गए, जो उस समय मलेशिया में भारतीय स्वतंत्रता के लिए लड़ रही थी, और बाद में एक क्रांतिकारी नेता बन गए। वह केरल मुस्लिम संघ के सचिव भी थे, जो मलेशिया में केरल के मुसलमानों का एक समूह था, जिसने इंडिपेंडेंस लीग के साथ सहयोग किया था। ख़ादर भारतीय राष्ट्रीय सेना में शामिल हो गए , जिसका गठन इसके कमांडर-इन-चीफ नेताजी सुभाष बोस ने किया था । भारतीय स्वराज संस्थान (फ्री स्कूल , पेनांग, अब पेनांग संग्रहालय में स्थित) में अपना प्रशिक्षण पूरा करने के बाद, जिसे भारतीय राष्ट्रीय सेना के सैनिकों को प्रशिक्षित करने के लिए स्थापित किया गया था।
11*. अन्य जानकारी - आजाद हिंद फौज के सिपाही अब्दुल खादर और उनके तीन साथियों सत्येन बर्धन , फौजा सिंह और आनंदन को 10 सितंबर 1943 को मद्रास जेल में फांसी दे दी गई । फांसी से पहले लगभग पूरी रात जेल वंदे मातरम के नारे से गूंजती रही । अब्दुल खादर, सत्येन बर्धन, फौजा सिंह और आनंदन, तीनों ने बहुत हिम्मत के साथ वंदे मातरम का नारा लगाते हुए फांसी के तख्ते की सीढ़ियाँ चढ़ीं , जिसका मतलब था 'मेरी मातृभूमि की जय हो'। अब्दुल खादर ने खुद नारा लगाया था "नेताजी सुभाष बाबू की जय! ब्रिटिश सरकार मुर्दाबाद! भारत की जय!" खादर और अन्य को शुक्रवार, 10 सितंबर 1943 को आधी रात को बारह बजे फांसी दे दी गई। उनकी याद में त्रावणकोर में एक छोटा स्मारक बनाया गया है।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
** जनवरी,1895

पुण्यतिथि
03 जुलाई,1985

महाशय भरत सिंह

1*. पूरा नाम - महाशय भरत सिंह
2*. जन्म - ** जनवरी, 1895
3*. जन्म भूमि - ग्राम- जाव,तहसील - छाता, जिला - मथुरा,उत्तर प्रदेश,भारत
4*. मृत्यु - 03 जुलाई,1985
5*. अभिभावक - पिता - चौधरी गिरवर सिंह
माता - सूरज कौर
6*. नागरिकता - भारतीय
7*. कर्मभूमि - भारत
8*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रांतिकारी
9*. आंदोलन - व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन
10*. जेल यात्रा - कोसी कांड- सन् 1930 में 1 साल 3 माह की सजा। व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन में भाग लेने पर सन् 1941 में 1 वर्ष कठोर कारावास वह ₹50 का जुर्माना (मथुरा जेल)। सन् 1942 में ₹4000 का सामूहिक जुर्माना तार काटने पर। सन 1942 की जनक्रान्ति *करो या मरो* नारे के साथ जनपद मथुरा की क्रांतिकारी दल के प्रथम पंक्ति के सदस्य रहे तथा कैवाना क्षेत्र में पुलिस द्वारा घेरकर गिरफ्तार कर 20 अप्रैल, 1943 को मथुरा जेल भेजा गया जिसमें इन्हें 1 साल का कठोर कारावास का दंड मिला। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान सन् 1943 में 1 वर्ष के कारावास का दंड मिला।
11*. विशेष - सन् 1942 की *क्रांति करो या मरो* के दौरान ग्रामीण क्षेत्रों में विध्वंसकारी घटनाएं करने वाले युवकों का एक दल था। इन लोगों को न तो अपने जान की परवाह और न ही अपने परिवार के भरण पोषण की चिंता थी। अंग्रेजों को भारत से उखाड़ फेंकने का उनके मन में एक तूफान था । भारत को आजाद करने का उनके मन में दृढ़ विश्वास एवं पक्का इरादा था इस दल के बारे में *स्वतंत्रता युद्धों में मथुरा जनपदीय सेनानी एवं मथुरा जनपद का राजनैतिक इतिहास* तथा आचार्य जुगल किशोर अभिनंदन ग्रंथ नामक पुस्तकों के लेखक में पूर्ण विवरण देते हुए बताया है कि - इस विध्वंसकारी दल में सरदार रणवीर सिंह (मथुरा), भरत सिंह (जाव), लाल जगन प्रसाद (अडिंग) श्याम लाल (जैंत), रूपराम (परखम),तुलसीराम शर्मा (इरौली), जुनारदार (मांट) आदि प्रमुख क्रांतिकारी युवक थे। महाशय भरत सिंह ने इस दल में बढ़कर अग्रिम रूप से क्रांतिकारी घटनाओं में भाग लिया।जेल अवधि में बड़े पुत्र की अंत्येष्टि करने हेतु अवकाश मांगने पर जेलर द्वारा क्षमा मांगने व आजादी की लड़ाई में हिस्सा न लेने का प्रस्ताव रखा जिसे महाशय जी ने यह कहकर ठुकरा दिया कि *आजादी से बढ़कर नहीं है पुत्र, पुत्र तो और भी पैदा हो सकते हैं।*
12*. अन्य जानकारी - महाशय भरत सिंह आर्य समाज मथुरा के जिला अध्यक्ष रहे तथा आर्य समाज के माध्यम से समाज में फैली कुरीतियों पाखंडों,उंच - नीच, छुआछूत का निवारण करने में तन - मन - धन से योगदान दिया। जाव गांव के जीवन पर्यंत प्रधान रहकर विकास व समाज की सेवा की। गांव में सड़क, बिजली, पानी, पशु चिकित्सालय, डाकखाना, स्कूल आदि की सुविधा दिलाने में संघर्षरत रहे। जब शरीर वृद्ध हो गया, चलने-फिरने और आवागमन में परेशानी होने लगी तो पंचायत बुलाकर सन् 1982 में निर्विरोध प्रधानी श्री खचेरा को सौंप दी। वे त्याग की भावना का जीता जागता सबूत थे।सन् 1947 ई. के मेवात दंगा ग्रस्त क्षेत्रों में गांव-गांव में पंचायत कर शांति स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्वतंत्रता के 25 वें वर्ष के अवसर पर स्वतंत्रता संग्राम में स्मरणीय योगदान के लिए राष्ट्र की ओर से प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने महाशय भरत सिंह को दिनांक 03 अगस्त, 1972 ई को ताम्रपत्र भेंट कर सम्मानित किया।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
304 ईसा पूर्व

पुण्यतिथि
232 ईसा पूर्व

सम्राट अशोक

1*. पूरा नाम - राजा प्रियदर्शी देवताओं का प्रिय अशोक मौर्य
2*. अन्य नाम - 'देवानाम्प्रिय' एवं 'प्रियदर्शी'
3*. जन्म - 304 ईसा पूर्व (संभावित)
4*. जन्म भूमि - पाटलिपुत्र (पटना)
5*. मृत्यु तिथि - 232 ईसा पूर्व
6*. मृत्यु स्थान - पाटलिपुत्र, पटना
7*. पिता/माता - बिन्दुसार, सुभद्रांगी (उत्तरी परम्परा), रानी धर्मा (दक्षिणी परम्परा)
8*. पत्नी - (1) देवी (वेदिस-महादेवी शाक्यकुमारी), (2) कारुवाकी (द्वितीय देवी तीवलमाता), (3) असंधिमित्रा- अग्रमहिषी, (4) पद्मावती, (5) तिष्यरक्षिता
9*. संतान - देवी से- पुत्र महेन्द्र,पुत्री संघमित्रा और पुत्री चारुमती,कारुवाकी से- पुत्र तीवर,पद्मावती से-पुत्र कुणाल (धर्मविवर्धन)और भी कई पुत्रों का उल्लेख है।
10*. उपाधि - राजा, 'देवानाम्प्रिय' एवं 'प्रियदर्शी'
11*. राज्य सीमा - सम्पूर्ण भारत
12*. शासन काल - ईसापूर्व 274 - 232
13*. शासन अवधि - 42 वर्ष लगभग
14*. राज्याभिषेक - 269 और 270 ईसा पूर्व के मध्य
15*. धार्मिक मान्यता - हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म
16*. प्रसिद्धि - अशोक महान, साम्राज्य विस्तारक, बौद्ध धर्म प्रचारक
17*. युद्ध - सम्राट बनने के बाद एक ही युद्ध लड़ा 'कलिंग-युद्ध' (262-260 ई.पू. के बीच)
18*. निर्माण - भवन, स्तूप, मठ और स्तंभ
19*. सुधार-परिवर्तन - शिलालेखों द्वारा जनता में हितकारी आदेशों का प्रचार
20*. राजधानी - पाटलिपुत्र (पटना)
21*. पूर्वाधिकारी - बिन्दुसार (पिता)
22*. वंश - मौर्य
23*. अन्य जानकारी - सम्राट अशोक विश्वप्रसिद्ध एवं शक्तिशाली भारतीय मौर्य राजवंश के महान सम्राट थे। अशोक बौद्ध धर्म के सबसे प्रतापी राजा थे। सम्राट अशोक का पूरा नाम देवानांप्रिय अशोक (राजा प्रियदर्शी देवताओं का प्रिय) था। उनका राजकाल ईसा पूर्व 269 से, 232 प्राचीन भारत में था। मौर्य राजवंश के चक्रवर्ती सम्राट अशोक राज्य का मौर्य साम्राज्य उत्तर में हिन्दुकुश, तक्षशिला की श्रेणियों से लेकर दक्षिण में गोदावरी नदी, सुवर्णगिरी पहाड़ी के दक्षिण तथा मैसूर तक तथा पूर्व में बांग्लादेश, पाटलीपुत्र से पश्चिम में अफ़गानिस्तान, ईरान, बलूचिस्तान तक पहुँच गया था। सम्राट अशोक का साम्राज्य आज का सम्पूर्ण भारत, पाकिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, भूटान, म्यान्मार के अधिकांश भूभाग पर था, यह विशाल साम्राज्य उस समय तक से आज तक का सबसे बड़ा भारतीय साम्राज्य रहा है। चक्रवर्ती सम्राट अशोक विश्व के सभी महान एवं शक्तिशाली सम्राटों एवं राजाओं की पंक्तियों में हमेशा शीर्ष स्थान पर ही रहे हैं। सम्राट अशोक ही भारत के सबसे शक्तिशाली एवं महान सम्राट है। सम्राट अशोक को 'चक्रवर्ती सम्राट अशोक' कहा जाता है, जिसका अर्थ है - 'सम्राटों के सम्राट', और यह स्थान भारत में केवल सम्राट अशोक को मिला है। सम्राट अशोक को अपने विस्तृत साम्राज्य से बेहतर कुशल प्रशासन तथा बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए भी जाना जाता है।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
14 अक्टूबर,1884

पुण्यतिथि
04 मार्च,1939

लाला हरदयाल

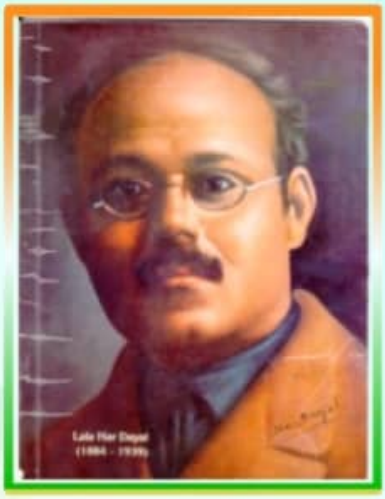

1*. पूरा नाम - लाला हरदयाल
2*. जन्म - 14 अक्टूबर, 1884
3*. जन्म भूमि - दिल्ली, भारत
4*. मृत्यु - 4 मार्च, 1939
5*. मृत्यु स्थान - फिलाडेलफिया, अमेरिका
6*. अभिभावक - पिता - गौरीदयाल माथुर,
माता - श्रीमती भोली रानी
7*. पत्नी - श्रीमती सुन्दर रानी
8*. संतान - एक पुत्री
9*. नागरिकता - भारतीय
10*. प्रसिद्धि - महान क्रांतिकारी
11*. विद्यालय - कैम्ब्रिज मिशन स्कूल, सेण्ट स्टीफेंस कॉलेज दिल्ली, पंजाब विश्वविद्यालय, लाहौर, आक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय
12*. शिक्षा - स्नातक, मास्टर ऑफ़ आर्ट्स (संस्कृत)
13*. सशस्त्र क्रान्ति - प्रथम विश्वयुद्ध आरम्भ होने पर लाला हरदयाल ने भारत में सशस्त्र क्रान्ति को प्रोत्साहित करने के लिए क़दम उठाए। जून, 1915 ई. में जर्मनी से दो जहाज़ों में भरकर बन्दूक़ें बंगाल भेजी गईं, परन्तु मुखबिरों के सूचना पर दोनों जहाज़ जब्त कर लिए गए। हरदयाल ने भारत का पक्ष प्रचार करने के लिए स्विट्ज़रलैण्ड, तुर्की आदि देशों की भी यात्रा की। जर्मनी में उन्हें कुछ समय तक नज़रबन्द कर लिया गया था। वहाँ से वे स्वीडन चले गए, जहाँ उन्होंने अपने जीवन के 15 वर्ष बिताए।
14*. विशेष योगदान - ग़दर पार्टी की स्थापना 25 जून, 1913 ई. में की गई थी। पार्टी का जन्म अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को के 'एस्टोरिया' में अंग्रेजी साम्राज्य को जड़ से उखाड़ फेंकने के उद्देश्य से हुआ। ग़दर पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष सोहन सिंह भकना थे। इसके अतिरिक्त केसर सिंह थथगढ (उपाध्यक्ष), लाला हरदयाल (महामंत्री), लाला ठाकुरदास धुरी (संयुक्त सचिव) और पण्डित कांशीराम मदरोली (कोषाध्यक्ष) थे। 'ग़दर' नामक पत्र के आधार पर ही पार्टी का नाम भी 'ग़दर पार्टी' रखा गया था। 'ग़दर' पत्र ने संसार का ध्यान भारत में अंग्रेज़ों के द्वारा किए जा रहे अत्याचार की ओर दिलाया। नई पार्टी की कनाडा, चीन, जापान आदि में शाखाएँ खोली गईं। लाला हरदयाल इसके महासचिव थे।
15*. अन्य जानकारी - लाला हरदयाल प्रसिद्ध क्रांतिकारी थे। लाला हरदयाल जी ने 'ग़दर पार्टी' की स्थापना की थी। विदेशों में भटकते हुए अनेक कष्ट सहकर लाला हरदयाल जी ने देशभक्तों को भारत की आज़ादी के लिए प्रेरित व प्रोत्साहित किया।हरदयाल जी अपनी ससुराल पटियाला, दिल्ली होते हुए लाहौर पहुँचे और 'पंजाब' नामक अंग्रेज़ी पत्र के सम्पादक बन गए। उनका प्रभाव बढ़ता देखकर सरकारी हल्कों में जब उनकी गिरफ़्तारी की चर्चा होने लगी तो लाला लाजपत राय ने आग्रह करके उन्हें विदेश भेज दिया। वे पेरिस पहुँचे। श्याम कृष्णा वर्मा और भीकाजी कामा वहाँ पहले से ही थे। लाला हरदयाल ने वहाँ जाकर 'वन्दे मातरम्' और 'तलवार' नामक पत्रों का सम्पादन किया। 1910 ई. में हरदयाल सेनफ्राँसिस्को, अमेरिका पहुँचे। वहाँ उन्होंने भारत से गए मज़दूरों को संगठित किया। 'ग़दर' नामक पत्र निकाला।

Scanned with OKEN Scanner

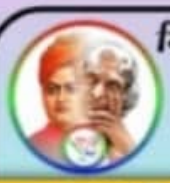

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जन्म दिवस
15 अक्टूबर, 1931

पुण्य तिथि
27 जुलाई, 2015

ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

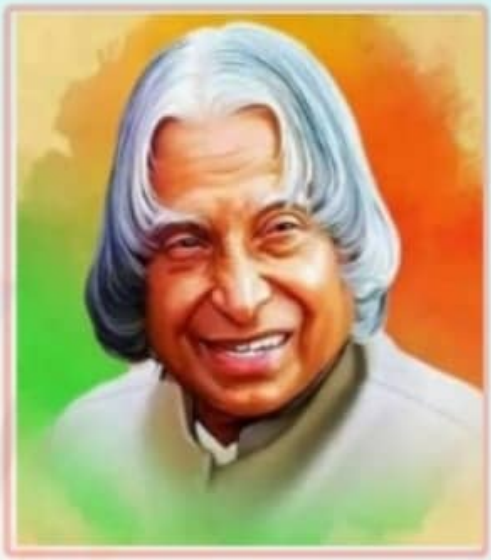

1*. पूरा नाम - अवुल पाकिर जैनुल्लाब्दीन अब्दुल कलाम
2*. अन्य नाम - मिसाइल मैन
3*. जन्म - 15 अक्तूबर, 1931
4*. जन्म भूमि - रामेश्वरम, तमिलनाडु
5*. मृत्यु - 27 जुलाई, 2015
6*. मृत्यु स्थान - शिलांग, मेघालय
7*. अभिभावक - जैनुलाब्दीन
8*. पत्नी - अविवाहित
9*. नागरिकता - भारतीय
10*. प्रसिद्धि - भारतीय मिसाइल कार्यक्रम के जनक
11*. पद - भारत के 11वें राष्ट्रपति
12*. कार्य काल - 25 जुलाई, 2002 से 25 जुलाई, 2007
13*. शिक्षा - स्नातक
14*. विद्यालय - मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी
15*. भाषा - हिन्दी, अंग्रेज़ी, तमिल
16*. पुरस्कार-उपाधि - भारत रत्न (1997), पद्म विभूषण (1990), पद्म भूषण (1981), इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार एवं देशी-विदेशी कई विश्वविद्यालयों से मानद डॉक्टरेट की उपाधि
17*. पुस्तकें - 'विंग्स ऑफ़ फ़ायर' (जीवनी), 'इण्डिया 2020- ए विज़न फ़ॉर द न्यू मिलेनियम', भारत की आवाज़, टर्निंग प्वॉइंट्स, हम होंगे कामयाब
18*. विद्यार्थी जीवन - अब्दुल कलाम जब आठ-नौ साल के थे, तब से सुबह चार बजे उठते थे और स्नान करने के बाद गणित के अध्यापक स्वामीयर के पास गणित पढ़ने चले जाते थे। स्वामीयर की यह विशेषता थी कि जो विद्यार्थी स्नान करके नहीं आता था, वह उसे नहीं पढ़ाते थे। स्वामीयर एक अनोखे अध्यापक थे और पाँच विद्यार्थियों को प्रतिवर्ष नि:शुल्क ट्यूशन पढ़ाते थे। इनकी माता इन्हें उठाकर स्नान कराती थीं और नाश्ता करवाकर ट्यूशन पढ़ने भेज देती थीं। अब्दुल कलाम ट्यूशन पढ़कर साढ़े पाँच बजे वापस आते थे। उसके बाद अपने पिता के साथ नमाज़ पढ़ते थे। फिर क़ुरान शरीफ़ का अध्ययन करने के लिए वह अरेशिक स्कूल (मदरसा) चले जाते थे। इसके पश्चात्त अब्दुल कलाम रामेश्वरम के रेलवे स्टेशन और बस अड्डे पर जाकर समाचार पत्र एकत्र करते थे।
19*. अन्य जानकारी - अवुल पकिर जैनुल्लाब्दीन अब्दुल कलाम जिन्हें डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के नाम से जाना जाता है, भारत के पूर्व राष्ट्रपति, प्रसिद्ध वैज्ञानिक और अभियंता के रूप में विख्यात थे। उनका राष्ट्रपति कार्यकाल 25 जुलाई, 2002 से 25 जुलाई, 2007 तक रहा। उन्हें मिसाइल मैन के नाम से भी जाना जाता है। वह एक गैर राजनीतिक व्यक्ति थे। विज्ञान की दुनिया में चमत्कारिक प्रदर्शन के कारण ही राष्ट्रपति भवन के द्वार उनके लिए स्वत: ही खुल गए। जो व्यक्ति किसी क्षेत्र विशेष में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करता है, उसके लिए सब सहज हो जाता है और कुछ भी दुर्लभ नहीं रहता। अब्दुल कलाम इस उद्धरण का प्रतिनिधित्व करते नज़र आते थे। उन्होंने विवाह नहीं किया था। उनकी जीवन गाथा किसी रोचक उपन्यास के नायक की कहानी से कम नहीं है। चमत्कारिक प्रतिभा के धनी अब्दुल कलाम का व्यक्तित्व इतना उन्नत था कि वह सभी धर्म, जाति एवं सम्प्रदायों के व्यक्ति नज़र आते थे। वह एक ऐसे स्वीकार्य भारतीय थे, जो सभी के लिए 'एक महान् आदर्श' बन चुके हैं। विज्ञान की दुनिया से देश का प्रथम नागरिक बनना कपोल कल्पना मात्र नहीं है, क्योंकि यह एक जीवित प्रणेता की सत्य कथा है। डॉक्टर कलाम ने भारत के विकास स्तर को 2020 तक विज्ञान के क्षेत्र में अत्याधुनिक करने के लिए एक विशिष्ट सोच प्रदान की। यह भारत सरकार के 'मुख्य वैज्ञानिक सलाहकार' भी रहे।

आओ हाथ से हाथ मिलाएं, बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं। #9458278429

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
21 अक्टूबर,1887

पुण्यतिथि
31 जनवरी,1961

श्री कृष्ण सिंह

573

1*. पूरा नाम - श्री कृष्ण सिंह
2*. उपनाम - बिहार केसरी , श्री बाबू
3*. जन्म - 21 अक्टूबर, 1887
4*. जन्म भूमि - मुंगेर ज़िला, बिहार
5*. मृत्यु - 31 जनवरी, 1961
6*. मृत्यु स्थान - पटना, बिहार
7*. नागरिकता - भारतीय
8*. शिक्षा - एम.ए., कानून की डिग्री
9*. विद्यालय - कलकत्ता विश्वविद्यालय, पटना विश्वविद्यालय
10*. राजनीतिक दल - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
11*. पेशा - वकील,राष्ट्रवादी,राजनेता,शिक्षाविद्,प्रशासक
12*. आंदोलन - असहयोग आंदोलन, साइमन कमीशन बहिष्कार,नमक सत्याग्रह, भारत छोड़ो आंदोलन
13*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता सेनानी,बिहार केसरी
14*. जेल यात्रा - कृष्ण सिंह, साइमन कमीशन के बहिष्कार, नमक सत्याग्रह तथा भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेने के कारण जेल गये थे।
15*. विशेष - श्री कृष्ण सिंह , जिन्हें श्री बाबू के नाम से भी जाना जाता है, भारतीय राज्य बिहार (1946 -61) के पहले मुख्यमंत्री थे । द्वितीय विश्व युद्ध की अवधि को छोड़कर, सिन्हा 1937 में पहली कांग्रेस सरकार के समय से लेकर 1961 में अपनी मृत्यु तक बिहार के मुख्यमंत्री थे। देश रत्न राजेंद्र प्रसाद और बिहार विभूति अनुग्रह नारायण सिन्हा (एएन सिन्हा) के साथ , सिन्हा को आधुनिक बिहार के वास्तुकारों में माना जाता है।उन्होंने बैद्यनाथ धाम मंदिर (वैद्यनाथ मंदिर, देवघर) में दलितों के प्रवेश का भी नेतृत्व किया। वे जमींदारी प्रथा को खत्म करने वाले देश के पहले मुख्यमंत्री थे । उन्होंने ब्रिटिश भारत में लगभग आठ वर्षों तक कारावास की सजा काटी । सार्वजनिक भाषण में उनके "शेर जैसी दहाड़" के लिए उन्हें बिहार केसरी के रूप में जाना जाता था। उनके करीबी दोस्त और गांधीवादी बिहार विभूति एएन सिन्हा ने अपने निबंध मेरे श्री बाबू में लिखा है कि, "1921 से, बिहार का इतिहास श्री बाबू के जीवन का इतिहास रहा है" । 'बिहार केसरी' ने वोट मांगने के लिए कभी अपने निर्वाचन क्षेत्र का दौरा नहीं किया क्योंकि उनका मानना था कि उनका काम उनके लिए बोलेगा।
16*. अन्य जानकारी - भारत की पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने कृष्ण सिंह और प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के बीच आदान-प्रदान के पत्रों पर एक पुस्तक का विमोचन किया जिसका शीर्षक था फ्रीडम एंड बियॉन्ड । नेहरू और सिन्हा के बीच पत्राचार स्वतंत्रता के शुरुआती वर्षों में भारतीय लोकतंत्र के निर्माण, केंद्र-राज्य संबंधों, राज्यपाल की भूमिका, नेपाल में अशांति, जमींदारी उन्मूलन और शिक्षा जैसे विषयों को छूता है। सिन्हा अपनी विद्वता और बहुश्रुत होने के लिए जाने जाते थे। उन्होंने 1959 में मुंगेर में सार्वजनिक पुस्तकालय को 17,000 पुस्तकों का अपना निजी संग्रह दिया , जिसका नाम अब उनके नाम पर श्री कृष्ण सेवा सदन रखा गया है।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
22 अक्टूबर,1900

शहादत
19 दिसम्बर,1927

अशफाक उल्ला खाँ

1*. पूरा नाम - अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ
2*. जन्म - 22 अक्टूबर, 1900 ई.
3*. जन्म भूमि - शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश
4*. मृत्यु - 19 दिसम्बर, 1927 ई.
5*. मृत्यु स्थान - फैजाबाद, उत्तर प्रदेश
6*. अभिभावक - पिता- मोहम्मद शफ़ीक़ उल्ला ख़ाँ,
माता- मजहूरुन्निशाँ बेगम
7*. नागरिकता भारतीय
8*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता सेनानी
9*. धर्म - इस्लाम
10*. विशेष योगदान - अशफ़ाक़ उल्ला सदा यह प्रयत्न करते रहे कि उनकी भांति और भी मुस्लिम नवयुवक क्रान्तिकारी दल के सदस्य बनें और देश की आज़ादी में अपना योगदान करें।
11*. विशेष - अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ भारत के ऐसे पहले मुस्लिम थे, जिन्हें किसी षड़यंत्र के तहत फ़ाँसी की सज़ा दी गई थी।
12*. प्रेरक प्रसंग - एक बार अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ बहुत बीमार पड़ गये। उस समय वे 'राम - राम' कहकर पुकारने लगे। माता - पिता ने बहुत कहा कि तुम मुस्लिम हो, खुदा - खुदा कहो, परन्तु उस प्रेम के सच्चे पुजारी के कान में यह आवाज़ ही नहीं पहुँची और वह बराबर 'राम - राम' कहते रहे। माता - पिता तथा अन्य सम्बन्धियों की समझ में यह बात नहीं आई। उसी समय एक अन्य व्यक्ति ने आकर उनके सम्बन्धियों से कहा कि यह रामप्रसाद बिस्मिल को याद कर रहे हैं। यह एक - दूसरे को राम और कृष्ण कहते हैं। अतः एक आदमी जाकर बिस्मिल जी को बुला लाया। उनको देख कर अशफ़ाक़ ने कहा "राम तुम आ गए"। उस समय उनके घर वालों को राम का पता चला। अशफ़ाक़ के इन आचरणों से उनके सम्बन्धी कहते थे कि वे काफ़िर हो गये हैं, किन्तु वे इन बातों की कभी परवाह नहीं करते थे और सदैव एकाग्र चित्त से अपने व्रत पर अटल रहे।
13*. अन्य जानकारी - अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ को भारत के प्रसिद्ध अमर शहीद क्रांतिकारियों में गिना जाता है। देश की आज़ादी के लिए हंसते-हंसते प्राण न्यौछावर करने वाले अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ हिन्दू - मुस्लिम एकता के प्रबल पक्षधर थे। 'काकोरी कांड' के सिलसिले में 19 दिसम्बर, 1927 ई. को उन्हें फैजाबाद जेल में फाँसी पर चढ़ा दिया गया। अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ ऐसे पहले मुस्लिम थे, जिन्हें षड्यंत्र के मामले में फाँसी की सज़ा हुई थी। उनका हृदय बड़ा विशाल और विचार बड़े उदार थे। हिन्दू - मुस्लिम एकता से सम्बन्धित संकीर्णता भरे भाव उनके हृदय में कभी नहीं आ पाये। सब के साथ सम व्यवहार करना उनका सहज स्वभाव था। कठोर परिश्रम, लगन, दृढ़ता, प्रसन्नता, ये उनके स्वभाव के विशेष गुण थे। महात्मा गांधी का प्रभाव अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ के जीवन पर प्रारम्भ से ही था, लेकिन जब 'चौरी चौरा घटना' के बाद गांधीजी ने 'असहयोग आंदोलन' वापस ले लिया, तब उनके मन को अत्यंत पीड़ा पहुँची थी।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
24 अक्टूबर,1914

पुण्यतिथि
23 जुलाई,2012

कैप्टन लक्ष्मी सहगल

1*. पूरा नाम - कैप्टन लक्ष्मी सहगल
2*. अन्य नाम - लक्ष्मी स्वामीनाथन (विवाह से पहले)
3*. जन्म - 24 अक्टूबर, 1914
4*. जन्म भूमि - मद्रास (अब चेन्नई)
5*. मृत्यु - 23 जुलाई, 2012
6*. मृत्यु स्थान - कानपुर
7*. मृत्यु कारण - दिल का दौरा
8*. अभिभावक - पिता- एस. स्वामीनाथन
माता- एवी अमुक्कुट्टी (अम्मू)
9*. पति - कर्नल प्रेम कुमार सहगल
10*. संतान - दो पुत्रियाँ- सुभाषिनी अली और अनीसा पुरी
11*. नागरिकता - भारतीय
12*. पार्टी - मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी
13*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
14*. पद - कैप्टन
15*. शिक्षा- 1932 में विज्ञान में स्नातक, एम.बी.बी.एस., डिप्लोमा इन गाइनिकोलॉजी
16*. विद्यालय - मद्रास मेडिकल कालेज
17*. भाषा - हिन्दी, अंग्रेज़ी
18*. पुरस्कार-उपाधि - पद्म विभूषण
19*. विशेष योगदान - सिंगापुर में उन्होंने न केवल भारत से आए अप्रवासी मज़दूरों के लिए निशुल्क चिकित्सालय खोला बल्कि 'भारत स्वतंत्रता संघ' की सक्रिय सदस्या भी बनीं। वर्ष 1942 में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जब अंग्रेज़ों ने सिंगापुर को जापानियों को समर्पित कर दिया तब उन्होंने घायल युद्धबन्दियों के लिये काफ़ी काम किया। उसी समय ब्रिटिश सेना के बहुत से भारतीय सैनिकों के मन में अपने देश की स्वतंत्रता के लिए काम करने का विचार उठ रहा था।राष्ट्रवादी आंदोलन से प्रभावित लक्ष्मी स्वामीनाथन डॉक्टरी पेशे से निकल कर आजाद हिंद फौज़ में शामिल हो गईं। अब लक्ष्मी सिर्फ डॉक्टर ही नहीं बल्कि कैप्टन लक्ष्मी के नाम से भी लोगों के बीच जानी जाने लगीं। उनके नेतृत्व में आजाद हिन्द फौज की महिला बटालियन रानी लक्ष्मीबाई रेजीमेंट में कई जगहों पर अंग्रेजों से मोर्चा लिया और अंग्रेजों को बता दिया कि देश की नारियां चूड़ियां तो पहनती हैं लेकिन समय आने पर वह बन्दूक भी उठा सकती हैं और उनका निशाना पुरुषों की तुलना में कम नहीं होता।
20*. अन्य जानकारी - कैप्टन लक्ष्मी सहगल महान् स्वतंत्रता सेनानी और आज़ाद हिन्द फ़ौज की अधिकारी थीं। वे आज़ाद हिन्द सरकार में महिला मामलों की मंत्री रहीं। सुभाष चंद्र बोस के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सेना में रहते हुए लक्ष्मी सहगल ने कई सराहनीय काम किये। उनको बेहद मुश्किल जिम्मेदारी सौंपी गई थी। उनके कंधों पर जिम्मेदारी थी फौज में महिलाओं को भर्ती होने के लिए प्रेरणा देना और उन्हें फौज में भर्ती कराना। लक्ष्मी सहगल ने इस जिम्मेदारी को बखूबी अंजाम तक पहुंचाया। जिस जमाने में औरतों का घर से निकालना भी जुर्म समझा जाता था, उस समय उन्होंने 500 महिलाओं की एक फ़ौज तैयार की, जो एशिया मे अपने तरह की पहली विंग थी।

Scanned with OKEN Scanner

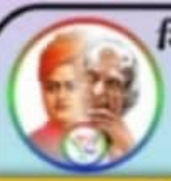

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जन्म दिवस
28 अक्टूबर, 1867

पुण्य तिथि
11 अक्टूबर, 1911

575

सिस्टर निवेदिता

1*. पूरा नाम - मार्ग्रेट एलिज़ाबेथ नोबल
2*. जन्म - 28 अक्टूबर, 1867
3*. जन्म भूमि - डेंगानेन, आयरलैण्ड
4*. मृत्यु - 11 अक्टूबर, 1911
5*. मृत्यु स्थान - दार्जिलिंग, भारत
6*. अभिभावक - रेंवरेंड सैमुअल रिचमंड नोबल और 'मेरी'
7*. गुरु - स्वामी विवेकानन्द
8*. कर्म भूमि - भारत
9*. कर्म-क्षेत्र - शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता
10*. विशेष योगदान - सिस्टर निवेदिता ने अपने दम पर काम करना शुरू कर दिया और बंगाल के कई युवा क्रांतिकारियों के साथ सीधे संबंध बनाए रखे, जिनमें गुप्त संगठन अनुशीलन समिति के लोग भी शामिल थे। उन्होंने अपने व्याख्यानों के माध्यम से कई युवाओं को भारतीय स्वतंत्रता का मुद्दा उठाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने 1905 में कलकत्ता विश्वविद्यालय में लॉर्ड कर्जन के भाषण के बाद उन पर भी हमला किया जहां उन्होंने उल्लेख किया था कि पश्चिम के नैतिक संहिताओं में पूर्व की तुलना में सत्य को अधिक उच्च स्थान दिया गया है। निवेदिता ने अपना स्वयं का शोध किया और इसे सार्वजनिक किया कि कर्जन द्वारा लिखित पुस्तक प्रॉब्लम्स ऑफ द फार ईस्ट में उन्होंने गर्व से वर्णन किया था कि कैसे उन्होंने कोरियाई विदेश कार्यालय के राष्ट्रपति को उनका पक्ष जीतने के लिए अपनी उम्र और विवाह के बारे में गलत बयान दिए थे। यह बयान जब अमृता बाजार पत्रिका और द स्टेट्समैन जैसे समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ तो हंगामा मच गया और कर्जन को माफी मांगने पर मजबूर होना पड़ा।
11*. अन्य जानकारी - सिस्टर निवेदिता की मुलाकात स्वामी विवेकानंद से 1895 में लंदन में हुई और 1898 में वे कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता), भारत आईं। स्वामी विवेकानंद ने उन्हें 25 मार्च 1898 को ब्रह्मचर्य व्रत की दीक्षा देते समय निवेदिता (जिसका अर्थ है "ईश्वर को समर्पित") नाम दिया। नवंबर 1898 में, उन्होंने उत्तरी कलकत्ता के बागबाजार क्षेत्र में लड़कियों का एक स्कूल खोला। वह उन लड़कियों को शिक्षित करना चाहती थीं जो बुनियादी शिक्षा से भी वंचित थीं। 1899 में कलकत्ता में प्लेग महामारी के दौरान, निवेदिता ने गरीब रोगियों की देखभाल की। निवेदिता का नव स्थापित रामकृष्ण मिशन के साथ घनिष्ठ संबंध था। भारतीय राष्ट्रवाद के क्षेत्र में उनके सक्रिय योगदान के कारण , उन्हें तत्कालीन अध्यक्ष स्वामी ब्रह्मानंद के अधीन रामकृष्ण मिशन की गतिविधियों से सार्वजनिक रूप से अलग होना पड़ा। भारत में ब्रिटिश अधिकारियों के हाथों उनके उत्पीड़न से बचने के लिए ऐसा करना पड़ा। वह रामकृष्ण की पत्नी और रामकृष्ण मिशन के पीछे प्रमुख प्रभावों में से एक शारदा देवी के बहुत करीब थीं , और स्वामी विवेकानंद के सभी भाई शिष्यों के साथ भी। 13 अक्टूबर 1911 को दार्जिलिंग में उनकी मृत्यु हो गई। उनके समाधि-लेख में लिखा है, "यहां सिस्टर निवेदिता लेटी हैं जिन्होंने अपना सब कुछ भारत को दे दिया"।सिस्टर निवेदिता भारत की सबसे प्रभावशाली महिला हस्तियों में से एक हैं। उनकी पुस्तक काली, द मदर ने अबनिंद्रनाथ टैगोर को प्रभावित किया जिन्होंने भारत माता को चित्रित किया। 2010 में, कोलकाता के साल्ट लेक सिटी में पश्चिम बंगाल बोर्ड ऑफ सेकेंडरी एजुकेशन के कार्यालय का नाम सिस्टर निवेदिता के नाम पर रखा गया। सिस्टर निवेदिता अकादमी, उनकी स्मृति को समर्पित एक संस्था चेन्नई , तमिलनाडु में स्थापित की गई है। कई स्कूलों और कॉलेजों का नाम उनके नाम पर रखा गया है। 1968 में, भारत सरकार ने उनकी याद में एक डाक टिकट जारी किया। कोलकाता के दक्षिणेश्वर के पास निवेदिता पुल का नाम उनके सम्मान में रखा गया है। 2015 में , हेस्टिंग्स हाउस, अलीपुर, कोलकाता में एक नए सरकारी डिग्री कॉलेज का नाम सिस्टर निवेदिता के नाम पर रखा गया।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
04 नवम्बर,1929

पुण्यतिथि
21 अप्रैल,2013

शकुंतला देवी

577

1*. पूरा नाम - शकुन्तला देवी
2*. अन्य नाम - मानव कंप्यूटर
3*. जन्म - 4 नवम्बर 1929
4*. जन्म भूमि - बंगलोर, कर्नाटक
5*. मृत्यु - 21 अप्रैल 2013
6*. मृत्यु स्थान - बेंगळूरू, कर्नाटक
7*. पिता - सीवी सुंदरराज राव
8*. जीवन साथी - परितोष बनर्जी
9*. कर्म भूमि - भारत
10*. मुख्य रचनाएँ - 'फन विद नंबर्स', 'एस्ट्रोलॉजी फॉर यू', 'पजल्स टू पजल्स यू', 'मैथब्लीट'।
11*. विषय - गणित, ज्योतिष
12*. नागरिकता - भारतीय
13*. विशेष - शकुंतला ने 6 वर्ष की उम्र में मैसूर विश्वविद्यालय में एक बड़े कार्यक्रम में अपनी गणना क्षमता का प्रदर्शन किया। वर्ष 1977 में शकुंतला ने 201 अंकों की संख्या का 23वां वर्गमूल बिना कागज़ कलम के निकाल दिया। उन्होने 13 अंकों वाली 2 संख्याओं का गुणनफल 26 सेकंड बता दिया था। आर्थिक तंगी के चलते उन्हें दस साला होने पर ही संत थेरेसा कोंवेंट चमाराजपेट में कक्षा 1 में भर्ती किया जा सका। माँ बाप के पास स्कूल की फीस (शुल्क मात्र दो रुपया प्रति माह) देने के लिए भी पैसे नहीं थे लिहाजा तीन माह के बाद ही उन्हें स्कूल से चलता कर दिया गया। तकरीबन गुट्टाहल्ली का झोंपड पट्टी नुमा इलाका ही था गाविपुरम जहां आपका लालन पालन हुआ। एक गणित विश्वविद्यालय और शोध एवं विकास केंद्र खोलना आपका स्वप्न था जहां अभिनव तकनीकों के ज़रिये जनमानस को पेचीला गणीतिय सवालों के हल करने के शोर्टकट्स और प्रभावशाली स्मार्ट तरीकों में प्रवीण बनाया जा सके। टाइम्स आफ इंडिया के साथ एक बात चीत में आपने कहा था -मैं अपनी क्षमता तो लोगों को अंतरित नहीं कर सकती लेकिन एक संख्यात्मक रुझान तेज़ी से विकसित कर लेने में मैं जनसामान्य की मदद ज़रूर कर सकती हूँ। बड़ी संख्या है ऐसे लोगों की जिनकी तर्क शक्ति का दोहन नहीं किया जा सका है। आप इस मिथक को तोड़के महाप्रयाण यात्रा पर निकल गईं हैं कि लड़कियों का हाथ गणित में तंग होता है।
14*. अन्य जानकारी - शकुन्तला देवी जिन्हें आम तौर पर "मानव कम्प्यूटर" के रूप में जाना जाता है, बचपन से ही अद्भुत प्रतिभा की धनी एवं मानसिक परिकलित्र (scientific calculator) थीं। उनकी प्रतिभा को देखते हुए उनका नाम 1982 में 'गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स' में भी शामिल किया गया। शकुन्तला देवी के अंदर पिछली सदी की किसी भी तारीख का दिन क्षण भर में बताने की क्षमता थी। उन्होंने कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। वह ज्योतिषी भी थीं। इनके 84वें जन्मदिन पर 4 नवम्बर 2013 को गूगल ने उनके सम्मान में उन्हें गूगल डूडल समर्पित किया।

Scanned with OKEN Scanner

भारत के महान रत्न

जयंती :-
05 नवम्बर,1917

पुण्यतिथि
29 अगस्त,2007

बनारसी दास गुप्ता

578

1*. पूरा नाम - बनारसी दास गुप्ता
2*. जन्म - 05 नवम्बर, 1917
3*. जन्म भूमि- भिवानी, हरियाणा
4*. मृत्यु - 29 अगस्त, 2007
5*. पिता - लाला रामसरुप दास
6*. नागरिकता - भारतीय
7*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता सेनानी
8*. धर्म - हिन्दू
9*. जेल यात्रा - राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी और पण्डित जवाहरलाल नेहरू के प्रभाव से वे देशी रियासतों की दमनकारी नीति का विरोध करने के लिए प्रजामंडल आंदोलन में भाग लेने लगे थे। बनारसी दास गुप्ता जी की गतिविधियां देखकर जींद रियासत में उन्हें 1941 ई. में गिरफ्तार करके फरीदकोट जेल में बंद कर दिया था। 'भारत छोड़ो आंदोलन' में भी बनारसी दास गुप्ता ने भाग लिया और 1942 से 1944 ई. तक जेल में बंद रहे।
10*. कार्य काल - हरियाणा के मुख्यमंत्री- 01 दिसम्बर, 1975 से 30 अप्रॅल, 1977 तक
11*. विद्यालय - 'बिड़ला कॉलेज', पिलानी
12*. पार्टी - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
13*. अन्य जानकारी - बनारसी दास गुप्ता एक प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी थे, उन्होंने स्वतंत्रता-पूर्व काल में तत्कालीन जींद राज्य में परजा मंडल की स्थापना की और जींद राज्य में एक जिम्मेदार सरकार की स्थापना के लिए आंदोलन चलाया और कई बार जेल गए। उन्होंने कई पदयात्राएँ कीं, भूदान आंदोलन के दौरान हजारों एकड़ ज़मीन एकत्र की और उसे भूमिहीनों में वितरित किया। उन्होंने दहेज प्रथा, अस्पृश्यता और बाल विवाह जैसी पारंपरिक सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ़ लड़ाई लड़ी । वे विधवा पुनर्विवाह के अधिकारों के लिए खड़े हुए और दहेज के बिना सामुदायिक विवाह की परंपरा शुरू की। आपने 'अपना देश', 'हरियाणा केसरी' और 'हरियाणा कांग्रेस पत्रिका' के द्वारा राजनैतिक जागृति तथा समाज सुधार के क्षेत्र में योगदान किया।आप अखिल भारतीय वैश्य महासंघ (वैस महा सम्मेलन) के संस्थापक थे; महाराज अग्रसेन चिकित्सा शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान सोसायटी, हरियाणा के संस्थापक एवं संरक्षक, वैश्य महाविद्यालय ट्रस्ट के ट्रस्टी जो (i) वैश्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय और (ii) वैश्य मॉडल स्कूल चलाता है, हरियाणा प्राकृतिक चिकित्सालय के संस्थापक एवं ट्रस्टी एवं सदस्य, (i) वैश्य पीजी बॉयज कॉलेज, (ii) आदर्श महिला महाविद्यालय (जो इस संस्थान का भी संस्थापक है) की प्रबंध समिति के अध्यक्ष और (iii) अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के मुख्य संरक्षक थे। वे 20 से अधिक वर्षों तक अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के अध्यक्ष रहे और व्यापारिक समुदाय को एकजुट करने के लिए कड़ी मेहनत की।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
07 नवम्बर,1888

पुण्यतिथि
21 नवम्बर,1970

चन्द्रशेखर वेंकट रामन

1*. पूरा नाम - चंद्रशेखर वेंकट रामन
2*. अन्य नाम - सी.वी. रमन
3*. जन्म - 7 नवम्बर, 1888
4*. जन्म भूमि - तिरुचिरापल्ली, तमिलनाडु
5*. मृत्यु - 21 नवम्बर, 1970
6*. मृत्यु स्थान - बेंगळूरू
7*. अभिभावक - पिता- चंद्रशेखर अय्यर,
माता - पार्वती अम्माल
8*. पत्नी - त्रिलोकसुंदरी
9*. कर्म भूमि - भारत, ब्रिटेन
10*. कर्म-क्षेत्र - विज्ञान
11*. विषय - भौतिकी
12*. खोज - रामन प्रभाव
13*. शिक्षा - एम. ए.
14*. विद्यालय - प्रेसीडेंसी कॉलेज
15*. पुरस्कार-उपाधि - 'भारत रत्न', 'नोबेल पुरस्कार', 'लेनिन पुरस्कार'
16*. नागरिकता - भारतीय
17*. विशेष - विदेश यात्रा के समय उनके जीवन में एक महत्त्वपूर्ण घटना घटित हुई। सरल शब्दों में पानी के जहाज़ से उन्होंने भू - मध्य सागर के गहरे नीले पानी को देखा। इस नीले पानी को देखकर श्री रामन के मन में विचार आया कि यह नीला रंग पानी का है या नीले आकाश का सिर्फ़ परावर्तन। बाद में रामन ने इस घटना को अपनी खोज द्वारा समझाया कि यह नीला रंग न पानी का है न ही आकाश का। यह नीला रंग तो पानी तथा हवा के कणों द्वारा प्रकाश के प्रकीर्णन से उत्पन्न होता है क्योंकि प्रकीर्णन की घटना में सूर्य के प्रकाश के सभी अवयवी रंग अवशोषित कर ऊर्जा में परिवर्तित हो जाते हैं, परंतु नीले प्रकाश को वापस परावर्तित कर दिया जाता है। सात साल की कड़ी मेहनत के बाद रामन ने इस रहस्य के कारणों को खोजा था। उनकी यह खोज 'रामन प्रभाव' के नाम से प्रसिद्ध है।
18*. अन्य जानकारी - चंद्रशेखर वेंकट रामन पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने वैज्ञानिक संसार में भारत को ख्याति दिलाई। प्राचीन भारत में विज्ञान की उपलब्धियाँ थीं, जैसे- शून्य और दशमलव प्रणाली की खोज, पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने के बारे में तथा आयुर्वेद के फ़ारमूले इत्यादि। मगर पूर्णरूप से विज्ञान के प्रयोगात्मक कोण में कोई विशेष प्रगति नहीं हुई थी। रामन ने उस खोये रास्ते की खोज की और नियमों का प्रतिपादन किया जिनसे स्वतंत्र भारत के विकास और प्रगति का रास्ता खुल गया। रामन ने स्वाधीन भारत में विज्ञान के अध्ययन और शोध को जो प्रोत्साहन दिया उसका अनुमान कर पाना कठिन है। आप सन् 1924 ई. में अनुसंधानों के लिए रॉयल सोसायटी, लंदन के फैलो बनाए गए। रामन प्रभाव के लिए आपको सन् 1930 ई. मे नोबेल पुरस्कार दिया गया। रामन प्रभाव के अनुसंधान के लिए नया क्षेत्र खुल गया। 1948 में सेवानिवृति के बाद उन्होंने रामन् शोध संस्थान की बैंगलोर में स्थापना की और इसी संस्थान में शोधरत रहे। 1954 ई. में भारत सरकार द्वारा भारत रत्न की उपाधि से विभूषित किया गया। आपको 1957 में लेनिन शान्ति पुरस्कार भी प्रदान किया था। 28 फरवरी 1928 को चन्द्रशेखर वेंकट रामन् ने रामन प्रभाव की खोज की थी जिसकी याद में भारत में इस दिन को प्रत्येक वर्ष 'राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
14 नवम्बर,1889

पुण्यतिथि
27 मई ,1964

पं. जवाहरलाल नेहरू

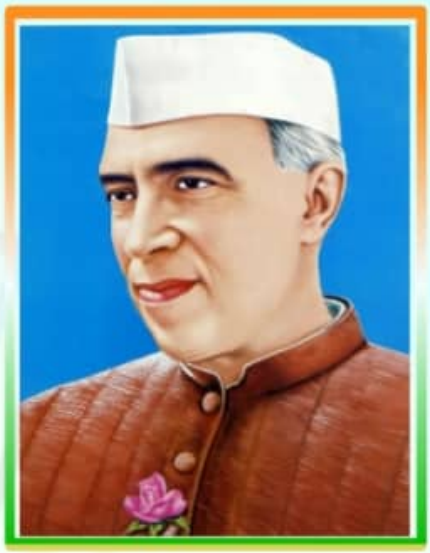

1*. पूरा नाम - पंडित जवाहरलाल नेहरू
2*. अन्य नाम - चाचा नेहरू, पंडित जी
3*. जन्म - 14 नवम्बर, 1889
4*. जन्म भूमि - इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
5*. मृत्यु - 27 मई, 1964
6*. मृत्यु स्थान - दिल्ली
7*. मृत्यु कारण - दिल का दौरा
8*. अभिभावक - पं. मोतीलाल नेहरू और स्वरूप रानी
9*. पत्नी - कमला नेहरू
10*. संतान - इंदिरा गाँधी
11*. स्मारक - शांतिवन, दिल्ली
12*. नागरिकता - भारतीय
13*. पार्टी - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
14*. पद - भारत के प्रथम प्रधानमंत्री
15*. कार्य काल - 15 अगस्त 1947-27 मई 1964
16*. शिक्षा - बैरिस्टर
17*. विद्यालय - इंग्लैण्ड के हैरो स्कूल, केंब्रिज के ट्रिनिटी कॉलेज
18*. भाषा - हिन्दी, अंग्रेज़ी
19*. जेल यात्रा - नौ बार जेल यात्रा की
20*. पुरस्कार-उपाधि - भारत रत्न सम्मान
21*. रचनाएँ - विश्व इतिहास की झलक, भारत की खोज आदि
22*. स्वतंत्रता में योगदान - जवाहरलाल नेहरू महात्मा गांधी के कंधे से कंधा मिलाकर अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ लड़े। चाहे असहयोग आंदोलन की बात हो या फिर नमक सत्याग्रह या फिर 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन की बात हो उन्होंने गांधी जी के हर आंदोलन में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। मलिक ने बताया कि नेहरू की विश्व के बारे में जानकारी से गांधी जी काफ़ी प्रभावित थे और इसीलिए आज़ादी के बाद वह उन्हें प्रधानमंत्री पद पर देखना चाहते थे। सन् 1920 में उन्होंने उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ ज़िले में पहले किसान मार्च का आयोजन किया। 1923 में वह अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के महासचिव चुने गए।
23*. अन्य जानकारी - देशभर में जवाहरलाल नेहरू का जन्मदिन '14 नवंबर' बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। नेहरू बच्चों से बेहद प्यार करते थे और यही कारण था कि उन्हें प्यार से चाचा नेहरू बुलाया जाता था। एक बार चाचा नेहरू से मिलने एक सज्जन आए। बातचीत के दौरान उन्होंने नेहरू जी से पूछा, "पंडित जी, आप सत्तर साल के हो गये हैं, लेकिन फिर भी हमेशा बच्चों की तरह तरोताज़ा दिखते हैं, जबकि आपसे छोटा होते हुए भी मैं बूढ़ा दिखता हूँ।" नेहरू जी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "इसके तीन कारण हैं।

1. मैं बच्चों को बहुत प्यार करता हूँ। उनके साथ खेलने की कोशिश करता हूँ, इससे मैं अपने आपको उनको जैसा ही महसूस करता हूँ।
2. मैं प्रकृति प्रेमी हूँ, और पेड़-पौधों, पक्षी, पहाड़, नदी, झरनों, चाँद, सितारों से बहुत प्यार करता हूँ। मैं इनके साथ में जीता हूँ, जिससे यह मुझे तरोताज़ा रखते हैं।
3. अधिकांश लोग सदैव छोटी-छोटी बातों में उलझे रहते हैं और उसके बारे में सोच-सोचकर दिमाग़ ख़राब करते हैं। मेरा नज़रिया अलग है और मुझ पर छोटी-छोटी बातों का कोई असर नहीं होता।" यह कहकर नेहरू जी बच्चों की तरह खिलखिलाकर हंस पड़े।

जवाहरलाल नेहरू हमारी पीढ़ी के एक महानतम व्यक्ति थे। वह एक ऐसे अद्वितीय राजनीतिज्ञ थे, जिनकी मानव-मुक्ति के प्रति सेवाएं चिरस्मरणीय रहेंगी। स्वाधीनता-संग्राम के योद्धा के रूप में वह यशस्वी थे और आधुनिक भारत के निर्माण के लिए उनका अंशदान अभूतपूर्व था।- डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
कार्तिक पूर्णिमा,1469

पुण्यतिथि
22 सितम्बर,1539

गुरु नानक देव

1*. पूरा नाम - गुरु नानक देव
2*. अन्य नाम - गुरु नानक
3*. जन्म - कार्तिक पूर्णिमा, 1469
4*. जन्म भूमि - तलवंडी, पंजाब, भारत
5*. मृत्यु - 22 सितंबर, 1539
6*. मृत्यु स्थान -; भारत
7*. अभिभावक - पिता- कालू, माता- तृप्ता
8*. पत्नी - सुलक्खनी
9*. संतान - श्रीचन्द, लक्ष्मीदास
10*. कर्म भूमि - भारत
11*. कर्म-क्षेत्र - समाज सुधारक
12*. मुख्य रचनाएँ - जपुजी, तखारी' राग के बारहमाहाँ
13*. भाषा - फ़ारसी, मुल्तानी, पंजाबी, सिंधी , ब्रजभाषा, खड़ीबोली
14*. प्रसिद्धि - सिक्खों के प्रथम गुरु
15*. नागरिकता - भारतीय
16*. उत्तराधिकारी - गुरु अंगद देव
17*. विशेष - गुरुनानक देव जी ने अपने अनुयायियों को जीवन की दस शिक्षाएँ दी-
1*. ईश्वर एक है। 2*. सदैव एक ही ईश्वर की उपासना करो। 3*. ईश्वर सब जगह और प्राणी मात्र में मौजूद है। 4*. ईश्वर की भक्ति करने वालों को किसी का भय नहीं रहता। 5*. ईमानदारी से और मेहनत कर के उदरपूर्ति करनी चाहिए। 6*. बुरा कार्य करने के बारे में न सोचें और न किसी को सताएँ। 7*. सदैव प्रसन्न रहना चाहिए। ईश्वर से सदा अपने लिए क्षमा माँगनी चाहिए 8*. मेहनत और ईमानदारी की कमाई में से ज़रूरतमंद को भी कुछ देना चाहिए। 9*. सभी स्त्री और पुरुष बराबर हैं। 10*. भोजन शरीर को ज़िंदा रखने के लिए ज़रूरी है पर लोभ-लालच व संग्रहवृत्ति बुरी है।
18*. अन्य जानकारी - गुरुनानक का व्यक्तित्व असाधारण था। उनमें पैगम्बर, दार्शनिक, राजयोगी, गृहस्थ, त्यागी, धर्म-सुधारक, समाज-सुधारक, कवि, संगीतज्ञ, देशभक्त, विश्वबन्धु सभी के गुण उत्कृष्ट मात्रा में विद्यमान थे। उनमें विचार-शक्ति और क्रिया - शक्ति का अपूर्व सामंजस्य था। उन्होंने पूरे देश की यात्रा की। लोगों पर उनके विचारों का असाधारण प्रभाव पड़ा। उनमें सभी गुण मौजूद थे। पैगंबर, दार्शनिक, राजयोगी, गृहस्थ, त्यागी, धर्मसुधारक, कवि, संगीतज्ञ, देशभक्त, विश्वबंधु आदि सभी गुण जैसे एक व्यक्ति में सिमटकर आ गए थे। उनकी रचना 'जपुजी' का सिक्खों के लिए वही महत्त्व है जो हिंदुओं के लिए गीता का है।

Scanned with OKEN Scanner

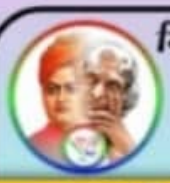

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जन्म दिवस
30 जून,1830

पुण्य तिथि
16नवम्बर,1857

ऊदा देवी

1*. पूरा नाम - ऊदा देवी
2*. अन्य नाम - जगरानी
3*. मृत्यु - 16 नवम्बर, 1857
4*. मृत्यु स्थान - सिकंदर बाग़, लखनऊ
5*. मृत्यु कारण - शहादत
6*. पति - मक्का पासी
7*. स्मारक - ऊदा देवी की एक मूर्ति 'सिकन्दर बाग़' परिसर में कुछ ही वर्ष पूर्व स्थापित की गयी है।
8*. नागरिकता - भारतीय
9*. आन्दोलन - भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन
10*. प्रसिद्धि - महिला स्वतंत्रता सेनानी
11*. विशेष - ऊदा देवी ने वर्ष 1857 के 'प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम' के दौरान भारतीय सिपाहियों की ओर से युद्ध में भाग लिया था। ये अवध के छठे नवाब वाजिद अली शाह के महिला दस्ते की सदस्या थीं। इस विद्रोह के समय हुई लखनऊ की घेराबंदी के समय लगभग 2000 भारतीय सिपाहियों के शरण स्थल 'सिकन्दर बाग़' पर ब्रिटिश फौजों द्वारा चढ़ाई की गयी और 16 नवंबर,1857 को बाग़ में शरण लिये इन 2000 भारतीय सिपाहियों का ब्रिटिश फौजों द्वारा संहार कर दिया गया था। इस लड़ाई के दौरान ऊदा देवी ने पुरुषों के वस्त्र धारण कर स्वयं को एक पुरुष के रूप में तैयार किया था। लड़ाई के समय वे अपने साथ एक बंदूक और कुछ गोला-बारूद लेकर एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ गयी थीं। उन्होने हमलावर ब्रिटिश सैनिकों को सिकंदर बाग़ में तब तक प्रवेश नहीं करने दिया, जब तक कि उनका प्रति गोला बारूद समाप्त नहीं हो गया। ऊदा देवी 16 नवम्बर, 1857 को 32 अंग्रेज़ सैनिकों को मौत के घाट उतारकर वीरगति को प्राप्त हुईं। ब्रिटिश सैनिकों ने उन्हें उस समय गोली मारी, जब वे पेड़ से उतर रही थीं। उसके बाद जब ब्रिटिश लोगों ने जब बाग़ में प्रवेश किया, तो उन्होने ऊदा देवी का पूरा शरीर गोलियों से छलनी कर दिया। इस लड़ाई का स्मरण कराती ऊदा देवी की एक मूर्ति सिकन्दर बाग़ परिसर में कुछ ही वर्ष पूर्व स्थापित की गयी है।
12*. अन्य जानकारी - ऊदा देवी 'पासी' जाति से सम्बंधित एक वीरांगना थीं, जिन्होंने 1857 के 'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम' में प्रमुखता से भाग लिया था। ये अवध के नवाब वाजिद अली शाह के महिला दस्ते की सदस्या थीं। ऊदा देवी लखनऊ की रहने वाली थीं और उन्होंने लखनऊ के सिकन्दर बाग़ में एक पेड़ पर चढ़कर दो दर्जन से अधिक अंग्रेज़ सिपाहियों को मार डाला था। यद्यपि इस लड़ाई में काफ़ी देर तक संघर्ष करने के बाद ऊदा देवी भी शहीद हो गईं। कहा जाता है कि उनकी इस स्तब्ध कर देने वाली वीरता से अभिभूत होकर अंग्रेज़ काल्विन कैम्बेल ने हैट उतारकर शहीद ऊदा देवी को श्रद्धांजलि दी थी। लंदन टाइम्स' के संवाददाता विलियम हावर्ड रसेल ने लड़ाई के समाचारों का जो डिस्पैच लंदन भेजा था, उसमें पुरुष वेशभूषा में एक स्त्री द्वारा पीपल के पेड़ से गोलियाँ चलाने तथा अंग्रेज़ सेना को भारी क्षति पहुँचाने का उल्लेख प्रमुखता से किया गया है। संभवतः 'लंदन टाइम्स' में छपी खबरों के आधार पर ही कार्ल मार्क्स ने भी अपनी टिप्पणी में इस घटना को समुचित स्थान दिया।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
28 जनवरी,1865

पुण्यतिथि
17 नवम्बर,1928

लाला लाजपत राय

1*. पूरा नाम - लाला लाजपत राय
2*. अन्य नाम - लालाजी
3*. जन्म - 28 जनवरी, 1865
4*. जन्म भूमि - फ़रीदकोट ज़िला, पंजाब
5*. मृत्यु - 17 नवंबर, 1928
6*. मृत्यु स्थान - लाहौर,अविभाजित भारत
7*. अभिभावक - लाला राधाकृष्ण अग्रवाल
8*. नागरिकता - भारतीय
9*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता सेनानी
10*. पार्टी - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
11*. शिक्षा - वक़ालत
12*. विद्यालय - राजकीय कॉलेज, लाहौर
13*. जेल यात्रा - 1921 में असहयोग आंदोलन के दौरान
14*. विशेष - योगदान पंजाब के 'दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज' (डी.ए.वी. कॉलेज) की स्थापना
15*. रचनाएँ - 'पंजाब केसरी', 'यंग इंण्डिया', 'भारत का इंग्लैंड पर ऋण', 'भारत के लिए आत्मनिर्णय', 'तरुण भारत'।
16*. विशेष - लाजपत राय के प्रभावी वाक्य - 'जो अमोघ और अधिकतम राष्ट्रीय शिक्षा लाभकारी राष्ट्रीय निवेश है, राष्ट्र की सुरक्षा के लिए उतनी ही आवश्यक है, जितनी भौतिक प्रतिरक्षा के लिए सैन्य व्यवस्था।
ऐसा कोई भी श्रम रूप अपयशकर नहीं है, जो सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक हो और समाज को जिसकी आवश्यकता हो।'
'राजनीतिक प्रभुत्व आर्थिक शोषण की ओर ले जाता है। आर्थिक शोषण पीड़ा, बीमारी और गंदगी की ओर ले जाता है और ये चीजें धरती के विनीततम लोगों को सक्रिय या निष्क्रिय बगावत की ओर धकेलती हैं और जनता में आज़ादी की चाह पैदा करती हैं।'
'सब एक हो जाओ, अपना कर्तव्य जानो, अपने धर्म को पहचानो, तुम्हारा सबसे बड़ा धर्म तुम्हारा राष्ट्र है। राष्ट्र की मुक्ति के लिए, देश के उत्थान के लिए कमर कस लो, इसी में तुम्हारी भलाई है और इसी से समाज का उपकार हो सकता है।'
लालाजी ने एक बार देशवासियों से कहा था कि-"मैंने जो मार्ग चुना है, वह ग़लत नहीं है। हमारी कामयाबी एकदम निश्चित है। मुझे जेल से जल्द छोड़ दिया जाएगा और बाहर आकर मैं फिर से अपने कार्य को आगे बढ़ाऊंगा, ऐसा मेरा विश्वास है। यदि ऐसा न हुआ तो मैं उसके पास जाऊंगा, जिसने हमें इस दुनिया में भेजा था। मुझे उसके पास जाने में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति नहीं होगी।"
17*. अन्य जानकारी - लाला लाजपत राय को भारत के महान् क्रांतिकारियों में गिना जाता है। आजीवन ब्रिटिश राजशक्ति का सामना करते हुए अपने प्राणों की परवाह न करने वाले लाला लाजपत राय को 'पंजाब केसरी' भी कहा जाता है। लालाजी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गरम दल के प्रमुख नेता तथा पूरे पंजाब के प्रतिनिधि थे। उन्हें 'पंजाब के शेर' की उपाधि भी मिली थी। उन्होंने क़ानून की शिक्षा प्राप्त कर हिसार में वकालत प्रारम्भ की थी, किन्तु बाद में स्वामी दयानंद के सम्पर्क में आने के कारण वे आर्य समाज के प्रबल समर्थक बन गये। यहीं से उनमें उग्र राष्ट्रीयता की भावना जागृत हुई। लालाजी को पंजाब में वही स्थान प्राप्त है, जो महाराष्ट्र में लोकमान्य तिलक को प्राप्त है। लालाजी ने अमरीका के न्यूयॉर्क शहर में अक्टूबर, 1917 में 'इंडियन होमरूल लीग ऑफ़ अमेरिका' नाम से एक संगठन की स्थापना की थी। 20 फ़रवरी, 1920 को जब वे भारत लौटे, उस समय तक वे देशवासियों के लिए एक नायक बन चुके थे।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
19 नवम्बर,1917

पुण्यतिथि
31 अक्टूबर,1984

इंदिरा प्रियदर्शिनी गांधी

1*. पूरा नाम - इंदिरा प्रियदर्शनी गाँधी
2*. अन्य नाम - इन्दु
3*. जन्म - 19 नवम्बर, 1917
4*. जन्म भूमि - इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
5*. मृत्यु - 31 अक्टूबर, 1984
6*. मृत्यु स्थान - दिल्ली
7*. मृत्यु कारण - हत्या
8*. अभिभावक - जवाहरलाल नेहरू, कमला नेहरू
9*. पति - फ़ीरोज़ गाँधी
10*. संतान - राजीव गाँधी और संजय गाँधी
11*. स्मारक - शक्ति स्थल, दिल्ली
12*. नागरिकता - भारतीय
13*. प्रसिद्धि - 1971 के भारत -पाकिस्तान युद्ध में भारत की विजय
14*. पार्टी - काँग्रेस
15*. पद - भारत की तृतीय प्रधानमंत्री
16*. कार्य काल - 19 जनवरी, 1966 से 24 मार्च, 1977, 14 जनवरी, 1980 से 31 अक्टूबर, 1984
17*. विद्यालय - विश्वभारती विश्वविद्यालय बंगाल, इंग्लैंड की ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी, शांति निकेतन
18*. भाषा - हिन्दी, अंग्रेज़ी
19*. जेल यात्रा - 1942 में अगस्त क्रांति में जेल यात्रा, अक्टूबर, 1977 और दिसम्बर, 1978
20*. पुरस्कार-उपाधि - भारत रत्न सम्मान
21*. विशेष योगदान - योगदान - इंदिरा गांधी ने अपने बचपन से ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कार्यों में योगदान आरंभ कर दिया था। आपके पैतृक निवास आनंद भवन का वातावरण राष्ट्रीय जीवन दर्शन और स्वतंत्रता आंदोलन का केंद्रबिंदु था। आपने बचपन में ही बाल चरखा संघ की स्थापना की। 1930 में असहयोग आंदोलन के दौरान कांग्रेस पार्टी की सहायता करने के लिए बच्चों की एक वानरी सेना बनाई, जो पुलिस तथा अन्य सरकारी गतिविधियों की सूचना कांग्रेस को देती रही। सन् 1942 की अगस्त की महाक्रांति के आंदोलन में आपने जेलयात्रा की। भारत की आजादी के अवसर पर दिल्ली में जो भीषण हिंदू-मुस्लिम-दंगा हुआ, उसमें गांधी जी के निर्देशानुसार आपने सेवा और शांतिस्थापन का काम किया। बैंकों का राष्ट्रीयकरण।
21*. अन्य जानकारी - इंदिरा प्रियदर्शनी गाँधी न केवल भारतीय राजनीति पर छाई रहीं बल्कि विश्व राजनीति के क्षितिज पर भी वे एक प्रभाव छोड़ गईं। श्रीमती इंदिरा गाँधी का जन्म नेहरू ख़ानदान में हुआ था। इंदिरा गाँधी, भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की इकलौती पुत्री थीं। आज इंदिरा गाँधी को सिर्फ़ इस कारण नहीं जाना जाता कि वह पंडित जवाहरलाल नेहरू की बेटी थीं बल्कि इंदिरा गाँधी अपनी प्रतिभा और राजनीतिक दृढ़ता के लिए 'विश्वराजनीति' के इतिहास में जानी जाती हैं और इंदिरा गाँधी को 'लौह-महिला' के नाम से संबोधित किया जाता है। ये भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री थीं।स्वर्ण मन्दिर पर हमले के प्रतिकार में पाँच महीने के बाद ही 31 अक्टूबर 1984 को श्रीमती गाँधी के आवास पर तैनात उनके दो सिक्ख अंगरक्षकों ने गोली मारकर उनकी हत्या कर दी। भारत के जितने भी प्रधानमंत्री हुए हैं, उन सभी की अनेक विशेषताएँ हो सकती हैं, लेकिन इंदिरा गाँधी के रूप में जो प्रधानमंत्री भारत भूमि को प्राप्त हुआ, वैसा प्रधानमंत्री अभी तक दूसरा नहीं हुआ है क्योंकि एक प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने विभिन्न चुनौतियों का मुक़ाबला करने में सफलता प्राप्त की। युद्ध हो, विपक्ष की ग़लतियाँ हों, कूटनीति का अंतर्राष्ट्रीय मैदान हो अथवा देश की कोई समस्या हो- इंदिरा गाँधी ने अक्सर स्वयं को सफल साबित किया। इंदिरा गाँधी, नेहरू के द्वारा शुरू की गई औद्योगिक विकास की अर्द्ध समाजवादी नीतियों पर क़ायम रहीं। उन्होंने सोवियत संघ के साथ नज़दीकी सम्बन्ध क़ायम किए और पाकिस्तान-भारत विवाद के दौरान समर्थन के लिए उसी पर आश्रित रहीं। जिन्होंने इंदिरा गाँधी के प्रधानमंत्रित्व काल को देखा है, वे लोग यह मानते हैं कि इंदिरा गाँधी में अपार साहस, निर्णय शक्ति और धैर्य था।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
20 नवम्बर,1929

पुण्यतिथि
18 जून, 2021

मिल्खा सिंह

1*. पूरा नाम - मिलखा सिंह
2*. अन्य नाम - 'उड़ता सिख'
3*. जन्म - 20 नवंबर, 1929
4*. जन्म भूमि - गोविंदपुरा, पंजाब (आज़ादी पूर्व)
5*. मृत्यु - 18 जून, 2021
6*. मृत्यु स्थान - चंडीगढ़, पंजाब
7*. पत्नी - निर्मल कौर
8*. संतान - जीव मिलखा सिंह
9*. कर्म भूमि - भारत
10*. खेल-क्षेत्र - ट्रैक एंड फील्ड
11*. पुरस्कार-उपाधि - पद्मश्री (1959), एशियाई खेलों (1958), (1962), कॉमनवेल्थ खेलों, (1958)
12*. प्रसिद्धि - धावक (उड़न सिक्ख)
13*. नागरिकता - भारतीय
14*. विशेष - फ्लाइंग सिक्ख' के नाम से मशहूर मिलखा सिंह ने कहा था- "नहीं जानता था कि ओलिंपिक गेम्स होते क्या हैं, एशियन गेम्स और वन हंड्रेड मीटर और फोर हंड्रेड मीटर रेस क्या होती है? मिल्खा सिंह तब दौड़ता था जब पैरों में जूते नहीं होते थे। न ही ट्रैक सूट होता था। न कोचेस थे और न ही स्टेडियम। 125 करोड़ है देश की आबादी। मुझे दु:ख इस बात का है कि अब तलक कोई दूसरा मिलखा सिंह पैदा नहीं हो सका"। उन्होंने कहा था कि मैं 90 साल का हो गया हूं, दिल में बस एक ही ख्वाहिश है कोई देश के लिए गोल्ड मेडल एथलेटिक्स में जीते। ओलंपिक में तिरंगा लहराए। नेशनल एंथम बजे। अपने हुनर से कई खिताब जीतने वाले मिलखा सिंह ने दिल की ये टीस रोटरी क्लब के इवेंट ब्लेसिंग में शेयर की थी। तीन दिवसीय कार्यक्रम के अंतिम दिन वे बतौर स्पेशल गेस्ट पहुंचे थे। मिलखा सिंह कहा करते थे कि- जितनी भूख हो, उससे आधा खाइए क्योंकि बीमारियां पेट से शुरू होती हैं; खून शरीर में तेजी से बहेगा तो बीमारियां बहा देगा।
15*. अन्य जानकारी-मिलखा सिंह भारत के ऐसे प्रसिद्ध धावक थे जिन्हें लोग फ्लाइंग सिक्ख के नाम से जानते हैं। सन्1956 में मेलबर्न में आयोजित हुए ओलंपिक खेलों में उन्होंने पहली बार 200 मीटर और 400 मीटर की रेस में भाग लिया था। मिलखा सिंह ने 1958 में कटक में आयोजित नेशनल गेम्स में 200 मीटर और 400 मीटर स्पर्धा में रिकॉर्ड बनाए। इसके बाद उसी साल टोक्यो में आयोजित हुए एशियन गेम्स में उन्होंने 200 मीटर और 400 मीटर की दौड़ में भी गोल्ड मेडल अपने नाम किया। साल 1958 में ही इंग्लैंड के कार्डिफ में आयोजित कॉमनवेल्थ गेम्स में मिलखा सिंह ने एक बार फिर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए 400 मीटर की रेस में गोल्ड मेडल अपने नाम किया। उस समय आज़ाद भारत में कॉमनवेल्थ गेम्स में भारत को स्वर्ण पदक दिलाने वाले वे पहले भारतीय थे।

Scanned with OKEN Scanner

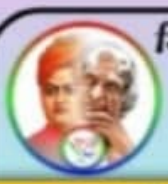

भारत के महान रत्न

जन्म दिवस
20नवंबर,1905

पुण्य तिथि
27मई,1998

मीनू मसानी

582

1*. पूरा नाम - मिनोचर रुस्तम मसानी
2*. अन्य नाम - मीनू मसानी
3*. जन्म तिथि - 20 नवंबर 1905
4*. जन्म स्थान - मुंबई , महाराष्ट्र , भारत
5*. मृत्यु - 27 मई 1998
6*. मृत्यु स्थान - मुंबई, महाराष्ट्र, भारत
7*. पिता - सर रुस्तम मसानी
8*. नागरिकता - भारतीय
9*. शिक्षा - स्नातकोत्तर
10*. विद्यालय - एल्फिन्स्टन कॉलेज , लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स
11*. राजनीतिक दल - स्वतंत्र पार्टी
12*. अन्य राजनीतिक पार्टी - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
13*. पेशा - पत्रकार, राजनीतिज्ञ, लेखक, राजनयिक
14*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता सेनानी और उदार अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना
15*. विशेष - वर्ष 1929 में भारत वापस आने के बाद बंबई उच्च न्यायालय में वकालत की शुरुआत की, लेकिन कुछ ही दिनों में अपनी वकालत छोड़ कर भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हो गये। वर्ष 1932 में सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्हें एक साल के लिए कारावास का दंड दिया गया। मीनू मसानी ने जयप्रकाश नारायण, अच्युत पटवर्धन, युसूफ मेहर अली एवं अन्य नेताओं के साथ मिलकर कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना की, लेकिन पार्टी में कम्युनिस्ट सदस्यों के बढ़ते प्रभाव के चलते वर्ष 1939 में लोहिया, मीनू मसानी, अच्युत पटवर्धन ने कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी से त्यागपत्र दे दिया और मसानी ने राजनीति छोड़कर टाटा कंपनी में काम करना शुरू कर दिया। 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन की शुरु आत होने पर मीनू मसानी वापस सक्रिय राजनीति में लौट आये और आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्हें जेल भेज दिया गया। जेल से छूटने पर वर्ष 1943 में मीनू मसानी बंबई के महापौर बनाने वाले सबसे युवा व्यक्ति बने। मीनू मसानी बाद में भारत के संविधान सभा के लिए चुने गये और भारत के नये संविधान निर्माण में नागरिकों के मूल अधिकारों से संबंधित समिति के सदस्य बने। संविधान सभा में मीनू मसानी ने भारत में समान नागरिक संहिता लागू किये जाने का प्रस्ताव दिया था लेकिन उसे नामंजूर कर दिया गया।
16*. अन्य जानकारी - मीनू मसानी भारत के स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी, राजनेता, पत्रकार, लेखक एवं सांसद थे। वे दूसरे, तीसरे तथा चौथे लोकसभा चुनावों में राजकोट से सांसद चुने गये। वे उदारवादी आर्थिक नीति के पक्षधर थे। उन्होने 1950 में लोकतांत्रिक शोध संगठन की स्थापना की। इसी संगठन की ओर से 1952 में उदारवादी विचारधारा के लिए मासिक पत्रिका 'फ्रीडम फस्ट' का प्रकाशन किया गया। मसानी ने इस पत्रिका को नीतिगत निर्णयों एवं प्रासंगिक राष्ट्रीय, वैश्विक विषयों पर गूढ़ विश्लेषण प्रस्तुत करने का माध्यम बनाया। 70 वर्षीय मीनू मसानी सक्रिय राजनीति से अवकाश लेकर पत्रकारिता और लेखन में लगे थे, तभी भारत में आपातकाल की घोषणा हो गयी, प्रेस पर सेंसरशिप लागू कर दी गयी और मसानी के पुराने सहयोगियों को जेल में डाल दिया गया। मीनू मसानी ने प्रेस की आजादी के लिए डट कर संघर्ष किया और आपातकाल के दौरान भी मीनू मसानी ने अपनी पत्रिका में सरकार की नीतियों का विरोध जारी रखा।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
18 अप्रैल ,1617

पुण्यतिथि
24 नवम्बर,1675

गुरु तेग बहादुर सिंह

1*. पूरा नाम - गुरु तेग़ बहादुर सिंह
2*. जन्म - 18 अप्रैल, 1621
3*. जन्म भूमि - अमृतसर, पंजाब
4*. मृत्यु - 24 नवम्बर, 1675
5*. मृत्यु स्थान - चांदनी चौक, नई दिल्ली
6*. अभिभावक - पिता- गुरु हरगोविंद सिंह
माता - नानकी
7*. पत्नी - माता गुजरी
8*. संतान - गुरु गोविन्द सिंह
9*. कर्म भूमि - भारत
10*. पुरस्कार-उपाधि - सिक्खों के नौवें गुरु
11*. नागरिकता - भारतीय
12*. विशेष - आप गुरु हरगोविन्द जी के पाँचवें पुत्र थे। आठवें गुरु इनके पोते 'हरिकृष्ण राय' जी की अकाल मृत्यु हो जाने के कारण जनमत द्वारा ये नवम गुरु बनाए गए। इन्होंने आनन्दपुर साहिब का निर्माण कराया और ये वहीं रहने लगे थे। उनका बचपन का नाम त्यागमल था। मात्र 14 वर्ष की आयु में अपने पिता के साथ मुग़लों के हमले के ख़िलाफ़ हुए युद्ध में उन्होंने वीरता का परिचय दिया। उनकी वीरता से प्रभावित होकर उनके पिता ने उनका नाम त्यागमल से तेग़ बहादुर (तलवार के धनी) रख दिया। युद्धस्थल में भीषण रक्तपात से गुरु तेग़ बहादुर जी के वैरागी मन पर गहरा प्रभाव पड़ा और उनका का मन आध्यात्मिक चिंतन की ओर हुआ। धैर्य, वैराग्य और त्याग की मूर्ति गुरु तेग़ बहादुर जी ने एकांत में लगातार 20 वर्ष तक 'बाबा बकाला' नामक स्थान पर साधना की। आठवें गुरु हरकिशन जी ने अपने उत्तराधिकारी का नाम के लिए 'बाबा बकाले' का निर्देश दिया। गुरु जी ने धर्म के प्रसार लिए कई स्थानों का भ्रमण किया। आनंदपुर साहब से कीरतपुर, रोपण, सैफाबाद होते हुए वे खिआला (खदल) पहुँचे। यहाँ उपदेश देते हुए दमदमा साहब से होते हुए कुरुक्षेत्र पहुँचे। कुरुक्षेत्र से यमुना के किनारे होते हुए कड़ामानकपुर पहुँचे और यहीं पर उन्होंने साधु भाई मलूकदास का उद्धार किया। इसके बाद गुरु तेग़ बहादुर जी प्रयाग, बनारस, पटना, असम आदि क्षेत्रों में गए, जहाँ उन्होंने आध्यात्मिक, सामाजिक, आर्थिक, उन्नयन के लिए रचनात्मक कार्य किए। आध्यात्मिकता, धर्म का ज्ञान बाँटा। रूढ़ियों, अंधविश्वासों की आलोचना कर नये आदर्श स्थापित किए। उन्होंने परोपकार के लिए कुएँ खुदवाना, धर्मशालाएँ बनवाना आदि कार्य भी किए। इन्हीं यात्राओं में 1666 में गुरुजी के यहाँ पटना साहब में पुत्र का जन्म हुआ। जो दसवें गुरु- गुरु गोविंद सिंह बने।
13*. अन्य जानकारी - गुरु तेग़ बहादुर सिक्खों के नौवें गुरु थे। विश्व के इतिहास में धर्म एवं सिद्धांतों की रक्षा के लिए प्राणों की आहुति देने वालों में इनका अद्वितीय स्थान है। तेग़ बहादुर जी के बलिदान से हिंदुओं व हिन्दू धर्म की रक्षा हुई। हिन्दू धर्म के लोग भी उन्हें याद करते और उनसे संबंधित कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। तेग़ बहादुर सिंह 20 मार्च, 1664 को सिक्खों के गुरु नियुक्त हुए थे और 24 नवंबर, 1675 तक गद्दी पर आसीन रहे।

Scanned with OKEN Scanner

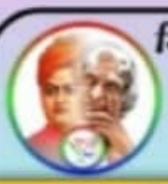

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जन्म दिवस
26नवंबर,1921

पुण्य तिथि
09सितम्बर,2012

डॉ. वर्गीज़ कुरियन

1*. पूरा नाम - डॉ. वर्गीज़ कुरियन
2*. अन्य नाम - अमूल मैन, मिल्क मैन ऑफ़ इंडिया
3*. जन्म - 26 नवंबर, 1921
4*. जन्म भूमि - मद्रास (अब चेन्नई)
5*. मृत्यु - 9 सितम्बर, 2012
6*. मृत्यु स्थान - नाडियाड, गुजरात
7*. पत्नी - मॉली कुरियन
8*. कर्म भूमि - भारत
9*. पुरस्कार-उपाधि - 'पद्म श्री','पद्म भूषण', 'पद्म विभूषण', 'रेमन मैग्सेसे पुरस्कार'।
10*. विशेष योगदान- वर्गीज़ कुरियन ने 1949 में 'कैरा ज़िला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड' के अध्यक्ष त्रिभुवन दास पटेल के अनुरोध पर डेयरी का काम संभाला। सरदार वल्लभभाई पटेल की पहल पर इस डेयरी की स्थापना की गयी थी। वर्गीज़ कुरियन ने महाराष्ट्र के 60 लाख किसानों की 60 हज़ार कोऑपरेटिव सोसायटियाँ बनाई, जो प्रतिदिन तीन लाख टन दूध सप्लाई करती हैं। इसी को श्वेत क्रान्ति और 'ओपरेशन फ़्लड' के नाम से भी पुकारा जाता है। इस महान् कार्य से जहाँ किसानों का भला हुआ, वहीं पर आम लोगों को दूध की उपलब्धि में भी सुविधा हुई। इन कार्यों के कारण इन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। डॉ. कुरियन ने साल 1973 में 'गुजरात कोऑपरेटिव मिल्क मार्केटिंग फेडरेशन' की स्थापना की और 34 साल तक इसके अध्यक्ष रहे। इसी कारण इन्हें श्वेत क्रांति का जनक कहा जाता है। राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड अमूल की सफलता से अभिभूत होकर तत्कालीन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने 'राष्ट्रीय दुग्ध विकास बोर्ड' (एनडीडीबी) का गठन किया। जिससे पूरे देश में अमूल मॉडल को समझा और अपनाया गया। कुरियन को बोर्ड का अध्यक्ष बनाया गया। एनडीडीबी ने 1970 में 'ऑपरेशन फ्लड' की शुरूआत की जिससे भारत दुनिया का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक देश बन गया। कुरियन ने 1965 से 1998 तक 33 साल एनडीडीबी के अध्यक्ष के तौर पर सेवाएं दीं। वे 'विकसित भारत फाउंडेशन' के प्रमुख रहे। उन्होंने असंगठित ग्रामीण भारत के दुग्ध उत्पादकों को जहां आर्थिक मजबूती दिला कर सम्मान दिलाया वहीं पूरे विश्व को एक दिशा दिखाई। 60 के दशक में भारत में दूध की खपत जहाँ दो करोड़ टन थी वहीं 2011 में यह 12.2 करोड़ टन पहुंच गयी। कुरियन के निजी जीवन से जुड़ी एक रोचक और दिलचस्प बात यह है कि देश में 'श्वेत क्रांति' लाने वाला और 'मिल्कमैन ऑफ इंडिया' के नाम से मशहूर यह शख़्स खुद दूध नहीं पीता था।
11*. नागरिकता - भारतीय
12*. अन्य जानकारी - वर्गीज़ कुरियन भारत में दुग्ध क्रान्ति, जिसे 'श्वेत क्रान्ति' भी कहा जाता है, के जनक माने जाते हैं। भारत को दुनिया का सर्वाधिक दुग्ध उत्पादक देश बनाने के लिए श्वेत क्रांति लाने वाले वर्गीज़ कुरियन को देश में सहकारी दुग्ध उद्योग के मॉडल की आधारशिला रखने का श्रेय जाता है। वर्गीज़ कुरियन और श्याम बेनेगल ने मिलकर राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फ़िल्म 'मंथन' की कहानी भी लिखी, जिसे क़रीब 5 लाख किसानों ने वित्तीय सहायता दी। विश्व बैंक ने ग़रीबी उन्मूलन के लिए अमूल मॉडल को चिन्हित किया है। अमूल मॉडल को व्यापक और लोकप्रिय बनाने में वर्गीज़ की बड़ी भूमिका रही है।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
11 अप्रैल ,1827

पुण्यतिथि
28 नवम्बर,1890

महात्मा ज्योतिबा फुले

1*. पूरा नाम - ज्योतिराव गोविंदराव फुले
2*. अन्य नाम - महात्मा फुले
3*. जन्म - 11 अप्रॅल, 1827 ई.
4*. जन्म भूमि - पुणे, महाराष्ट्र
5*. मृत्यु - 28 नवम्बर, 1890 ई.
6*. मृत्यु स्थान - पुणे, महाराष्ट्र
7*. अभिभावक - पिता- गोविंदराव फुले
8*. पत्नी - सावित्रीबाई फुले
9*. कर्म भूमि - महाराष्ट्र
10*. कर्म-क्षेत्र - समाजसेवा, दार्शनिक
11*. भाषा - मराठी
12*. पुरस्कार-उपाधि - महात्मा
13*. विशेष योगदान - ज्योतिराव फुले का मूल उद्देश्य स्त्रियों को शिक्षा का अधिकार प्रदान करना, बाल विवाह का विरोध, विधवा विवाह का समर्थन करना रहा है। फुले समाज की कुप्रथा, अंधश्रद्धा की जाल से समाज को मुक्त करना चाहते थे। अपना सम्पूर्ण जीवन उन्होंने स्त्रियों को शिक्षा प्रदान कराने में, स्त्रियों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने में व्यतीत किया.19 वी सदी में स्त्रियों को शिक्षा नहीं दी जाती थी। फुले महिलाओं को स्त्री-पुरुष भेदभाव से बचाना चाहते थे।उन्होंने कन्याओं के लिए भारत देश की पहली पाठशाला पुणे में बनाई थीं। स्त्रियों की तत्कालीन दयनीय स्थिति से फुले बहुत व्याकुल और दुखी होते थे इसीलिए उन्होंने दृढ़ निश्चय किया कि वे समाज में क्रांतिकारी बदलाव लाकर ही रहेंगे। उन्होंने अपनी धर्मपत्नी सावित्रीबाई फुले को स्वयं शिक्षा प्रदान की। सावित्रीबाई फुले भारत की प्रथम महिला अध्यापिका थीं।निर्धन तथा निर्बल वर्ग को न्याय दिलाने के लिए ज्योतिबा ने 'सत्यशोधक समाज' 1873 मे स्थापित किया। उनकी समाजसेवा देखकर 1888 ई. में मुंबई की एक विशाल सभा में उन्हेंमहात्मा' की उपाधि दी। ज्योतिबा ने ब्राह्मण-पुरोहित के बिना ही विवाह-संस्कार आरम्भ कराया और इसे मुंबई उच्च न्यायालय से भी मान्यता मिली। वे बाल-विवाह विरोधी और विधवा-विवाह के समर्थक थे। अपने जीवन काल में उन्होंने कई पुस्तकें भी लिखीं-गुलामगिरी, तृतीय रत्न, छत्रपति शिवाजी, राजा भोसला का पखड़ा, किसान का कोड़ा, अछूतों की कैफियत. महात्मा ज्योतिबा व उनके संगठन के संघर्ष के कारण सरकार ने 'एग्रीकल्चर एक्ट' पास किया। धर्म, समाज और परम्पराओं के सत्य को सामने लाने हेतु उन्होंने अनेक पुस्तकें भी लिखी।
14*. नागरिकता - भारतीय
15*. अन्य जानकारी - महात्मा जोतिराव गोविंदराव फुले एक भारतीय समाजसुधारक, समाज प्रबोधक, विचारक, समाजसेवी, लेखक, दार्शनिक तथा क्रान्तिकारी कार्यकर्ता थे। इन्हें महात्मा फुले एवं "जोतिबा फुले के नाम से भी जाना जाता है। सितम्बर 1873 में इन्होने महाराष्ट्र में सत्य शोधक समाज नामक संस्था का गठन किया। महिलाओं व पिछडे और अछूतो के उत्थान के लिय इन्होंने अनेक कार्य किए। समाज के सभी वर्गो को शिक्षा प्रदान करने के ये प्रबल समथर्क थे। वे भारतीय समाज में प्रचलित जाति पर आधारित विभाजन और भेदभाव के विरुद्ध थे। ज्योतिबा फुले ने ब्राह्मण-पुरोहित के बिना ही विवाह-संस्कार आरंभ कराया और इसे मुंबई हाईकोर्ट से भी मान्यता मिली। ब्रिटिश सरकार द्वारा उपाधि 1883में स्त्रियों को शिक्षा प्रदान कराने के महान कार्य के लिए उन्हें तत्कालीन ब्रिटिश भारत सरकार द्वारा "स्त्री शिक्षण के आद्यजनक" कहकर गौरव किया। भारतीय डाक विभाग ने फुले के सम्मान में वर्ष 1977 में एक डाक टिकट जारी किया। प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 3 दिसंबर 2003 को नई दिल्ली में संसद भवन में ज्योतिराव फुले की प्रतिमा का अनावरण किया।

Scanned with OKEN Scanner

जयंती :-
29 नवम्बर,1935

पुण्यतिथि
05 दिसम्बर,1961

कैप्टन गुरुबचन सिंह सालारिया

583

1*. पूरा नाम - कैप्टन गुरबचन सिंह सालारिया
2*. जन्म - 29 नवम्बर, 1935
3*. जन्म भूमि - गुरदासपुर, पंजाब
4*. मृत्यु - 05 दिसम्बर,1961
5*. मृत्यु स्थान - एलिजाबेथ विला, कांगो
6*. मृत्यु का कारण - शहीद
7*. सेना - भारतीय थल सेना
8*. रैंक - कैप्टन
9*. यूनिट - 3/1 गोरखा राइफ़ल
10*. सेवा काल - 1957–1961
11*. विद्यालय - किंग जार्ज रॉयल मिलिट्री कॉलेज, बैंगलोर
12*. सम्मान - परमवीर चक्र
13*. नागरिकता - भारतीय
14*. विशेष योगदान - 3/1 गोरखा राइफल्स के कैप्टन गुरबचन सिंह सालारिया को संयुक्त राष्ट्र के सैन्य प्रतिनिधि के रूप में एलिजाबेथ विला में दायित्व सौंपा गया था। 24 नवम्बर 1961 को संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद ने यह प्रस्ताव पास किया था कि संयुक्त राष्ट्र की सेना कांगो के पक्ष में हस्तक्षेप करे और आवश्यकता पड़ने पर बल प्रयोग करके भी विदेशी व्यवसायियों पर अंकुश लगाए। संयुक्त राष्ट्र के इस निर्णय से शोम्बे के व्यापारी आदि भड़क उठे और उन्होंने संयुक्त राष्ट्र की सेनाओं के मार्ग में बाधा डालने का उपक्रम शुरु कर दिया। संयुक्त राष्ट्र के दो वरिष्ठ अधिकारी उनके केंद्र में आ गये। उन्हें पीटा गया। 3/1 गोरखा राइफल्स के मेजर अजीत सिंह को भी उन्होंने पकड़ लिया था और उनके ड्राइवर की हत्या कर दी थी। इन विदेशी व्यापारियों का मंसूबा यह था कि वह एलिजाबेथ विला के मोड़ से आगे का सारा संवाद तंत्र तथा रास्ता काट देंगे और फिर संयुक्त राष्ट्र की सैन्य टुकड़ियों से निपटेंगे। 5 दिसम्बर 1961 को एलिजाबेथ विला के रास्ते इस तरह बाधित कर दिये गए थे कि संयुक्त राष्ट्र के सैन्य दलों का आगे जाना एकदम असम्भव हो गया था। क़रीब 9 बजे 3/1 गोरखा राइफल्स को यह आदेश दिये गए कि वह एयरपोर्ट के पास के एलिजाबेथ विला के गोल चक्कर का रास्ता साफ करे। इस रास्ते पर विरोधियों के क़रीब डेढ़ सौ सशस्त्र पुलिस वाले रास्ते को रोकते हुए तैनात थे। योजना यह बनी कि 3/1 गोरखा राइफल्स की चार्ली कम्पनी आयरिश टैंक के दस्ते के साथ अवरोधकों पर हमला करेगी। इस कम्पनी की अगुवाई मेजर गोविन्द शर्मा कर रहे थे। कैप्टन गुरबचन सिंह सालारिया एयरपोर्ट साइट से आयारिश टैंक दस्तें के साथ धावा बोलेंगे इस तरह अवरोधकों को पीछे हटकर हमला करने का मौका न मिल सकेगा। कैप्टन गुरबचन सिंह सालारिया की ए कम्पनी के कुछ जवान रिजर्व में रखे जाएँगे। गुरबचन सिंह सालारिया न इस कार्रवाई के लिए दोपहर का समय तय किया, जिस समय उन सशस्त्र पुलिसबालों को हमले की ज़रा भी उम्मीद न हो। गोविन्द शर्मा तथा गुरबचन सिंह दोनों के बीच इस योजना पर सहमति बन गई।
15*. अन्य जानकारी - कैप्टन गुरबचन सिंह सालारिया परमवीर चक्र से सम्मानित भारतीय सैनिक थे। इन्हें यह सम्मान सन 1961 में मरणोपरांत मिला। संयुक्त राष्ट्र संघ की शांति सेना के साथ कांगो के पक्ष में बेल्जियम के विरुद्ध बहादुरी पूर्वक प्राण न्योछावर करने वाले योद्धाओं में कैप्टन गुरबचन सिंह सालारिया का नाम लिया जाता है जिन्हें 5 दिसम्बर 1961 को एलिजाबेथ विला में लड़ते हुए अद्भुत पराक्रम दिखाने के लिए मरणोपरांत परमवीर चक्र दिया गया। वह उस समय केवल 26 वर्ष के थे।

Scanned with OKEN Scanner

भारत के महान रत्न

जयंती :-
30 नवम्बर,1888

पुण्यतिथि
21 दिसम्बर,1920

पंडित गेंदालाल दीक्षित

584

1*. पूरा नाम - पंडित गेंदालाल दीक्षित
2*. जन्म - 30 नवम्बर, 1888
3*. जन्म भूमि - बाह, आगरा, उत्तर प्रदेश
4*. मृत्यु - 21 दिसम्बर, 1920
5*. मृत्यु स्थान - दिल्ली
6*. अभिभावक - पिता- पंडित भोलानाथ दीक्षित
7*. नागरिकता - भारतीय
8*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता सेनानी
9*. धर्म - हिन्दू
10*. विशेष - सन 1905 में बंगाल विभाजन के बाद जो देशव्यापी 'स्वदेशी आन्दोलन' चला, उससे वे अत्यधिक प्रभावित हुए। उन्होंने 'शिवाजी समिति' के नाम से डाकुओं का एक संगठन बनाया और शिवाजी की भांति छापामार युद्ध करके अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध उत्तर प्रदेश में एक अभियान प्रारम्भ किया; किन्तु दल के ही एक सदस्य दलपतसिंह की मुखबिरी के कारण गिरफ्तार करके गेंदालाल दीक्षित को पहले ग्वालियर लाया गया, फिर वहाँ से आगरा के क़िले में कैद करके सेना की निगरानी में रख दिया गया। आगरा क़िले में रामप्रसाद बिस्मिल ने आकर गुप्त रूप से मुलाकात की और संस्कृत में सारा वार्तालाप किया, जिसे अंग्रेज़ पहरेदार बिलकुल न समझ पाये। अगले दिन गेंदालाल दीक्षित ने योजनानुसार पुलिस गुप्तचरों से कुछ रहस्य की बातें बतलाने की इच्छा जाहिर की। अधिकारियों की अनुमति लेकर उन्हें आगरा से मैनपुरी भेज दिया गया, जहाँ बिस्मिल की संस्था 'मातृवेदी' के कुछ साथी नवयुवक पहले से ही हवालात में बन्द थे।मैनपुरी पहुँचते ही दीक्षित जी ने एकदम पैंतरा बदला और पुलिस से डाँटकर कहा कि इन लड़कों को क्या पता, मैं इस काण्ड का सारा भेद जानता हूँ। पुलिस यकायक झाँसे में आ गयी और आपको उन लड़कों के साथ शामिल कर लिया गया। बाकायदा चार्जशीट तैयार की गयी और मैनपुरी के स्पेशल मैजिस्ट्रेट बी॰ एस॰ क्रिस की अदालत में गेंदालाल दीक्षित सहित सभी नवयुवकों पर सम्राट के विरुद्ध साजिश रचने का मुकदमा दायर करके मैनपुरी की जेल में डाल दिया गया। इस मुकदमे को भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में मैनपुरी षड्यन्त्र के नाम से जाना जाता है।
11*. अन्य जानकारी - गेंदालाल दीक्षित भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अप्रतिम योद्धा, महान क्रान्तिकारी व उत्कट राष्ट्रभक्त थे, जिन्होंने आम आदमी की बात तो दूर, डाकुओं तक को संगठित करके ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध खड़ा करने का दुस्साहस किया। दीक्षित जी "उत्तर भारत के क्रान्तिकारियों के द्रोणाचार्य" कहे जाते थे। उन्हें 'मैनपुरी षड्यंत्र' का सूत्रधार समझ कर पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया और बाकायदा चार्जशीट तैयार की गयी और मैनपुरी के मैजिस्ट्रेट बी. एस. क्रिस की अदालत में गेंदालाल दीक्षित सहित सभी नवयुवकों पर सम्राट के विरुद्ध साजिश रचने का मुकदमा दायर करके मैनपुरी की जेल में डाल दिया गया। इस मुकदमे को भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में 'मैनपुरी षड्यंत्र केस' के नाम से जाना जाता है। उनकी जीवनी राम प्रसाद बिस्मिल ने लिखी थी जो कानपुर से निकलने वाली हिंदी पत्रिका प्रभा (3 सितम्बर 1924 के अंक) में 'अज्ञात' उपनाम से प्रकाशित हुई थी।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
03 दिसम्बर,1884

पुण्यतिथि
28 फरवरी,1963

डॉ . राजेन्द्र प्रसाद

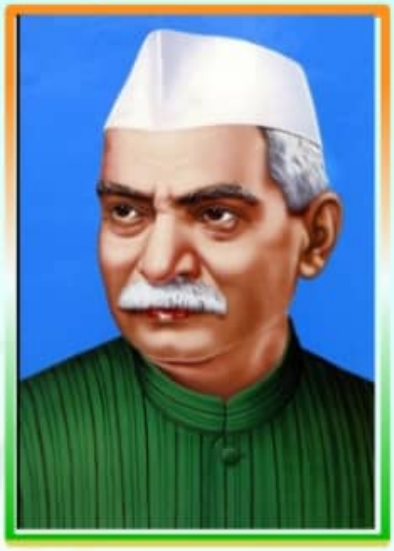

1*. पूरा नाम - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
2*. अन्य नाम - राजेन बाबू
3*. जन्म - 3 दिसम्बर, 1884
4*. जन्म भूमि - जीरादेयु, बिहार
5*. मृत्यु - 28 फ़रवरी, 1963
6*. मृत्यु स्थान - सदाकत आश्रम, पटना
7*. अभिभावक - श्री महादेव सहाय
8*. पत्नी - श्रीमती राजवंशी देवी
9*. नागरिकता - भारतीय
10*. पार्टी - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
11*. पद - भारत के प्रथम राष्ट्रपति
22*. कार्य काल - 26 जनवरी, 1950 से 13 मई, 1962
13*. शिक्षा - स्नातक, बी. एल., क़ानून में मास्टर डिग्री और डॉक्टरेट
14*. विद्यालय - कलकत्ता विश्वविद्यालय, प्रेसीडेंसी कॉलेज (कलकत्ता)
15*. पुरस्कार-उपाधि - भारत रत्न
16*. विशेष - भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उनका पदार्पण वक़ील के रूप में अपने कैरियर की शुरुआत करते ही हो गया था। चम्पारण में गान्धीजी ने एक तथ्य अन्वेषण समूह भेजे जाते समय उनसे अपने स्वयं सेवकों के साथ आने का अनुरोध किया था। राजेन्द्र बाबू महात्मा गाँधी की निष्ठा, समर्पण एवं साहस से बहुत प्रभावित हुए और 1928 में उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय के सीनेटर का पदत्याग कर दिया। गाँधीजी ने जब विदेशी संस्थाओं के बहिष्कार की अपील की थी तो उन्होंने अपने पुत्र मृत्युंजय प्रसाद, जो एक अत्यंत मेधावी छात्र थे, उन्हें कोलकाता विश्वविद्यालय से हटाकर बिहार विद्यापीठ में दाखिल करवाया था। उन्होंने 'सर्चलाईट' और 'देश' जैसी पत्रिकाओं में इस विषय पर बहुत से लेख लिखे थे और इन अखबारों के लिए अक्सर वे धन जुटाने का काम भी करते थे। 1914 में बिहार और बंगाल मे आई बाढ़ में उन्होंने काफी बढ़चढ़ कर सेवा-कार्य किया था।भारत के स्वतन्त्र होने के बाद संविधान लागू होने पर उन्होंने देश के पहले राष्ट्रपति का पदभार सँभाला। राष्ट्रपति के तौर पर उन्होंने कभी भी अपने संवैधानिक अधिकारों में प्रधानमंत्री या कांग्रेस को दखलअंदाजी का मौका नहीं दिया और हमेशा स्वतन्त्र रूप से कार्य करते रहे। हिन्दू अधिनियम पारित करते समय उन्होंने काफी कड़ा रुख अपनाया था। राष्ट्रपति के रूप में उन्होंने कई ऐसे दृष्टान्त छोड़े जो बाद में उनके परवर्तियों के लिए उदाहरण बन गए। भारतीय संविधान के लागू होने से एक दिन पहले 25 जनवरी 1950 को उनकी बहन भगवती देवी का निधन हो गया, लेकिन वे भारतीय गणराज्य के स्थापना की रस्म के बाद ही दाह संस्कार में भाग लेने गये। 12 वर्षों तक राष्ट्रपति के रूप में कार्य करने के पश्चात उन्होंने 1962 में अपने अवकाश की घोषणा की। अवकाश ले लेने के बाद ही उन्हें भारत सरकार द्वारा सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से नवाज़ा गया।
17*. अन्य जानकारी - डॉ राजेन्द्र प्रसाद भारत गणराज्य के प्रथम राष्ट्रपति एवं महान भारतीय स्वतंत्रता सेनानी थे।वे भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के प्रमुख नेताओं में से थे; और उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में प्रमुख भूमिका निभाई। राष्ट्रपति होने के अतिरिक्त उन्होंने भारत के पहले मंत्रिमंडल में 1946 एवं 1947 में कृषि और खाद्यमंत्री का दायित्व भी निभाया था। सम्मान से उन्हें प्रायः 'राजेन्द्र बाबू' कहकर पुकारा जाता है।राजेन्द्र बाबू की वेशभूषा बड़ी सरल थी। उनके चेहरे मोहरे को देखकर पता ही नहीं लगता था कि वे इतने प्रतिभासम्पन्न और उच्च व्यक्तित्ववाले सज्जन हैं। देखने में वे सामान्य किसान जैसे लगते थे। इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा उन्हें डाक्टर ऑफ ला की सम्मानित उपाधि प्रदान करते समय कहा गया था - "बाबू राजेंद्रप्रसाद ने अपने जीवन में सरल व नि:स्वार्थ सेवा का ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत किया है। जब वकील के व्यवसाय में चरम उत्कर्ष की उपलब्धि दूर नहीं रह गई थी, इन्हें राष्ट्रीय कार्य के लिए आह्वान मिला और उन्होंने व्यक्तिगत भावी उन्नति की सभी संभावनाओं को त्यागकर गाँवों में गरीबों तथा दीन कृषकों के बीच काम करना स्वीकार किया।"
सरोजिनी नायडू ने उनके बारे में लिखा था - "उनकी असाधारण प्रतिभा, उनके स्वभाव का अनोखा माधुर्य, उनके चरित्र की विशालता और अति त्याग के गुण ने शायद उन्हें हमारे सभी नेताओं से अधिक व्यापक और व्यक्तिगत रूप से प्रिय बना दिया है। गाँधी जी के निकटतम शिष्यों में उनका वही स्थान है जो ईसा मसीह के निकट सेंट जॉन का था।"

Scanned with OKEN Scanner

भारत के महान रत्न

जयंती :-
26 जनवरी,1842

पुण्यतिथि
04 दिसम्बर,1889

टंट्या भील

585

1*. पूरा नाम - टंट्या भील
2*. जन्म - 26 जनवरी 1842 (आदिवासी लोकगीत अनुसार सक्रांति का 12 वा दिन)
3*. जन्म भूमि - पंधाना, मध्य प्रदेश, भारत
4*. मृत्यु - 4 दिसंबर 1889
5*. मृत्यु स्थान - जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत
6*. मौत की वजह - फाँसी
7*. समाधि - पातालपानी, मध्य प्रदेश
8*. उपनाम - 'रॉबिनहुड ऑफ इंडिया' (द न्यूयॉर्क टाइम्स दिनांक 10 नवंबर 1889 को प्रकाशित खबर अनुसार), आदिवासियों का मसीहा, महा विद्रोही, मालिक।
9*. शिक्षा - शिक्षा का स्पष्ट उल्लेख नहीं है किंतु टंट्या भील पाड़ा -वाड़ा-दुडा-कोयामुरी-पेनकड़ा-थाना-वाना-गावठाण-कूड़ा यानी पारंपरिक रूढ़िवादी ग्राम सभा का प्रतिनिधित्व करते थे और अंग्रेजी सहित कई भाषाएं जानते थे।
10*. नागरिकता - भारतीय
11*. अन्य जानकारी - टंट्या भील आदिवासी समुदाय के सदस्य थे उनका वास्तविक नाम टंड्रा था, उनसे सरकारी अफसर या धनिक लोग ही भयभीत थे, आम जनता उसे 'टंटिया मामा' कहकर उसका आदर करती थी । टंट्या भील का जन्म मध्य प्रदेश के खंडवा जिले की पंधाना तहसील के ग्राम बड़दा में आदिवासी लोकगीत अनुसार संक्रांत के 12 दिन यानी 26 जनवरी1842 में हुआ था। एक नए शोध के अनुसार उन्होंने 1857 में हुए पहले स्वतंत्रता संग्राम के बाद अंग्रेजों द्वारा किये गए दमन के बाद अपने जीवन के तरीके को अपनाया । टंट्या को पहली बार 1874 के आसपास "खराब आजीविका" के लिए गिरफ्तार किया गया था। एक साल की सजा काटने के बाद उनके जुर्म को चोरी और अपहरण के गंभीर अपराधों में बदल दिया गया। सन 1878 में दूसरी बार उन्हें हाजी नसरुल्ला खान यूसुफजई द्वारा गिरफ्तार किया गया था। मात्र तीन दिनों बाद वे खंडवा जेल से भाग गए और एक विद्रोही के रूप में शेष जीवन जिया। इंदौर की सेना के एक अधिकारी ने टंट्या को क्षमा करने का वादा किया था, लेकिन घात लगाकर उन्हें जबलपुर ले जाया गया, जहाँ उन पर मुकदमा चलाया गया और 4 दिसंबर 1889 को उसे फाँसी दे दी गई। सामाजिक कार्यकर्ता राकेश देवड़े बिरसावादी के अनुसार- "शुरुआत में टंट्या भील के विद्रोही प्रवृत्ति को उनके परिवार समाज और राष्ट्र पर हुए अन्याय और अत्याचार को जोड़कर देखा गया । उन्हें डकैत लुटेरा इस प्रकार की उपाधि सामंतवादी जमीदारों द्वारा दी गई क्योंकि यह लोग टंट्या के खिलाफ अंग्रेजी हुकूमत की पुलिस की मदद मांगना चाहते थे इसलिए टंट्या भील को आरोपित किया गया । टंट्या भील का परिवार भी इस अन्याय और शोषण का शिकार हुआ थ। उनकी जमीन जमीदार पाटिल के पास गिरवी थी जिसका जबरन कब्जा कर ब्याज के रूप में वसूली जैसी बातों ने मानो गरीब किसानों, आदिवासियों के परिवार को नेस्तनाबूद कर दिया। वह निरंतर श्रम करने के बावजूद भी पेट भर खाना नहीं खा सकते थे ऐसी स्थिति में महाविद्रोही टंट्या भील का निर्माण हुआ था।"

Scanned with OKEN Scanner

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
14 अप्रैल, 1891

पुण्यतिथि
06 दिसम्बर, 1956

डॉ. भीमराव अम्बेडकर

1*. पूरा नाम - बाबासाहेब डॉ. भीमराव आम्बेडकर
2*. अन्य नाम - बाबासाहेब
3*. जन्म - 14 अप्रैल, 1891
4*. जन्म भूमि - मऊ, मध्य प्रदेश
5*. मृत्यु - 6 दिसंबर, 1956
6* bमृत्यु स्थान - दिल्ली
7*. मृत्यु कारण - स्वास्थ्य ख़राब
8*. अभिभावक - पिता- रामजी मालोजी सकपाल
माता- भीमाबाई मुरबादकर
9*. पत्नी - श्रीमती रमाबाई अम्बेडकर, डॉ सविता अम्बेडकर
10*. नागरिकता - भारतीय
11*. पार्टी - स्वतंत्र लेबर पार्टी
पद - अध्यक्ष- स्वतंत्र लेबर पार्टी
12*. शिक्षा - एम.ए. (अर्थशास्त्र), पी एच. डी., एम. एस. सी., बार-एट-लॉ
13*. विद्यालय - एलिफिन्सटन कॉलेज, कोलंबिया विश्वविद्यालय, लंदन स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स
14*. भाषा - हिंदी, अंग्रेज़ी
15*. पुरस्कार-उपाधि - भारत रत्न
16*. कार्यक्षेत्र - बड़ौदा राज्य के मिलिटरी सेक्रेटरी, अर्थशास्त्र के प्रोफेसर, प्रधानाचार्य
17*. रचनाएँ - 'डॉ. बाबा साहब आम्बेडकर राइटिंग्स एंड स्पीचेज' (अंग्रेज़ी), बाबा साहब डॉक्टर आम्बेडकर सम्पूर्ण वाङ्मय (हिन्दी), जाति के विनाश
18*. विशेष - आम्बेडकर एक बुद्धिमान संविधान विशेषज्ञ थे, उन्होंने लगभग 60 देशों के संविधानों का अध्ययन किया था। आम्बेडकर को "भारत के संविधान का पिता" के रूप में मान्यता प्राप्त है। डॉ भीमराव अंबेडकर ने भारतीय संविधान लिखकर भारत को एक अच्छा देश बनाया । संविधान सभा में, मसौदा समिति के सदस्य टी॰ टी॰ कृष्णामाचारी ने कहा:-
"अध्यक्ष महोदय, मैं सदन में उन लोगों में से एक हूं, जिन्होंने डॉ॰ आम्बेडकर की बात को बहुत ध्यान से सुना है। मैं इस संविधान की ड्राफ्टिंग के काम में जुटे काम और उत्साह के बारे में जानता हूं।" उसी समय, मुझे यह महसूस होता है कि इस समय हमारे लिए जितना महत्वपूर्ण संविधान तैयार करने के उद्देश्य से ध्यान देना आवश्यक था, वह ड्राफ्टिंग कमेटी द्वारा नहीं दिया गया। सदन को शायद सात सदस्यों की जानकारी है। आपके द्वारा नामित, एक ने सदन से इस्तीफा दे दिया था और उसे बदल दिया गया था। एक की मृत्यु हो गई थी और उसकी जगह कोई नहीं लिया गया था। एक अमेरिका में था और उसका स्थान नहीं भरा गया और एक अन्य व्यक्ति राज्य के मामलों में व्यस्त था, और उस सीमा तक एक शून्य था। एक या दो लोग दिल्ली से बहुत दूर थे और शायद स्वास्थ्य के कारणों ने उन्हें भाग लेने की अनुमति नहीं दी। इसलिए अंततः यह हुआ कि इस संविधान का मसौदा तैयार करने का सारा भार डॉ॰ आम्बेडकर पर पड़ा और मुझे कोई संदेह नहीं है कि हम उनके लिए आभारी हैं। इस कार्य को प्राप्त करने के बाद मैं ऐसा मानता हूँ कि यह निस्संदेह सराहनीय है।"
"आम्बेडकरवाद" आम्बेडकर की विचारधारा तथा दर्शन हैं। स्वतंत्रता, समानता, भाईचारा, बौद्ध धर्म, विज्ञानवाद, मानवतावाद, सत्य, अहिंसा आदि के विषय आम्बेडकरवाद के सिद्धान्त हैं। छुआछूत को नष्ट करना, दलितों में सामाजिक सुधार, भारत में बौद्ध धर्म का प्रचार एवं प्रचार, भारतीय संविधान में निहीत अधिकारों तथा मौलिक हकों की रक्षा करना, एक नैतिक तथा जातिमुक्त समाज की रचना और भारत देश प्रगती यह प्रमुख उद्देश शामिल हैं। आम्बेडकरवाद सामाजिक, राजनितीक तथा धार्मिक विचारधारा हैं।
19*. अन्य जानकारी - डॉ. भीमराव रामजी आम्बेडकर एक बहुजन राजनीतिक नेता और एक बौद्ध पुनरुत्थानवादी भी थे। उन्हें बाबासाहेब के नाम से भी जाना जाता है। आम्बेडकर ने अपना सारा जीवन हिन्दू धर्म की चतुवर्ण प्रणाली और भारतीय समाज में सर्वत्र व्याप्त जाति व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष में बिता दिया। उन्हें बौद्ध महाशक्तियों के दलित आंदोलन को प्रारंभ करने का श्रेय भी जाता है। आम्बेडकर को भारत रत्न से भी सम्मानित किया गया है जो भारत का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार है। अपनी महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों तथा देश की अमूल्य सेवा के फलस्वरूप डॉ. अम्बेडकर को आधुनिक युग का मनु कहकर सम्मानित किया गया।आम्बेडकर का जन्मदिवस आम्बेडकर जयंती हर साल 14 अप्रैल को एक बडे उत्सव के रूप में भारत भर में मनाया जाता हैं। महाराष्ट्र के बौद्धों के लिए यह सबसे बडा त्यौहार हैं। महाराष्ट्र सरकार द्वारा आम्बेडकर जयंती को ज्ञान दिवस के रूप में मनाया जाता हैं। क्योंकि बहुज्ञ डॉ॰ आम्बेडकर को "ज्ञान का प्रतिक" (सिम्बल ऑफ नॉलेज) माना जाता हैं।आम्बेडकर के सम्मान में भारतीय संविधान दिवस (राष्ट्रीय कानून दिवस) 26 नवम्बर को मनाया जाता हैं। भारत सरकार के निर्देशों के अनुसार, आम्बेडकर के 125वें जयंती वर्ष के रूप में 26 नवम्बर 2015 को पहला औपचारित संविधान दिवस मनाया गया।26 नवंबर का दिन संविधान के महत्व का प्रसार करने और डॉ॰ भीमराव आम्बेडकर के विचारों और अवधारणाओं का प्रसार करने के लिए चुना गया हैं।लखनऊ के आम्बेडकर स्मारक में अम्बेडकर की कांस्य प्रतिमा; इसपर "मेरा जीवन संघर्ष ही मेरा संदेश है।" ये वचन अंकित है। वाशिंगटन, डी सी के लिंकन स्मारक में अब्राहम लिंकन की मूर्ति पर ये आम्बेडकर की मूर्ति बनी है।भारतीय डाक ने 1966, 1973, 1991, 2001 और 2013 में उनके जन्मदिन को समर्पित डाक टिकट जारी किए और 2009, 2015, 2016 और 2017 में उन्हें अन्य टिकटों पर चित्रित किया।गुगल ने 14 अप्रैल 2015 को अपने होमपेज डुडल के माध्यम से आम्बेडकर के 124 वें जन्मदिन का जश्न मनाया था।यह डूडल भारत, अर्जेंटीना, चिली, आयरलैंड, पेरू, पोलैंड, स्वीडन और यूनाइटेड किंगडम में दिखाया गया था।
शिक्षित बनो !!!, संगठित रहो!!!, संघर्ष करो !!!।

Scanned with OKEN Scanner

भारत के महान रत्न

जन्म दिवस
23जून,1901

बलिदान दिवस
17दिसम्बर,1927

राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी

1*. पूरा नाम - राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी
2*. जन्म - 23 जून, 1901
3*. जन्म भूमि - भड़गा ग्राम, पाबना ज़िला, बंगाल
4*. मृत्यु - 17 दिसंबर, 1927
5*. मृत्यु स्थान - गोंडा जेल, उत्तर प्रदेश
6*. मृत्यु कारण - फ़ाँसी
7*. अभिभावक - पिता- क्षिति मोहन शर्मा,
माता- बसंत कुमारी
8*. नागरिकता - भारतीय
9*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता सेनानी
10*. विद्यालय - काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
11*. शिक्षा - काकोरी काण्ड के दौरान लाहिड़ी इतिहास विषय में एम. ए. प्रथम वर्ष BHU के छात्र थे।
12*. विशेष - काकोरी काण्ड की विशेष अदालत आज के मुख्य डाकघर में लगायी गयी थी। काकोरी काण्ड में संलिप्तता साबित होने पर लाहिड़ी को कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) से लखनऊ लाया गया। बेड़ियों में ही सारे अभियोगी आते-जाते थे। आते-जाते सभी मिलकर गीत गाते। एक दिन अदालत से निकलते समय सभी क्रांतिकारी 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है', गाने लगे। सूबेदार बरबण्डसिंह ने इन्हे चुप रहने को कहा, लेकिन क्रांतिकारी सामूहिक गीत गाते रहे। बरबण्डसिंह ने सबसे आगे चल रहे राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी का गला पकड़ लिया, लाहिड़ी के एक भरपूर तमाचे और साथी क्रांतिकारियों की तन चुकी भुजाओं ने बरबण्डसिंह के होश उड़ा दिए। जज को बाहर आना पड़ा। इसका अभियोग भी पुलिस ने चलाया, परन्तु वापस लेना पड़ा।राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी अध्ययन और व्यायाम में अपना सारा समय व्यतीत करते थे। 6 अप्रैल, 1927 को फाँसी के फैसले के बाद सभी को अलग कर दिया गया, परन्तु लाहिड़ी ने अपनी दिनचर्या में कोई परिवर्तन नहीं किया। जेलर ने पूछा कि- "प्रार्थना तो ठीक है, परन्तु अन्तिम समय इतनी भारी कसरत क्यो?" राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी ने उत्तर दिया- व्यायाम मेरा नित्य का नियम है। मृत्यु के भय से मैं नियम क्यों छोड़ दूँ? दूसरा और महत्वपूर्ण कारण है कि हम पुर्नजन्म में विश्वास रखते हैं। व्यायाम इसलिए किया कि दूसरे जन्म में भी बलिष्ठ शरीर मिले, जो ब्रिटिश साम्राज्य के ख़िलाफ़ युद्ध में काम आ सके।
13*. अन्य जानकारी - राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी भारत के अमर शहीद प्रसिद्ध क्रांतिकारियों में से एक थे। आज़ादी के आन्दोलन को गति देने के लिये धन की तत्काल व्यवस्था की ज़रूरत के मद्देनजर शाहजहाँपुर में हुई बैठक के दौरान रामप्रसाद बिस्मिल ने अंग्रेज़ों का खजाना लूटने की योजना बनायी थी। योजनानुसार दल के प्रमुख सदस्य राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी ने 9 अगस्त, 1925 को लखनऊ के काकोरी रेलवे स्टेशन से छूटी 'आठ डाउन सहारनपुर-लखनऊ पैसेन्जर ट्रेन' को चेन खींच कर रोका और क्रान्तिकारी बिस्मिल के नेतृत्व में अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ, चन्द्रशेखर आज़ाद व छ: अन्य सहयोगियों की मदद से सरकारी खजाना लूट लिया गया। अंग्रेज़ सरकार ने मुकदमा चलाकर राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफ़ाक उल्ला ख़ाँ आदि को फ़ाँसी की सज़ा सुनाई। शहीद राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी ने हंसते-हंसते फाँसी का फन्दा चूमने के पहले 'वन्देमातरम' की जोरदार हुंकार भरकर जयघोष करते हुए कहा- मैं मर नहीं रहा हूँ, बल्कि स्वतंत्र भारत में पुर्नजन्म लेने जा रहा हूँ। क्रांतिकारी की इस जुनून भरी हुंकार को सुनकर अंग्रेज़ ठिठक गये थे। उन्हें लग गया था कि इस धरती के सपूत उन्हें अब चैन से नहीं जीने देंगे।

Scanned with OKEN Scanner

भारत के महान रत्न

जयंती-
09 जुलाई,1900

पुण्यतिथि
26 जुलाई,1983

सत्य नारायण सिन्हा

1*. पूरा नाम - सत्य नारायण सिन्हा
2*. अन्य नाम - छोटे साहब, सत्येन्द्र बाबू
3*. जन्म - 9 जुलाई, 1900
4*. जन्म भूमि - समस्तीपुर ,दरभंगा, बिहार
5*. मृत्यु - 26 जुलाई, 1983
6*. मृत्यु स्थान - समस्तीपुर ,दरभंगा, बिहार
7*. संतान - एक पुत्र एवं तीन पुत्रियाँ
8*. नागरिकता - भारतीय
9*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता सेनानी,राजनेता तथा मध्य प्रदेश के राज्यपाल
10*. पार्टी - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
11*. कार्य काल - राज्यपाल- 9 मार्च, 1971 से 12 अक्टूबर, 1977 तक।
12*. शिक्षा - एल.एल.बी.
1*. विद्यालय - पटना विश्वविद्यालय, बिहार
14*. अन्य जानकारी - एक भारतीय राजनेता थे। वे बिहार के मुख्यमंत्री रहे। प्यार से लोग उन्हें छोटे साहब कहते थे। वे भारत के स्वतंत्रता सेनानी, राजनीतिज्ञ ,सांसद, शिक्षामंत्री , जेपी आंदोलन के स्तम्भ तथा बिहार राज्य के मुख्यमंत्री रहे हैं। उन्हें 10 वर्षों तक लगातार केंद्रीय कैबिनेट मंत्री का दर्जा मिला जब उन्होंने संयुक्त राष्ट्र की अंतर्राष्ट्रीय समिति में एशिया का प्रतिनिधित्व किय। सत्येंद्र बाबू बिहार के औरंगाबाद लोक सभा क्षेत्र से सात बार सांसद रहे और इसे मिनी चितौड़गढ़ के नाम से जाना जाता रहा। 1952 से 1962 तक सत्य नारायण सिन्हा संसदीय कार्यों के मंत्री रहे। मई, 1962 में इन्होंने मंत्रिमंडल के सदस्य का दर्जा प्राप्त किया। सितम्बर, 1963 से जून, 1964 तक संसदीय कार्य और सूचना तथा प्रसारण मंत्री रहे।

Scanned with OKEN Scanner

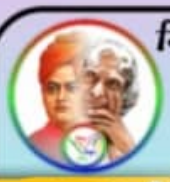

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती-
09 सितम्बर,1974

शहादत
07 जुलाई,1999

कैप्टन विक्रम बत्रा

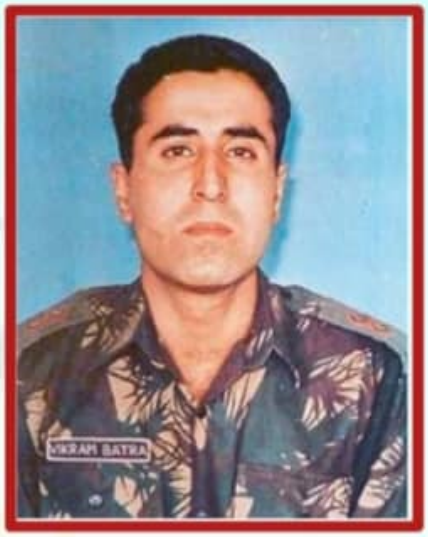

1*. पूरा नाम - कैप्टन विक्रम बत्रा
2*. प्रसिद्ध नाम - शेरशाह, कारगिल का शेर
3*. जन्म - 9 सितंबर, 1974
4*. जन्म भूमि - पालमपुर, हिमाचल प्रदेश
5*. मृत्यु - 07 जुलाई,1999
6*. मृत्यु स्थान - कारगिल, जम्मू और कश्मीर
7*. मृत्यु का कारण - शहादत
8*. अभिभावक - पिता- जी. एल. बत्रा,
माता - श्रीमती कमलकांता बत्रा
9*. सेना - भारतीय थल सेना
10*. रैंक - कैप्टन
11*. यूनिट - 13 जे एंड के राइफ़ल
12*. सेवा काल - 1996–1999
13*. युद्ध - कारगिल युद्ध
14*. शिक्षा - स्नातक (विज्ञान)
15*. विद्यालय - सेंट्रल स्कूल पालमपुर, डीएवी कॉलेज, चंडीगढ़
16*. सम्मान - परमवीर चक्र (1999 में मरणोपरांत)
17*. नागरिकता - भारतीय
18*. अन्य जानकारी - विक्रम बत्रा ने 18 वर्ष की आयु में ही अपने नेत्र दान करने का निर्णय ले लिया था। वह नेत्र बैंक के कार्ड को हमेशा अपने पास रखते थे। पराक्रम दिवस के अवसर पर , भारत सरकार ने घोषणा की कि वह अंडमान और निकोबार के 21 सबसे बड़े अनाम द्वीपों का नामकरण 21 परमवीर चक्र पुरस्कार विजेताओं के नाम पर करेगी।परमवीर चक्र पुरस्कार विजेता के रूप में, एक द्वीप का नाम विक्रम बत्रा के नाम पर बत्रा द्वीप रखा गया है।

Scanned with OKEN Scanner

भारत के महान रत्न

जयंती- 25 जून,1975

बलिदान दिवस- 03 जुलाई;1999

कैप्टन मनोज कुमार पाण्डेय

1*. पूरा नाम - कैप्टन मनोज कुमार पांडेय
2*. जन्म - 25 जून, 1975
3*. जन्म भूमि - रुधा गाँव,सीतापुर, उत्तर प्रदेश
4*. मृत्यु - 3 जुलाई, 1999
5*. मृत्यु स्थान - कारगिल,जम्मू - कश्मीर, भारत
6*. अभिभावक - श्रीगोपीचन्द्र पांडेय
श्रीमती मोहिनी पांडेय
7*. सेना - भारतीय थल सेना
8*. रैंक - कैप्टन
9*. यूनिट - 1/11 गोरखा राइफ़ल्स
10*. युद्ध - कारगिल युद्ध
11*. सम्मान - परमवीर चक्र
12*. नागरिकता - भारतीय
13*. अन्य जानकारी - मनोज कुमार पांडेय को लम्बे समय तक 19700 फीट ऊँची 'पहलवान चौकी' पर डटे रहने का मौका मिला, जहाँ इन्होंने पूरी हिम्मत और जोश के साथ काम किया।पाकिस्तान के साथ कारगिल युद्ध के कठिन मोर्चों में एक मोर्चा खालूबार का था जिसको फ़तह करने के लिए कमर कस कर उन्होने अपनी 1/11 गोरखा राइफल्स की अगुवाई करते हुए दुश्मन से जूझ गए और जीत कर ही माने। हालांकि, इन कोशिशों में उन्हें अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी। वे 24 वर्ष की उम्र जी देश को अपनी वीरता और हिम्मत का उदाहरण दे गये।वर्ष 2003 में एक फिल्म एल ओ सी कारगिल बनी, जिसमें उनके किरदार को अजय देवगन ने अभिनीत किया।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती- 08 जुलाई,1912

पुण्यतिथि - 03 अगस्त,1985

बाबू बनारसी दास

1*. अन्य नाम - बाबू बनारसी दास
2*. जन्म - 08 जुलाई, 1912
3*. जन्म भूमि - बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश
4*. मृत्यु - 03 अगस्त, 1985
5*. जीवन संगिनी - श्रीमती विद्यावती देवी
6*. नागरिकता - भारतीय
7*. प्रसिद्धि - स्वतंत्रता सेनानी व राजनीतिज्ञ
8*. पार्टी - जनता पार्टी
9*. पद - उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री (भूतपूर्व)
10*. कार्य काल - 28 फ़रवरी 1979 से 17 फ़रवरी 1980 तक
11*. अन्य जानकारी - बनारसी दास जी ने दलितोद्धार आंदोलन में भी अहम भूमिका निभायी थी और तमाम कठिन मौंकों पर समाज के सबसे दबे-कुचले तबकों के साथ वे खड़े हुए। बनारसी दास जी ने दलितोद्धार आंदोलन में भी अहम भूमिका निभायी थी और तमाम कठिन मौंकों पर समाज के सबसे दबे-कुचले तबकों के साथ वे खड़े हुए। उनके चलते कई जगहों पर दलित - वंचित तबकों को सार्वजनिक कुओं से पानी लेने औऱ मंदिरों तथा धर्मशालाओं में प्रवेश का मौका मिला। इसी दौरान सहभोज का आयोजन करने के साथ, उनकी बस्तियों में सफाई अभियान चला तथा अनेठ पाठशालाऐं उनके बच्चों को शिक्षित बनाने के लिए खोली गयीं। 2013 में दास पर एक भारतीय डाक टिकट जारी किया गया था। बाबू बनारसी दास विश्वविद्यालय, लखनऊ और उत्तर प्रदेश में बाबू बनारसी दास इंडोर स्टेडियम का नाम उनके सम्मान में रखा गया है।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 14 सितम्बर,1900

पुण्यतिथि 02 मार्च,1988

व्यौहार राजेंद्र सिंह

567

1*. पूरा नाम - व्यौहार राजेंद्र सिंह
2*. उपनाम - काकाजी
3*. जन्मतिथि - 14 सितम्बर,1900
4*. जन्म स्थान - जबलपुर, मध्यप्रदेश
5*. मृत्यु - 02 मार्च,1988
6*. मृत्यु स्थान - स्थानीय शासकीय विक्टोरिया जिला अस्पताल (अब सेठ गोविन्ददास जिला चिकित्सालय), जबलपुर, मध्यप्रदेश
7*. पत्नी - राजरानी देवी
8*. नागरिकता - भारतीय
9*. भाषा - संस्कृत, बांग्ला, मराठी, गुजराती, मलयालम, उर्दू, अंग्रेज़ी
10*. कृतियां - व्यौहार राजेन्द्र सिंह ने हिंदी के लगभग 100 से अधिक बौद्धिक ग्रंथों की रचना की, जो सम्मानित-पुरस्कृत भी हुईं और कई विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में अनिवार्य रूप से संस्तुत-समाविष्ट भी की गईं।
गोस्वामी तुलसीदास की समन्वय साधना (1928),महात्मा जी का महाव्रत (1935),त्रिपुरी का इतिहास (1939),हिंदी गीता (1942),आलोचना के सिद्धांत (1956),हिंदी रामायण (1965),सावित्री (1972)
11*. सम्मान - साहित्य वाचस्पति', 'हिन्दी भाषा भूषण', 'श्रेष्ठ आचार्य', 'कायस्थ रत्न' आदि कई अलंकरणों से व्यौहार राजेन्द्र सिंह को विभूषित किया गया। उनके नाम से ही जबलपुर के एक हिस्से को व्यौहार बाग के नाम से जानते हैं।
12*. पद - व्यौहार राजेन्द्र सिंह अखिल भारतीय चरखा संघ, नागरी प्रचारिणी सभा, हरिजन सेवक संघ, नागरिक सहकारी बैंक, भूदान यज्ञ मण्डल, हिंदी साहित्य सम्मलेन, सर्वोदय न्यास, कायस्थ महासभा, चित्रगुप्त सभा जैसी अनेकों संस्थाओं के अध्यक्ष-उपाध्यक्ष रहे।
13*. विशेष - व्यौहार राजेन्द्र सिंह तथा राजरानी देवी के व्यक्तिगत निमंत्रण पर जबलपुर के वर्तमान हनुमानताल वार्ड स्थित व्यौहारनिवास-पैलेस (स्थानीय भाषा में "व्यौहार-राजवाडा" या "बखरी") में महात्मा गाँधी लगभग एक सप्ताह तक रहे । साथ में आचार्य जीवतराम कृपलानी, मौलाना अबुलकलाम आज़ाद, बाबू राजेन्द्र प्रसाद, पंडित जवाहरलाल नेहरू, एडिथ एलेन ग्रे, सरोजिनी नायडू, सर सैयद महमूद, वीर खुरशेद नरीमन, डॉ. मुख्तार अहमद अंसारी, जमनालाल बजाज, मीरा बहन व अन्य थे। इस अवसर पर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की कार्यकारिणी की बैठक भी उसी व्यौहारनिवास-पैलेस में हुई थी। यरवदा जेल में कारासेवन के कारण कस्तूरबा नहीं आ सकीं। व्यौहारनिवास-पैलेस के जिस दक्षिण-पूर्वी हिस्से में ये सब रहे कालान्तर में उसका नामकरण ही "गांधी मंदिर" कर दिया था।
14*. अन्य जानकारी - हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है । 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने एक मत से यह निर्णय लिया कि हिंदी ही भारत की राजभाषा होगी। इस निर्णय के महत्व को प्रतिपादित करने और हिंदी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिए 1953 से भारत में 14 सितंबर को हर वर्ष हिंदी दिवस मनाया जाता है। हिंदी को यह दर्जा इतनी आसानी से नहीं मिल गया, इसके लिए लम्बी लड़ाई चली थी जिसमें व्यौहार राजेंद्र सिंह ने अहम भूमिका निभाई थी। व्यौहार राजेंद्र सिंह के 50 वें जन्म दिवस अर्थात 14 सितंबर 1949 को हिंदी को भारत की राजभाषा का दर्जा मिला।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती :-
23 दिसम्बर,1902

पुण्यतिथि
29 मई, 1987

चौधरी चरण सिंह

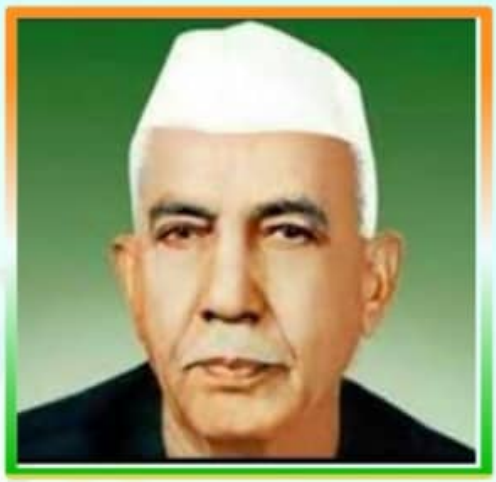

1*. पूरा नाम - चौधरी चरण सिंह
2*. जन्म - 23 दिसम्बर, 1902
3*. जन्म भूमि - नूरपुर ग्राम, मेरठ, उत्तर प्रदेश,
4*. मृत्यु - 29 मई, 1987
5*. अभिभावक - चौधरी मीर सिंह
6*. पत्नी - गायत्री देवी
7*. नागरिकता - भारतीय
8*. प्रसिद्धि - किसान नेता, स्वतंत्रता सेनानी , भारत के प्रधानमंत्री
9*. पार्टी - काँग्रेस और लोक दल
10*. कार्य काल - 28 जुलाई, 1979-14 जनवरी, 1980
11*. शिक्षा - विज्ञान स्नातक, कला स्नातकोत्तर और विधि
12. विद्यालय - सरकारी उच्च विद्यालय, मेरठ
13*. भाषा - हिन्दी, अंग्रेज़ी और उर्दू
14*. पुरस्कार-उपाधि - भारत रत्न, 2024
15*. विशेष योगदान - आप किसानों के नेता माने जाते रहे हैं। उनके द्वारा तैयार किया गया जमींदारी उन्मूलन विधेयक राज्य के कल्याणकारी सिद्धांत पर आधारित था। एक जुलाई 1952 को यूपी में उनके बदौलत जमींदारी प्रथा का उन्मूलन हुआ और गरीबों को अधिकार मिला। उन्होंने लेखापाल के पद का सृजन भी किया। किसानों के हित में उन्होंने 1954 में उत्तर प्रदेश भूमि संरक्षण कानून को पारित कराया। वो 3 अप्रैल 1967 को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। 17 अप्रैल 1968 को उन्होंने मुख्यमंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया। मध्यावधि चुनाव में उन्होंने अच्छी सफलता मिली और दुबारा 17 फ़रवरी 1970 के वे मुख्यमंत्री बने। उसके बाद वो केन्द्र सरकार में गृहमंत्री बने तो उन्होंने मंडल और अल्पसंख्यक आयोग की स्थापना की। 1979 में वित्त मंत्री और उपप्रधानमंत्री के रूप में राष्ट्रीय कृषि व ग्रामीण विकास बैंक [नाबार्ड] की स्थापना की।इनके पुरखे महाराजा नाहर सिंह ने 1887 की प्रथम क्रान्ति में विशेष योगदान दिया था। महाराजा नाहर सिंह वल्लभगढ़ के निवासी थे, जो कि वर्तमान में हरियाणा में आता है। महाराजा नाहर सिंह को दिल्ली के चाँदनी चौक में ब्रिटिश हुकूमत ने फ़ाँसी पर चढ़ा दिया था। तब अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ क्रान्ति की ज्वाला को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए महाराजा नाहर सिंह के समर्थक और चौधरी चरण सिंह के दादा जी उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर ज़िले के पूर्ववर्ती क्षेत्र में निष्क्रमण कर गए।
15*. रचनाएँ - 'अबॉलिशन ऑफ़ ज़मीदारी', 'भारत की भयावह आर्थिक स्थिति, इसके कारण और निदान', 'लिजेण्ड प्रोपराइटरशिप' और 'इंडियास पॉवर्टी एण्ड इट्स सोल्यूशंस'
16*. अन्य जानकारी - चौधरी चरण सिंह भारत के पाँचवें प्रधानमंत्री थे। चरण सिंह किसानों की आवाज़ बुलन्द करने वाले प्रखर नेता माने जाते थे। चौधरी चरण सिंह का प्रधानमंत्री के रूप में कार्यकाल 28 जुलाई, 1979 से 14 जनवरी, 1980 तक रहा। यह समाजवादी पार्टी तथा कांग्रेस (ओ) के सहयोग से देश के प्रधानमंत्री बने। इन्हें 'काँग्रेस इं' और सी. पी. आई. ने बाहर से समर्थन दिया, लेकिन वे इनकी सरकार में सम्मिलित नहीं हुए। इसके अतिरिक्त चौधरी चरण सिंह भारत के गृहमंत्री (कार्यकाल- 24 मार्च 1977 – 1 जुलाई 1978), उपप्रधानमंत्री (कार्यकाल- 24 मार्च 1977 – 28 जुलाई 1979) और दो बार उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री भी रहे। वर्ष 2024 में भारत सरकार ने चौधरी चरण सिंह को (मरणोपरांत) 'भारत रत्न' से सम्मानित किया। 'किसान घाट' भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह जी का समाधि स्थल है, जो दिल्ली में राजघाट के निकट ही स्थित है।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जयंती - 15 सितम्बर,1861

पुण्यतिथि 14 अप्रैल,1962

डॉ. मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया

1*. पूरा नाम - डॉ. मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया
2*. जन्म - 15 सितम्बर, 1861
3*. जन्म भूमि - कर्नाटक
4*. मृत्यु - 14 अप्रैल, 1962
5*. पिता - मोक्षगुंडम श्रीनिवास शास्त्री
6*. माता - 'वेंकटालक्ष्मम्मा'
7*. नागरिकता - भारतीय
8*. प्रसिद्धि - इंजीनियर, वैज्ञानिक और निर्माता
9*. पद - मैसूर के दीवान
10*. शिक्षा - इंजीनियरिंग
11*. विद्यालय - पूना इंजीनियरिंग कॉलेज
12*. पुस्तकें - भारत का पुनर्निर्माण' (1920), 'भारत के लिये नियोजित अर्थ' व्यवस्था' (1934)
13*. पुरस्कार-उपाधि - भारत रत्न(1955)
14*. विशेष - सर एम. विश्वेश्वरैया, कर्नाटक के मांड्या ज़िले में बने 'कृष्णराज सागर बांध' (KrishnaRajaSagara Dam) के निर्माण के मुख्य स्तंभ माने जाते हैं। इसके अलावा उन्होंने मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर संदल ऑयल एंड सोप फ़ैक्टरी और बैंक ऑफ़ मैसूर समेत कई संस्थानों और औद्योगिक कारखानों को बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। वह उद्योग को देश की जान मानते थे। वहीं महज 32 वर्ष की आयु में उन्होंने सिंधु नदी से सक्खर कस्बे को पानी भेजने का प्लान बनाया था जो कि एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। यहीं कारण था कि उन्हें कर्नाटक का 'भगीरथ' भी कहा जाता है। मैसूर के किये गए उनके द्वारा सामाजिक कार्यो के कारण मैसूर के महाराजा कृष्णराज वोडियार ने वर्ष 1912 में राज्य का दीवान यानी मुख्यमंत्री नियुक्त कर दिया। दीवान के रूप में उन्होंने राज्य में आर्थिक और सामाजिक उत्थान की दृष्टी से औद्योगिक विकास के लिए अथक प्रयास किये। उन्होंने चन्दन तेल फैक्टरी, साबुन फैक्टरी, धातु फैक्टरी, क्रोम टेनिंग फैक्टरी को प्रारंभ किया। वर्ष 1918 में मैसूर के दीवान के रूप में सेवानिवृत्त हो गए थे।
15*. अन्य जानकारी - डॉ. मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया को आज भी "आधुनिक भारत के विश्वकर्मा" के रूप में बड़े सम्मान के साथ स्मरण किया जाता है। अपने समय के बहुत बड़े इंजीनियर, वैज्ञानिक और निर्माता के रूप में देश की सेवा में अपना जीवन समर्पित करने वाले डॉ. मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया को भारत ही नहीं वरन् विश्व की महान् प्रतिभाओं में गिना जाता है। डॉ. मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया के जन्मदिन (15 सितम्बर) को भारत में 'अभियन्ता दिवस' के रूप में मनाया जाता है।विश्वेश्वरैया को कई क्षेत्रों में पहचान मिली, जिनमें सबसे उल्लेखनीय शिक्षा और इंजीनियरिंग है। बेलगावी में विश्वेश्वरैया प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (जिससे कर्नाटक के अधिकांश इंजीनियरिंग कॉलेज संबद्ध हैं) का नाम उनके सम्मान में रखा गया, साथ ही यूनिवर्सिटी विश्वेश्वरैया कॉलेज ऑफ़ इंजीनियरिंग , बैंगलोर; सर एम. विश्वेश्वरैया इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी , बैंगलोर; और विश्वेश्वरैया नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी , नागपुर ; विश्वेश्वरैया छात्रावास, आईआईटी (बीएचयू) वाराणसी ; विश्वेश्वरैया औद्योगिक और प्रौद्योगिकी संग्रहालय , बैंगलोर जैसे प्रमुख कॉलेजों का नाम भी उनके सम्मान में रखा गया।उनके अल्मा मेटर , पुणे के इंजीनियरिंग कॉलेज ने विश्वेश्वरैया के सम्मान में एक प्रतिमा स्थापित की। भारत में दो मेट्रो स्टेशन, एक बैंगलोर में पर्पल लाइन पर (सर एम. विश्वेश्वरैया स्टेशन, सेंट्रल कॉलेज), और दूसरा दिल्ली में पिंक लाइन पर (सर विश्वेश्वरैया मोती बाग), उनके नाम पर हैं। बैंगलोर में बैय्यपनहल्ली में रेलवे टर्मिनल का नाम उनके नाम पर सर एम. विश्वेश्वरैया टर्मिनल रखा गया है।15 सितंबर 2018 को उनकी 157वीं जयंती मनाने के लिए, सर विश्वेश्वरैया को गूगल डूडल से सम्मानित किया गया ।

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

भारत के महान रत्न

जन्म दिवस
31अक्टूबर, 1875

पुण्य तिथि
15दिसंबर,1950

सरदार बल्लभ भाई पटेल

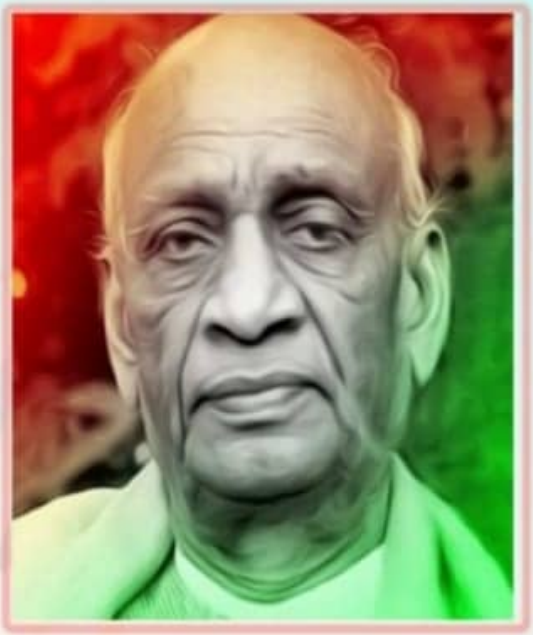

1*. पूरा नाम - सरदार वल्लभ भाई पटेल
2*. अन्य नाम - सरदार पटेल
3*. जन्म - 31 अक्टूबर, 1875
4*. जन्म भूमि - नाडियाड, गुजरात
5*. मृत्यु - 15 दिसंबर, 1950 (उम्र- 75)
6*. मृत्यु स्थान - मुम्बई, महाराष्ट्र
7*. मृत्यु कारण - दिल का दौरा
8*. अभिभावक - पिता - झवेरभाई पटेल,
माता - लाडबाई
9*. पत्नी - झवेरबा
10*. संतान - पुत्र- दहयाभाई पटेल, पुत्री- मणिबेन पटेल
11*. नागरिकता - भारतीय
12*. प्रसिद्धि - भारत के लौहपुरुष
13*. पार्टी - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
14*. पद - उप प्रधानमंत्री, गृह मंत्री, सूचना मंत्री और राज्य मंत्री
15*. कार्य काल - 15 अगस्त, 1947 से 15 दिसंबर, 1950
16*. शिक्षा - वक़ालत
17*. भाषा - हिंदी
18*. जेल यात्रा - (1930), जनवरी 1932, अक्टूबर 1940
19*. पुरस्कार-उपाधि - भारत रत्न
20*. विशेष योगदान - देशी रियासतों का विलय स्वतंत्र भारत की पहली उपलब्धि थी और निर्विवाद रूप से सरदार पटेल का इसमें विशेष योगदान था। नीतिगत दृढ़ता के लिए गाँधीजी ने उन्हें 'सरदार' और 'लौह पुरुष' की उपाधि दी थी।
21*. विशेष - देशी राज्यों के एकीकरण की समस्या को सरदार पटेल ने बिना खून-खराबे के बड़ी खूबी से हल किया। देशी राज्यों में राजकोट, जूनागढ़, बहालपुर, बड़ौदा, कश्मीर, हैदराबाद को भारतीय महासंघ में सम्मिलित करने में सरदार पटेल को कई पेचीदगियों का सामना करना पड़ा। जब चीन के प्रधानमंत्री चाऊ एन लाई ने जवाहरलाल नेहरू को पत्र लिखा कि वे तिब्बत को चीन का अंग मान लें तो पटेल ने नेहरू से आग्रह किया कि वे तिब्बत पर चीन का प्रभुत्व क़तई न स्वीकारें अन्यथा चीन भारत के लिए खतरनाक सिद्ध होगा। जवाहरलाल नेहरू नहीं माने, बस इसी भूल के कारण हमें चीन से पिटना पड़ा और चीन ने हमारी सीमा की 40 हज़ार वर्ग गज भूमि पर क़ब्ज़ा कर लिया।
सरदार पटेल के ऐतिहासिक कार्यों में सोमनाथ मंदिर का पुनर्निमाण, गाँधी स्मारक निधि की स्थापना, कमला नेहरू अस्पताल की रूपरेखा आदि कार्य सदैव स्मरण किए जाते रहेंगे। उनके मन में गोआ को भी भारत में विलय करने की इच्छा कितनी बलवती थी, इसके लिए निम्नलिखित उदाहरण ही काफ़ी है- जब एक बार सरदार पटेल भारतीय युद्धपोत द्वारा बम्बई से बाहर यात्रा पर थे तो गोआ के निकट पहुंचने पर उन्होंने कमांडिंग अफसरों से पूछा कि- "इस युद्धपोत पर तुम्हारे कितने सैनिक हैं।" जब कप्तान ने उनकी संख्या बताई, तो पटेल ने फिर पूछा- "क्या वह गोआ पर अधिकार करने के लिए पर्याप्त हैं।" सकारात्मक उत्तर मिलने पर पटेल बोले- "अच्छा चलो जब तक हम यहाँ हैं, गोआ पर अधिकार कर लो।" किंकर्तव्यविमूढ़ कप्तान ने उनसे लिखित आदेश देने की विनती की, तब तक सरदार पटेल चौंके, फिर कुछ सोचकर बोले- "ठीक है चलो हमें वापस लौटना होगा।"
लक्षद्वीप समूह को भारत के साथ मिलाने में भी पटेल की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। इस क्षेत्र के लोग देश की मुख्यधारा से कटे हुए थे और उन्हें भारत की आज़ादी की जानकारी 15 अगस्त, 1947 के कई दिनों बाद मिली। हालांकि यह क्षेत्र पाकिस्तान के नजदीक नहीं था, लेकिन पटेल को लगता था कि इस पर पाकिस्तान दावा कर सकता है। इसलिए ऐसी किसी भी स्थिति को टालने के लिए पटेल ने लक्षद्वीप में राष्ट्रीय ध्वज फहराने के लिए भारतीय नौसेना का एक जहाज़ भेजा। इसके कुछ घंटे बाद ही पाकिस्तानी नौसेना के जहाज लक्षद्वीप के पास मंडराते देखे गए, लेकिन वहाँ भारत का झंडा लहराते देख उन्हें वापस कराची लौटना पड़ा।
22*. आंदोलन- असहयोग आंदोलन,बारदोली सत्याग्रह, नमक सत्याग्रह, भारत छोड़ो आंदोलन
23*. उपाधियाँ - 'लौहपुरुष', 'भारत का बिस्मार्क'
24*. अन्य जानकारी - सरदार पटेल को भारत का लौह पुरुष कहा जाता है। गृहमंत्री बनने के बाद भारतीय रियासतों के विलय की ज़िम्मेदारी उनको ही सौंपी गई थी। उन्होंने अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए छह सौ छोटी बड़ी रियासतों का भारत में विलय कराया। देशी रियासतों का विलय स्वतंत्र भारत की पहली उपलब्धि थी और निर्विवाद रूप से पटेल का इसमें विशेष योगदान था। नीतिगत दृढ़ता के लिए 'राष्ट्रपिता' ने उन्हें 'सरदार' और 'लौह पुरुष' की उपाधि दी थी। बिस्मार्क ने जिस तरह जर्मनी के एकीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, उसी तरह वल्लभ भाई पटेल ने भी आज़ाद भारत को एक विशाल राष्ट्र बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया। बिस्मार्क को जहाँ "जर्मनी का आयरन चांसलर" कहा जाता है, वहीं पटेल "भारत के लौह पुरुष" कहलाते हैं। 31 अक्टूबर, 2013 को सरदार वल्लभ भाई पटेल की 137वीं जयंती के अवसर पर गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री एवं वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने गुजरात के नर्मदा ज़िले में सरदार पटेल के स्मारक का शिलान्यास किया। इसका नाम 'एकता की मूर्ति' (स्टैच्यू ऑफ़ यूनिटी) रखा गया है। यह मूर्ति 'स्टैच्यू ऑफ़ लिबर्टी' (93 मीटर) से दुगनी ऊँचाई वाली बनाई गई है। इस प्रतिमा को एक छोटे चट्टानी द्वीप पर स्थापित किया गया है, जो केवाड़िया में सरदार सरोवर बांध के सामने नर्मदा नदी के मध्य में है। सरदार वल्लभ भाई पटेल की यह प्रतिमा दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा है।

Scanned with OKEN Scanner

संकलन कर्ता -

नरेन्द्र नाथ पटेल स. अ.
कम्पोजिट विद्यालय सुरहन
भदोही, उत्तर प्रदेश

सहयोगी साथी -

श्री रवीन्द्र कुमार पटेल स.अ.
कम्पोजिट विद्यालय झौवा,
औराई,भदोही, उत्तर प्रदेश

प्रेरणा स्रोत -

श्री विमल कुमार सर
मिशन शिक्षण संवाद

Scanned with OKEN Scanner